Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ ॐ ...

॥ श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीचन्द्र...

प्राचीन मुनियों का पुरुषार्थ

लेखक और प्रकाशक

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य हिन्दूधर्मरक्षक

उदासीनवर्य्य पण्डित श्री १०८ स्वामी

श्री हरिनामदासजी महाराज

गद्दीधर (महन्त) सद्गुरु बनखण्डी आश्रम

श्री साधुबेला तीर्थ सक्खर (सिन्धु)

ग्रन्थ कर्ता

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य हिन्दूजाति में जाग्रती का प्रचार करना

इस ग्रन्थका सर्वाधिकार ग्रन्थ कर्ता के आधीन है ॥

"अमर" बिजली प्रेस

सक्खर में छपा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Rajeev

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ ॐ ॥

॥ श्री १००८ जगद्गुरुश्रीचन्द्रायनमः ॥

प्राचीन मुनियों का पुरुषार्थ

लेखक और प्रकाशक

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य हिन्दूधर्मरक्षक
उदासीनवर्य्य पण्डित श्री १०८ स्वामी

श्री हरिनामदासजी महाराज

गद्दीधर (महन्त) सद्गुरु बनखण्डी आश्रम
श्री साधुबेला तीर्थ सक्खर (सिन्धु)

ग्रन्थ कर्ता

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य हिन्दूजाति में जाग्रती का प्रचार करना

इस ग्रन्थका सर्वाधिकार ग्रन्थ कर्ता के आधीन है॥

"अमर" बिजली प्रेस
सक्खर में छपा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

10963

पुस्तक मिलने का पताः-
श्री साधुबेला तीर्थ सक्खर
(सिन्धु)

The Book can hod from:-
Shri Sadhbela Tirath
Sukkur (Sind)

इस पुस्तक की छपाई का खर्च श्रीमती कीमतबाई धर्मपत्नी सेठ सन्तदास लालवानी सक्खर (सिन्धु) निवासी के सुपुत्रों ने अपनी माताजी की स्मृति (यादगीरी) में दिया।

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

Printed by Shri I. A. Udasin at the "AMAR" Electric Printing Press Sukkur
&
Published by Shri 108 Swami Harnamdasji Maharaj Shri Sadhbela Tirath
Sukkur (Sind).

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बक्शीश
श्री साधुबेलातीर्थ
सद्गुरु बनखण्डी उदासीन
सक्खर (सिन्धु.

ॐ

अनुक्रमणिका

नं०	विषय	पृष्ठाङ्क
१-	भूमिका	
२-	मुनि प्रशंसा	४
३-	मुनि शब्दार्थ	५
४-	वेद और मुनिगण	६
५-	वेद सूत्र और उनके लेखक मुनि	८
६-	ऋग्वेद सूत्र मुनयः	८
७-	यजुर्वेद मुनयः	८
८-	सामवेद मुनयः	८
९-	अथर्व वेद मुनयः	८
१०-	वेदाङ्ग और उनके लेखक	१०
११-	निरुक्त शास्त्र	१८
१२-	यास्क मुनि काल मतभेद	१९
१३-	छन्द शास्त्र	२०
१४-	पिङ्गल मुनि	२०
१५-	ज्योतिष् शास्त्र	२२
१६-	अठारह पुराण और व्यास मुनि	२४
१७-	षड् दर्शन और उनके लेखक	२६
१८-	न्याय शास्त्र	२९
१९-	वैशेषिक दर्शन	२९
२०-	मीमांसा दर्शन	३०
२१-	वेदान्त दर्शन	३१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२२ - धर्म शास्त्र ३२
२३ - अर्थ शास्त्र और नीति शास्त्र ३४
२४ - काम शास्त्र ३५
२५ - वैदिक शास्त्र ३५
२६ - नाट्य शास्त्र ३७
२७ - नाटक कार और कवि ३८
२८ - विविध विषय ३६
२६ - भगवान् श्रीचन्द्र जी मुनि ३६
३० - तुलसीदास और सूरदास ३६
३१ - गिरिधर की कुण्डलिया ३६
३२ - अर्वाचीन मुनियों की कृतियें ४०
३३ - श्री स्वामि हरिनामदास स्तव ४४
३४ - गुरु उदासीन भेष अनादि प्रकरणम् ४७
३५ - उदासीनों का धर्म पर बलिदान ६३
३६ - सद्गुरु बनखण्डी उदासीनेभ्यो नमः (आरती) ७०
३७ - श्री साधुबेला तीर्थाष्टकम् ७२
३८ - श्री स्वामि हरिनामदासाष्टकम् ७४

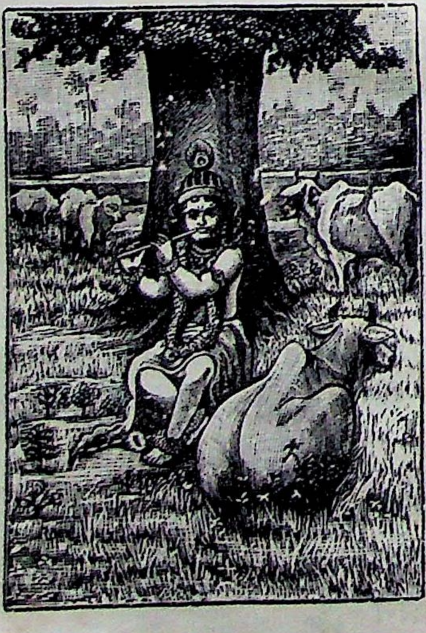

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ ॐ ॥

श्री ११०९ सद्गुरुसनकाद्युदासीनेभ्यो नमः ॥
श्री ११०८ सद्गुरुश्रीचन्द्रोदासीनेभ्यो नमः ॥
श्री १००८ सद्गुरुवनखण्ड्युदासीनाय नमः ॥
श्री साधुबेला तीर्थाय नमः

भूमिका

परमात्मा सर्वशक्तिमान् जगन्नियन्ता का स्वरूप शास्त्रों में "सत्य" कहा हुआ है। उस सत्य स्वरूप की खोज प्राणिमात्र का परमकर्त्तव्य और ध्येय है। सत्यासत्य के निर्णयार्थ जो कुछ भी प्रयास किया जाय वह मानो सत्य स्वरूप परमात्मा की ही खोज है। ऐसी भावनाओं से प्रेरित होकर हमारे मानसिकवृत्तियों ने यह धारना की कि इस संसार रूप प्रकृति में सत्यासत्य का यथाशक्ति निर्णय किया जाय कि प्राचीन ग्रन्थों की रचना में सर्वसम्मत अधिकार किस का है। इस "प्राचीन मुनियों का पुरुषार्थ" ग्रन्थ की योजना का मुख्य प्रयोजन यही है।

आज कल साधु समाज पर अनेक प्रकार के कटाक्ष किये जारहे हैं। कई नास्तिक बुद्धि लोगों के विचार इतने निकृष्ट और संकीर्ण हो चुके हैं कि वे साधु समाज को पृथ्वी पर भार स्वरूप कहने लगे हैं। ऐसे पतित बुद्धि वाले भी यदि अमर्ष को छोड़ कर विचार पूर्वक इस ग्रन्थ का अध्ययन करेंगे तो उन्हें एकवार अवश्य प्रतीत हो जायगा कि साधु समाज का संसार पर कितना उपकार और अधिकार है। जिन उदासीन मुनियों ने इस प्रकृति रूप संसार में ब्रह्म को संसार से प्रथक् और सम्मिलित (मिलाहुआ) दिखाते हुए साथ में प्रकृति के सब अङ्ग २ रूप पदार्थों का निरूपण किया है अर्थात् जिसमें परमार्थ व्यवहारिक पदार्थ समझाते हुए प्रातिभाषिक पदार्थों का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी अन्तकर दिखाया है तथा पदार्थों का सम्बन्ध पञ्च महाभूतों के साथ बताते हुये सब बातों की पराकाष्ठा कर दिखाई है। ऐसा साधु समाज उपकार बुद्धि से यदि सब कुछ त्याग संसार का पथ प्रदर्शक न बनता तो जगत् की क्या दशा होती इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। अत एव इस ग्रन्थ के निर्माण करने में हमारा दूसरा प्रयोजन यह है कि लोगों की विशेष कर भारत के सपूत हिन्दुओं की साधुओं के प्रति द्वेष बुद्धि हट जाय और उन में पूर्ण विश्वास और श्रद्धा उत्पन्न हो जिस से साधु लोग पहले से भी अधिक उपकार कर सकें।

तीसरा प्रयोजन इस ग्रन्थ को जनता के सामने रखने का यह है कि हमारे बन्धु वे साधु जो जगत् को मिथ्या समझ कर वीत-राग हो संसार से अपना कुछ भी सम्बन्ध नहीं समझते उन्हें उद्बोधन कराना है कि वे अपने पूज्य पूर्वजों के यथार्थ कर्त्तव्य को समझें और अपने को अंगागी भाव से हिन्दू जाति रूपी शरीर का श्रेष्ठ अंग समझ कर अपनी उपकार बुद्धि को आगे से भी अधिक करें। हमारे पूर्वज किस प्रकार अपना प्रतिबिम्ब अपने ग्रन्थों में छोड़ कर अपने नाम को अमर बना गये हैं। उसी प्रकार हम भी गृहस्थियों पर दया भाव लाकर उनमें उत्कट श्रद्धा उत्पन्न कराने का प्रयत्न करें जिस से परस्पर प्रेम से संसार के कार्य अच्छे प्रकार चलें। ऐसा करने से साधु समाज का अधिक समादर होगा जिसका परिणाम संसार से क्लेश का नाश और लोगों में भगवद्भक्ति और आस्तिक बुद्धि होगी जिससे जनता परम श्रेय की पात्र बनेगी।

साधु और गृहस्थी इस संसार रूपी रथ के दो पहिये हैं। इन दोनों के मेल से ही "संहतिः श्रेयःसाधिका" समझी जाती है।

इन बातों पर विचार कर विवेकी पुरुष इस ग्रन्थ की सार्थकता को समझेंगे और हमारे उद्योग से पूर्ण लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

निवेदक

हिन्दुओं का शुभ चिन्तक

स्वामी हरिनामदास उदासीन

महन्त (मालिक) श्री सद्गुरू बनखण्डी आश्रम

श्री साधुवेला तीर्थ सक्खर (सिन्धु)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परमहंस परिव्राजकाचार्य्य उदासीनवर्य्य श्री १०८ स्वामी हरिनामदास जी महाराज

सद्गुरु बनखण्डी आश्रम श्री साधुबेला तीर्थ के वर्तमान महन्त

(सक्खर-सिंध)

श्री स्वामीजी हिन्दू धर्म रक्षा का उपदेश लिख रहे हैं

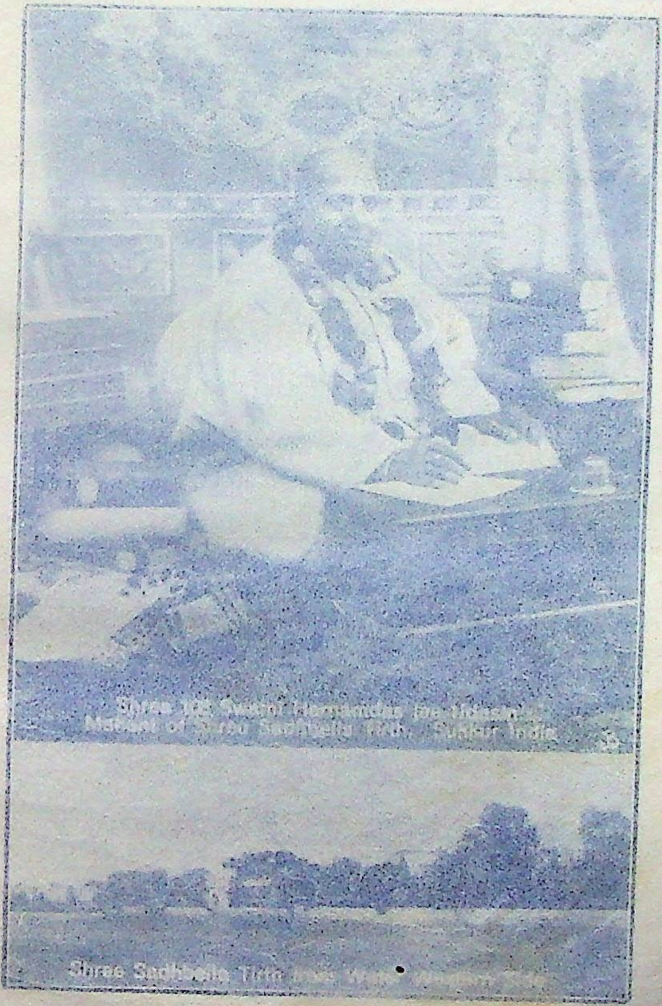

Swamiji writing on preaching for safety of Hindu Dharma.

Parmahans, Paribrajkacharya, Udasinvarya
Shri 108 Swami Harnamdasji Mahraj Present,
SADHBELA SATGURU BANKHANDI ASHRAM
SHRI SADHBELLA TIRATH SUKKUR (Sind)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी अन्धकार दिखाया है तथा पदार्थों का सम्बन्ध पञ्च महाभूतों के साथ बताते हुये सब बातों की पराकाष्ठा कर दिखाई है। ऐसा साधु समाज उपकार बुद्धि से यदि सब कुछ त्याग संसार का पथ प्रदर्शक न बनता तो जगत् की क्या दशा होती इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। अत एव इस ग्रन्थ के निर्माण करने में हमारा दूसरा प्रयोजन यह है कि लोगों की विशेष कर भारत के सपूत हिन्दुओं की साधुओं के प्रति तुच्छ बुद्धि हट जाय और उन में पूर्ण विश्वास और श्रद्धा उत्पन्न हो जिस से साधु लोग पहले से भी अधिक उपकार कर सकें।

तीसरा प्रयोजन इस ग्रन्थ को जनता के सामने रखने का यह है कि हमारे बन्धु वे साधु जो जगत् को मिथ्या समझ कर वीतराग हो संसार से अपना कुछ भी सम्बन्ध नहीं समझते उन्हें उद्बोधन कराना है कि वे अपने पूज्य पूर्वजों के यथार्थ कर्तव्य को समझें और अपने को अंगांगी भाव से हिन्दू जाति रूपी शरीर का श्रेष्ठ अंग समझ कर अपनी उपकार बुद्धि को आगे से भी अधिक करें। हमारे पूर्वज किस प्रकार अपना प्रतिबिम्ब अपने ग्रन्थों में छोड़ कर अपने नाम को अमर बना गये हैं। उसी प्रकार हम भी गृहस्थियों पर दया भाव लाकर उनमें उत्कट श्रद्धा उत्पन्न कराने का प्रयत्न करें जिस से परस्पर प्रेम से संसार के कार्य अच्छे प्रकार चलें। ऐसा करने से साधु समाज का अधिक समादर होगा जिसका परिणाम संसार से क्लेश का नाश और लोगों में भगवद्भक्ति और आस्तिक बुद्धि होगी जिससे जनता परम श्रेय की पात्र बनेगी।

साधु और गृहस्थी इस संसार रूपी रथ के दो पहिये हैं। इन दोनों के मेल से ही "संहतिः श्रेयःसाधिका" समझी जाती है।

इन बातों पर विचार कर विवेकी पुरुष इस ग्रन्थ की सार्थकता को समझेंगे और हमारे प्रयोग से पूर्ण लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

निवेदक

हिन्दुओं का शुभ चिन्तक

स्वामी हरिनामदास उदासीन

महन्त (मालिक) श्री सद्गुरु बनखण्डी आश्रम

श्री साधुबेला तीर्थ सक्खर (सिन्धु)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परमहंस परिव्राजकाचार्य्य उदासीनवर्य्य श्री
१०८ स्वामी हरिनामदास जी महाराज

सद्गुरु बनखण्डी आश्रम श्री साधुबेला तीर्थ के वर्त्तमान महन्त

(सक्खर- सिंधु)

श्री स्वामीजी हिन्दू धर्म रक्षा का उपदेश लिख रहे हैं

Shree 108 Swami Harnamdas Jee Udasin.
Mahant of Shree Sadhbella Tirth. Sukkur India

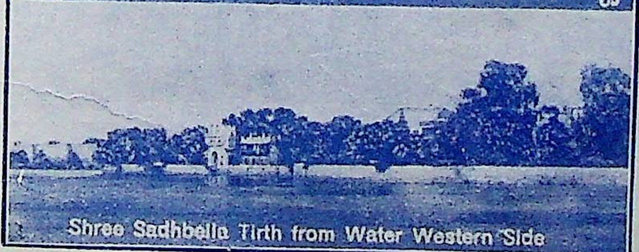

Shree Sadhbella Tirth from Water Western Side

Swamiji writing on preaching for safety of Hindu Dharma.

Parmahans, Paribrajkacharya, Udasinvarya
Shri 108 Swami Harnamdasji Mahraj Present,
GADDIDHAR SATGURU BANKHANDI ASHRAM
SHRI SADHBELLA TIRATH SUKKUR (Sind)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ॐ

श्रीसद्गुरुसनकाद्युदासीनेभ्यो नमः ॥

श्रीसद्गुरुश्रीचन्द्रोदासीनाय नमः ॥

श्रीसद्गुरुबनखण्ड्युदासीनाय नमः ॥

श्रीसाधुबेलातीर्थाय नमः ॥

प्राचीन मुनियों का पुरुषार्थ

श्रीमन्तं यतिराजराजिमुकुटं पुण्योद्भवं योगिनम् ।
ब्रह्मण्यप्रवरं जितेन्द्रियवरमुदासीनमेवं परम् ॥
भक्तानां बहुतापमोचनरतं श्रीसाधुबेलास्थितम् ।
वन्दे श्रीबनखण्डिनं यतिवरं सिद्धेश्वरं सद्गुरुम् ॥

यह बात प्रत्येक विद्वान् जानता है कि भौतिक उन्नति के अनन्तर ही मनुष्य आत्मा के ज्ञान की खोज में निकलता है। हिन्दु-जाति के संस्कृत साहित्य के स्वाध्याय से यह निःसन्देह सिद्ध हो जाता है कि ये लोग भौतिक उन्नति के शिखर तक पहुँच कर ही आत्मा की तलाश में निकले थे। प्रकृति का नियम भी है, एक तरह की उन्नति के अन्त को पाकर मनुष्य और किसी उन्नति की ओर झुकने लगता है। समय अब समीप ही है, जब यूरोप के लोग भौतिक पदार्थों की उन्नति से तंग आकर हमारी आध्यात्मिक विद्या की ओर झुकेंगे। खेद इस बात का है कि भारत फिर भौतिक पदार्थों की उलझन में फँसना चाहता है। इसके संस्कृत में लिखे गये वेद-वेदाङ्गादि आदर्श ग्रन्थों के पढ़ने से साफ़ प्रतीत होता है कि किसी समय यह भारत वर्ष आत्मा के विषय में ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं ईश्वर और विश्व सम्बन्ध में भी बहुत कुछ जान चुका था। इस विषय में प्रमाणभूत ग्रन्थ आजकल भी ऐसे मिलते हैं जिन के स्वाध्याय से इस विषय के तमाम सन्देह दूर हो जाते हैं। संक्षेपतः हम यह कहते हैं कि हिन्दु- जाति ने मानवीय विज्ञान को बहुत बढ़ाया। क्या हुआ आज यह कुछ बुरी दशा में से गुज़र रही है! परन्तु इसके वे अनुपम उपकार जो कि इसने मनुष्य जाति पर किये हैं, कभी भुलाए नहीं जा सकते।

मनुष्य जाति के इतिहास में सब से पहली पुस्तक वेद है। हम इसे ईश्वरदत्त ज्ञाननिधि समझते हैं। विश्वके विज्ञान मात्र का यह आधार है- ऐसा भी हमारा विश्वास है। दुनिया भर के अन्य मतावलम्बियों के धार्मिक ग्रन्थ हमारे वेदों के आधार पर ही बने हैं- ऐसा भी हम कह सकते हैं। इसके इलावा आधुनिक कलाकौशल और विज्ञान की उन्नति में भी हमारे वेदों और दर्शनों का बहुत कुछ हाथ है।

अब मन में यह प्रश्न स्वयमेव उत्पन्न होता है कि विश्वम्भर के कल्याणदाता संस्कृतसाहित्य की रचना में किन २ पवित्रात्माओं का अधिक परिश्रम एवं उपकार है। प्रत्येक उपकारी वस्तु के दर्शन होते ही- उसके बनाने वाले की ओर ध्यान का जाना स्वाभाविक है। कितने खेद का विषय है कि इस आवश्यक विषय पर आजतक कोई ऐसा आवश्यक ग्रन्थ नहीं लिखा गया, जिसके पढ़ने से जनता अपने सन्देहों को निवृत्त कर सके।

यह त्रुटि अब भी दूर की जा सकती है; परन्तु इस में बहुत सामग्री एवं समय चाहिये। संस्कृतवाणी का खज़ाना एक गहरा समुद्र है। अनुभवी विद्वान् ही इस में से कुछ प्राप्त कर सकते हैं। इसका साधारण परिचय भी तो कुछ आसान काम नहीं। वर्षों तक पढ़ते जाँय; कुछ पता नहीं चलता। हम हैरान होते हैं, जब कि हम इसकी विचित्रता की ओर ज़रा ध्यान देते हैं। कैसा सुन्दर उपदेश कैसे सुन्दर अनुभव एवं मार्गप्रदर्शन!

संक्षेपतः संस्कृत साहित्य के विषय में यह कहा जा सकता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि ईश्वर प्रेरित आत्माओं की तर्फ से यह हमें एक स्वर्गीय वस्तु मिली है। जिसके प्रधान प्रधान विभाग ये हैं:—

वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपवेदः- आयुर्वेद- धनुर्वेद गन्धर्व वेद, तन्त्र वेद, वेदाङ्ग :--

"छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ कथ्यते,
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणन्तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।"

शिक्षा, कल्प, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त और व्याकरण- ये छे अंग वेद के हैं। वेद के स्वाध्याय के लिये उक्त छे अंगों का स्वाध्याय नितान्त आवश्यक है।

वेदोपाङ्गानि तथादि:---

पुराण, न्याय, मीमांसा- धर्मशास्त्रम्। उक्त बातों से तत्त्व यह निकला कि संस्कृत साहित्य एक अगाध समुद्र है। इसके तल का पता लगाना योगीजनों का ही काम है। किसी साधारण विद्वान् का साहस नहीं हो सकता। धन्य हैं वे महामुनि लोग जिन्हों ने सैकड़ों और हजारों वर्षों के तप के अनन्तर इस अनन्त और महोपकारी ज्ञाननिधि को पाकर दुनिया में हिन्दु- जाति के सिर को ऊँचा किया है।

अब हम विस्तार भय से अपने मुख्य प्रकरण की ओर आते हैं। यहां पर हम यह भी लिख देना आवश्यक समझते हैं कि संस्कृत साहित्य की रचना में मुनि लोगों का ही विशेष हाथ है इस बात को प्रमाणित करना ही इस निबन्ध का प्रधान उद्देश्य है। पाठकों के मन में यह सन्देह स्वयमेव उत्पन्न हो जायगा कि- संस्कृत के ग्रन्थ तो ऋषियों ने लिखे हैं- मुनियों का नाम तो अधिक सुनने में नहीं आया इसके उत्तर में हम इतना कह देना ही पर्य्याप्त समझते हैं कि बहुत से लेखकों ने- ऋषि और मुनि- इन दो भिन्न भिन्न शब्दों के वास्तविक अर्थ को ही नहीं समझा। अतएव उन्हों ने ऋषि की जगह मुनि और मुनि की जगह ऋषि शब्द लिख डाला है।

ऋषि और मुनि शब्दार्थ निर्णय एक बहुत लम्बा एवं विचारणीय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय है। इस पर फिर कभी एक स्वतन्त्र निबन्ध लिखा जायगा इस समय यह विषयान्तर है- अतः प्रकरणगत विषयानुकूलता के लिये- उक्त विषय पर दो चार प्रमाण लिख कर हम आगे चलते हैं।

साधारण तौर पर वेद और शास्त्रों में मुनि शब्द चतुर्थाश्रमी साधु महात्माओं के लिये प्रयुक्त होता रहा है और ऋषि शब्द पवित्रात्मा और परोपकारी तपस्वी गृहस्थों के लिये आता रहा है :--

उक्त विषय को स्पष्ट करने के लिये एक दो प्रमाण लिखे जाते हैं:--

चत्वार आश्रमाः, गार्हस्थ्यमाचार्यकुलं मौनं वानप्रस्थम् —

(आपस्तम्ब- धर्मसूत्र)

हिन्दी

आश्रम चार हैं। चतुर्थाश्रम का नाम मौन है ॥

"अनग्निरनिकेतः स्यात्- अशर्मा शरणो मुनिः"

(आपस्तम्ब- धर्मसूत्र)

इस सूत्र में चतुर्थाश्रमी के लिये मुनि पद का प्रयोग स्फुट है।

उक्त विषय पर अधिक निर्णयस्थापन के लिये- श्रौतमुनि चरितामृत- ग्रन्थ का उदासीन परिचय प्रकरण पढ़िये। वहां पर इस विषय को बहुत प्रमाणित एवं स्फुट किया गया है। अब हम इस निर्णय पर पहुँच चुके हैं कि चतुर्थाश्रमी का नाम ही मुनि है। और मुनि लोगों ने ही संस्कृत के आदर्श पुस्तक लिखे हैं।

वैसे तो इस विषय पर एक विशाल ग्रन्थ लिखा जा सकता है, परन्तु इसके लिये बहुत परिश्रम एवं समय चाहिये। अतः संक्षेपतः हम इस विषय की ओर आते हैं कि संस्कृत का कौन ग्रन्थ किस मुनि ने लिखा।

मुनि प्रशंसा

यह बात निस्सन्देह प्रमाणित है कि विश्व पर मुनियों का उपकार अनुपम है। और लोगों ने तो मुनियों की प्रशंसा करनी ही थी- स्वयं वद भगवान भी मुनियों की प्रशंसा निहायत प्रसन्नता से करते हैं-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखिये :-

शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी मनांसी धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णो ।

(ऋग्वेद म० ६ - सू० ५६, म० ८)

इस मन्त्र में वायु देवता को आशीर्वाद दिया गया है। इस में कहा गया है- हे वायुदेवता शत्रुदमन में आपकी गति मुनि महात्माओं की भांति हो- अर्थात् मुनि लोग जिस तरह- दूसरे की बुरी वासनाओं के दमन में सिद्धहस्त होते हैं- इसी तरह आप भी अप्रतिहत गति वाले हो।

उक्त मन्त्र में मुनि महात्माओं के जीवन की पवित्रता पर काफी प्रकाश पड़ता है- धन्य हैं वे मुनि लोग- जिनके पवित्र आचरण की प्रशंसा स्वयं वेद भगवान् करते हैं।

यही कारण है कि मुनि लोगों के चरणों में विश्व भर की बड़ी बड़ी शक्तियां स्वयं आकर झुकती थी। उपकारी मनुष्य की पूजा सर्वत्र हुआ करती है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में लिखा है कि देवराज इन्द्र मुनि लोगों का परम मित्र अर्थात् उनका सहायक था। देखिये कितने हर्ष की बात है- मुनि लोगों ने तपके प्रभाव से तीनों लोकों में अपने महत्त्व का सिक्का जमा लिया था -

"इन्द्रो मुनीनां सखा"

(ऋग्वेद म० ८, सू० १७, म. १४)

इन्द्र मुनियों के परम मित्र थे। यह बात दावे से कही जा सकती है कि विश्व भर के कल्याणकारी मुनि लोग ही हुवे हैं। क्योंकि चतुर्थाश्रम में संसारिक उलझनें तो दूर हो जाती हैं- केवल आत्मोद्धार एवं विश्वोपकार ही शेष रह जाते हैं। अतः हमारे मुनि लोगों ने मनुष्य जाति पर जो जो उपकार किये हैं वे लिखने में नहीं आ सकते।

मुनि शब्दार्थ

यास्क मुनि ने निरुक्त में मुनि शब्द का अर्थ किया है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मुनिर्मननात्," और एक जगह ऐसा लिखा भी मिलता है- "वेद शास्त्रार्थतत्त्वावगन्तारो मुनयः" अर्थात् वेद और शास्त्रों के तत्त्व को पहुँचे हुए महापुरुष मुनि कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं।

वेद और मुनिगण

संस्कृत साहित्य में वेदों का स्थान बहुत ऊंचा है। जगह जगह पर उन्हें ईश्वरीय वाणी बतलाया गया है। उनकी नित्यता में किसी भी आस्तिक हिन्दु को सन्देह नहीं होना चाहिये। हमारे यहां तर्कप्रधान शास्त्र न्याय शास्त्र है। उसमें भी वेदों की नित्यता और अनित्यता पर पर्य्याप्त विवेचन मिलता है। गोतम मुनि ने न्यायदर्शन के सूत्र लिखे हैं। उस पर वात्स्यायन भाष्य है। यह भष्य अपने ढंग का निराला ही है। सूत्रकार और भाष्यकार- दोनों ने ही वेदों को नित्य सिद्ध किया है। मीमांसा शास्त्र के किसी भी ग्रन्थ को आप उठाकर देखें- सर्वत्र वेदों की नित्यता पर अधिक ज़ोर दिया गया है। उदाहरणार्थ आप सायणाचार्य कृत ऋग्वेद भाष्य भूमिका में लिखे गये मीमांसा सूत्र देख सकते हैं।

सायणाचार्य ने ऋग्वेद का भाष्य लिखते समय जो वेदभाष्यभूमिका लिखी है। वह वेदों की नित्यता के विषय में एक प्रशंसनीय कार्य है। उसे पढ़कर उनकी नित्यता में कोई सन्देह नहीं रह जाता।

अतः वेदों की रचना के विषय में अधिक छानवीन करना उनके महत्त्व को कम करना है। जब वे किसी ने बनाए ही नहीं; फिर उनके कर्ता की तलाश करना बाल की खाल उतारना है। उनके विषय में केवल इतना कहा जा सकता है कि वे पवित्रात्माओं के ध्यान में आ गये। अतः यास्क मुनि जी ने अपने निरुक्त में- ऋषि- शब्द का अर्थ लिखते समय लिखा है- "ऋषिर्दर्शनात्" अर्थात् जिन तपस्वी महात्माओं ने वेदों के मन्त्रों का आरम्भ में दर्शन किया वास्तव में वे ही सच्चे ऋषि कहलाए। यास्क की उक्त उक्ति से यह सिद्ध हो जाता है कि वेदों को बनाया किसी ने नहीं। वे तो स्वयमेव परब्रह्म की प्रेरणा से महर्षियों की पवित्र बुद्धियों में से आगये।

जिन महापुरुषों के ज्ञान में वेदों का प्रकाश चमका वे साधारण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनुष्य न थे उन्हें यदि स्वर्गीय आत्माएं कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं है। विश्व में वेदों के आ जाने के अनन्तर मनुष्य जाति के आगे यह एक विकट समस्या उपस्थित आ हुई कि वेदों को समझे और समझाए कौन। कई एक विद्वानों की राय है कि अनन्त वर्षों तक वेदों का स्वाध्याय गुरु शिष्य परम्परा से होता रहा। समय ने पलटा खाया और मनुष्य की बुद्धि भी प्रतिदिन दुर्बल होती गई। धीरे धीरे वह समय भी आगया जब कि लोग वेदों के अर्थ समझने में कतई असमर्थ हो गये।

सायणाचार्य्य लिखित ऋग्वेद भाष्य भूमिका के शास्त्रार्थों में एक पक्ष यह भी आता है कि वेद के मन्त्रों का कोई अर्थ है ही नहीं- वे तो केवल पुण्यपाठ के लिये ही हैं और इनका कोई अर्थ नहीं हो सकता।

इसके इलावा यास्कमुनि कृत निरुक्त के प्रथमाध्याय में उक्त विवाद के मूल का कुछ निदान मिलता है। महात्मा कौत्स जी का पक्ष है कि वेदों के मन्त्रों का कोई अर्थ नहीं है। वे तो केवल पुण्य के लिये ही हैं।

उक्त वाद विवाद के अनन्तर हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि कभी वह भी समय था जब कि वेदों के अर्थ समझने में बड़ी भारी दिक्कतें आ उपस्थित हुई थीं। आस्तिक जनता के लिये वह समय एक परीक्षाकाल था। और भ्रान्त पुरुषों के लिये वह एक भ्रान्तिवर्धक समय था।

मनुष्य जाति के ज्ञाननिधि वेदों पर इस तरह नित्य नवें आक्षेपों को सुन सुन कर परोपकारी मुनि महात्मा लोगों से न रहा गया अन्त में उन पवित्रात्माओं नें वेद की रक्षा का भार अपने कन्धों पर ले ही लिया। यदि समाहित हो कर विचारा जाय तो यह बात अनायास समझ में आ जाती है कि उस समय वेदों पर हो रहे प्रहारों का निराकरण करके मुनि लोगों ने मनुष्य जाति पर- विशेषतः हिन्दु वर्ण पर महान् उपकार किया। इस विषय पर हम अधिक न लिख कर अब यह बताने का यत्न करते हैं कि किस महामुनि ने किस ग्रन्थ को लिखकर क्या उपकार किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सनातन धर्म के सिद्धान्तों के मुताबिक- ब्राह्मण ग्रन्थ भी वेद में शामिल हैं- अतः हम सनातन धर्मावलम्बी उनके कर्ताओं की खोज करना ब्राह्मणग्रन्थों की शान के विरुद्ध समझते हैं। बेशक अन्यमतावलम्बी उन्हें वेद न मानें- मगर हमारे हृदय में तो उनके लिये वही स्थान है जो कि वेदों के लिये है।

वेद सूत्र और उनके लेखक मुनि

वेदों के मन्त्रों को यथाविधि प्रयुक्त करने के लिये दयालु मुनियों ने सूत्र ग्रन्थ लिखे हैं- वेदों के सूत्रों के लेखक प्रायः सब के सब मुनि थे :—

ऋग्वेद सूत्र मुनयः

सांख्यायनः[1] शाकलश्च[2], बास्कलो[3] ह्याश्वलायनः[4]। मण्डूको[5]
मुनिशार्दूल ऋक्सूत्रमुनिपञ्चकम् ॥

यजुर्वेदमुनयः

आपस्तम्बः, हिरण्यकेशीयः, मैत्रायणीयः, सत्याषाढः,
बोधायनः ।५।

सामवेदमुनयः

कौथुमः, राणायनः, गोभिलः, राणायनीयः,

अथर्ववेदमुनयः

पिप्पलाद- शौनक ।

उक्त मुनियों के विषय में एक पुरातन पुस्तक मिला है- जिस में यह श्लोक लिखा है:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सनातन धर्म के सिद्धान्तों के मुताबिक- ब्राह्मण ग्रन्थ भी वेद में शामिल हैं- अतः हम सनातन धर्मावलम्बी उनके कर्त्ताओं की खोज करना ब्राह्मणग्रन्थों की शान के विरुद्ध समझते हैं। बेशक अन्यमतावलम्बी उन्हें वेद न मानें- मगर हमारे हृदय में तो उनके लिये वही स्थान है जो कि वेदों के लिये है।

वेद सूत्र और उनके लेखक मुनि

वेदों के मन्त्रों को यथाविधि प्रयुक्त करने के लिये दयालु मुनियों ने सूत्र ग्रन्थ लिखे हैं- वेदों के सूत्रों के लेखक प्रायः सब के सब मुनि थे :—

ऋग्वेद सूत्र मुनयः

सांख्यायनः[१] शाकलश्च[२], बाष्कलो[३] आश्वलायनः[४] मण्डूको[५]
मुनिशार्दूल ऋक्सूत्रमुनिपञ्चकम् ॥

यजुर्वेदमुनयः

आपस्तम्ब, हिरण्यकेशीयः, मैत्रायणीयः, सत्याषाढ़,
बोधायनः ।५।

सामवेदमुनयः

कौथुमः, राणायनः, गोभिलः, राणायनीयः,

अथर्ववेदमुनयः

पिप्पलाद- शौनक ।

उक्त मुनियों के विषय में एक पुरातन पुस्तक मिला है- जिस में यह श्लोक लिखा है:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"वैदिकसूत्रकर्तारो, मुनयो धर्मपरायणाः ।
दर्शनसूत्रकर्तारः सदा तदनुयायिनः ॥

अर्थात् वेद के सूत्रों के लेखक मुनि (साधू) महात्मा सदा धर्म में तत्पर रहते थे- और दर्शन के सूत्रकारों ने उक्त मुनियों का अनुसरण किया है।

वैदिक सूत्रों की रचना के बाद उपवेदों की रचना का समय आता है। संक्षेपतः उपवेद चार हैं:--

"आयुर्वेद" "धनुर्वेद" "गन्धर्व वेद" और "तन्त्रवेद"।

उक्त चारों उपवेदों में अधिकतया आयुर्वेद अपनी कुछ अच्छी दशा में है यह बात निस्सन्देह प्रमाणित है कि आयुर्वेद के कर्ता मुनि लोग ही हैं। क्यों कि मुनियों के सिवाय इतना महान् कार्य और कोई कर ही नहीं सकता। उदाहरण के तौर पर हम यहां एक प्रमाण पेश करते हैं:-

चरक संहिता के दीर्घजीविताध्याय में भट्टारक हरिश्चन्द्र जी लिखते हैं।

"मुनीनां चतुर्विधो भेदः,,

अर्थात् मुनि चार तरह के होते हैं- वहां पर टीका कार ने साफ स्वीकार किया है कि आयुर्वेद के रचयिता मुनि लोग चार प्रकार (हंस, परमहंस, कुटीचक, बहूदक,) के होते हैं।

इतना ही नहीं- आयुर्वेद के विद्वान् जानते हैं कि माधव निदान एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। उसमें माधव जी स्वयं लिखते हैं:-

"नानामुनीनां वचनैरिदानीम्,,

अर्थात् आयुर्वेद के बनाने वाले जितने बड़े बड़े मुनि लोग हो चुके हैं- उनके पवित्र विचारों का भाव लेकर मैं यह माधव निदान नामक आयुर्वेद का एक छोटा सा ग्रन्थ लिखता हूं।

माधव निदान के प्रणेता "माधवकराचार्य" लगभग ७ वीं शताब्दी में हुए हैं। इन्हों ने सुश्रुत- चरक और वाग्भट्टादिकों को, जो कि आयुर्वेद के महारथी समझे जाते हैं मुनि लिखा है यथाः--

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नानामुनीनां वचनैरिदानीम्,,

उक्त दो प्रमाणों से यह बात निस्सन्देह सिद्ध हो जाती है कि आयुर्वेद के मूल लेखक मुनि लोग ही हैं।

धनुर्वेद और गन्धर्ववेद के ग्रन्थ आजकल मिलते ही नहीं- अतः उनके विषय में कुछ लिखना जरा संगत प्रतीत नहीं होता। तोभी नारद मुनि और शिव मुनि का तांडव और हनूमान मुनि भैरव मुनि का गायन प्रसिद्ध है।

तन्त्रवेद के ग्रन्थ बेशक काफी संख्या में मिलते हैं- परन्तु वाम मार्गियों के अधिक श्रद्धेय होने के कारण जनता ने उन्हें नहीं अपनाया। इतना अधिक समय न होने के कारण हम भी उनका स्वाध्याय नहीं कर सके। अतः उनके कर्ताओं के सम्बन्ध में कुछ लिखना एक भूल सी मालूम पड़ती है। बिना प्रमाण के लिखी हुई बात जनता को सन्देह में डाल देती है, हमारे निबन्धका उद्देश्य सत्य को प्रकट करना है न कि किसी पक्षपात के प्रवाह मे बह कर लोगों को भ्रम में डाल देना है।

वेदाङ्ग और उनके लेखक

वेदाङ्गों के सम्बन्ध में शिक्षा ग्रन्थों में लिखा है:-

"छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते। ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। शिक्षा घ्राणन्तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्। तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।

अर्थात् वेद भगवान् के चरण छन्द शास्त्र हैं। कल्प ग्रन्थ हाथ हैं। ज्योतिष शास्त्र आंखें हैं। निरुक्त शास्त्र श्रोत्र है। शिक्षा घ्राण (नासिका) है और व्याकरण शास्त्र वेद भगवान् का मुख है। अंगों सहित वेद को पढ़ने वाला आस्तिक मनुष्य ब्रह्मलोक का अधिकारी हो जाता है।

शिक्षा ग्रन्थ के उक्त प्रमाण से यह सिद्ध हो जाता है कि वेद के स्वाध्याय के लिये उसके छे अंगों का स्वाध्याय नितान्त आवश्यक है दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि वेदों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गूढ़ तत्त्वों का ज्ञान तब तक प्राप्त हो ही नहीं सकता जब तक छे अंगों को भलीभांती पढ़ न लिया जाए। वेद के अंगों की उपयोगिता पर प्रायः बड़े बड़े मान्य ग्रन्थों में बहुत प्रकाश डाला गया है- अतः इस विषय पर हम केवल एक और प्रमाण लिख कर आगे चलते हैं।

ऋग्वेद पर भाष्य लिखते समय सायणाचार्य्य लिखते हैं :-

"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्म्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च" अर्थात् ब्राह्मण का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि वह धर्म के स्वरूप को समझे और साङ्गोपांग वेदों को पढ़े और समझे।

धन्य हैं वे महामुनि जिन्हों ने हिन्दु-जाति पर असीम उपकार किया। यदि मुनि लोग इन छे अंगों को न लिखते तो आज हम वेदों के पवित्र ग्रन्थों का दर्शन न कर पाते। सचमुच अंगों के पठन पाठन ने ही वेदों की रक्षा की है। अन्यथा लोग इन्हें न समझते और सदा के लिये भूल जाते। इस लिये महामुनि याज्ञवल्क्य जी ने स्वरचित धर्म शास्त्र के १- ३- में लिखा है :--

पुराण न्यायमीमांसा धर्मशास्त्रांगमिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्यच चतुर्दश॥
इतिहास पुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुनाद्वेदो मामयं प्रहरेदिति॥

अर्थात् पुराण, न्यायशास्त्र, मीमांसा शास्त्र, धर्मशास्त्र, और वेद के छे अङ्ग, और चार वेद --:-- ये चौदह विद्या धर्मज्ञान की प्राप्ति के प्रधान केन्द्र हैं इतिहास और पुराणों की सहायता से ब्राह्मण वेदों के अर्थ को समझने का यत्न करें। अल्प ज्ञानी से वेद भगवान् स्वयं डरते हैं कि यह कहीं अर्थ की जगह अनर्थ न कर डाले।

संक्षेपतः यह कहा जा सकता हैकि वेद का ज्ञान प्राप्त करने के लिये जितना उपकार वेद के छे अंगों के पढने से हो सकता है- उतना अन्य ग्रन्थों से तीन काल में भी नहीं हो सकना।

अब पाठक उन महात्माओं के पवित्र नाम सुनने के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निहायत उत्सुक होगे जिन्हों ने ये छे शास्त्र रचे हैं। अत एव अब हम भी शीघ्र ही सप्रमाण लिखते हैं कि किस शास्त्र को किस मुनि ने किस लिये बनाया। बेशक यहां पर प्रकरणानुसार हम बहुत कुछ लिखना चाहते थे- किन्तु निबन्ध विस्तार भय से ऐसा न कर सके॥

वेदों के छे अंग ये हैं:--

शिक्षा[१], कल्प[२], व्याकरण[३], निरुक्त[४], छन्द[५], ज्योतिष[६]।

शिक्षा शास्त्र के विषय में विद्वानों का बहुत मत भेद है। परन्तु यह बात प्रत्येक विद्वान् स्वीकार करता है कि यह एक स्वतन्त्र शास्त्र है और इसका ज्ञान वेदार्थ में सहायक होता है।

शिक्षाशास्त्र के कितने ग्रन्थ थे यह बताना कठिन है। आज कल इस शास्त्र के लगभग ३० ग्रन्थ मिलते हैं। जिनके नाम ये हैं:—

(१) याज्ञवल्क्य शिक्षा - (८) लोमशी शिक्षा -
(२) कात्यायनी शिक्षा (९) शौनकीया शिक्षा -
(३) माण्डव्य शिक्षा - (१०) पाणिनीय शिक्षा -
(४) वासिष्ठी शिक्षा - (११) गौतमीय शिक्षा.
(५) पाराशरी शिक्षा - (१२) माण्डूकी शिक्षा.
(६) क्रयकारिका शिक्षा - (१३) अमरेशी शिक्षा.
(७) नारदीया शिक्षा - (१४) क्रमसन्धान शिक्षा.
(१५) केशवी शिक्षा.

इस तरह लगभग ३० ग्रन्थ शिक्षा के आज कल भी मिलते हैं; जिन में से १५ ग्रन्थों के नाम ऊपर लिख दिये गये हैं।

अब पाठक स्वयं अ,मान लगा लें कि मुनि लोगों का शिक्षा ग्रन्थों में कितना भाग है। प्रायः सब के सब शिक्षा ग्रन्थ मुनि लोगों की ही रचना हैं। उदाहरण के तौर पर आप देख सकते हैं:—

नारदीय शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा, गौतमीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा, शौनकीय शिक्षा प्रभृति०

नारद, पाणिनि, गौतम, याज्ञवल्क्य और शौनक प्रभृति- ये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब उदासीन मुनि हुए हैं:- इस बात को हम अभी सप्रमाण सिद्ध करने वाले हैं।

यहां पर कहना यह है कि शिक्षा शास्त्र प्रायः सारे के सारे मुनियों ने ही लिखे हैं:-

अब दूसरा नम्बर कल्पशास्त्र का है। कल्प शास्त्र का क्या प्रयोजन है- इसका उत्तर ऋग्वेद के भाष्य की भूमिका लिखते समय विद्वत्प्रकाण्ड श्री सायणाचार्य्य इस प्रकार देते हैं:-

"कल्प्यते समर्थ्यते यागप्रयोगोऽत्रेति"

अर्थात् जिस शास्त्र के द्वारा यज्ञों के प्रयोगों का समर्थन किया जाय उसे कल्प शास्त्र कहते हैं। विशेष परिचय के लिये "आश्वलायन-आपस्तम्ब- बौधायनादि" सूत्रग्रन्थों का नाम कल्पशास्त्र है। वेद की शाखाओं के अनुसार कल्पग्रन्थ अनेक हैं। ये सब ग्रन्थ भी प्रायः मुनियों द्वारा ही लिखे गये हैं- प्रमाण के लिये आप पीछे लिखे गये- वैदक सूत्रों के लेखक महामुनियों के नाम पढ़ सकते हैं।

कल्पसूत्रों के लेखक प्रायः मुनि लोग ही हैं। पाठक अपने भ्रम की निवृत्ति के लिये स्वयं कल्पग्रन्थों को पढकर निश्चित परिणाम पर पहुँच सकते हैं। हम पीछे लिख आए हैं कि इस निबन्ध में कोई भी ऐसी बात न लिखी जायगी जो सप्रमाण न होगी।

कल्प शास्त्र के अनन्तर व्याकरण शास्त्र का प्रकरण आता है यह शास्त्र अन्य शास्त्रों की अपेक्षा अधिक महत्त्व की वस्तु है। मुनि लोगों ने व्याकरणशास्त्र को वेद भगवान् का मुख माना है। है भी यथार्थ। जिस प्रकार कोई मनुष्य विना मुख के बोल नहीं सकता- इसी तरह कोई विद्वान् विना व्याकरण की सहायता के विद्वन्मण्डली में बोलने में समर्थ नहीं हो सकता।

महामुनि पतञ्जलि जी महाराज ने महाभाष्य के प्रथम आन्हिक में व्याकरण शास्त्र के प्रयोजन लिखे हैं:—

उन में सब से आवश्यक एवं प्रथम प्रयोजन है:- रक्षा अर्थात् वेदों की रक्षा के लिये व्याकरणशास्त्र की अत्यन्त आवश्यकता है- ऋग्वेद भाष्य के उपोद्घात में श्री सायणाचार्य्य जी लिखते हैं:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्"

अर्थात् वेदों की रक्षा के लिये व्याकरण अवश्य पढ़ना चाहिये। सार यह है कि व्याकरण शास्त्र एक बहुत ही उपयोगी एवं अत्यन्त उपकारी शास्त्र है।

पाठकगण व्याकरण शास्त्र के निर्माताओं के नाम सुनने के लिये काफी उत्सुक होंगे अतः अब इसी विषय को स्पष्ट करते हैं:-

व्याकरण शास्त्र के आरम्भ के विषय में तैत्तिरीय संहिता में एक जगह लिखा है :--

"वाग् वै पराची- अव्याकृताऽवदत्ते। देवा इन्द्रमब्रुवन् - इमां नो वाचं व्याकुर्विति। सोऽब्रवीत्- वरम्। वृणै मह्यं चैवैष वायवे च सह गृह्याता इति तस्मादैन्द्र वायवः सह गृह्यते, तामिन्द्रो मध्यतो ऽवक्रम्य व्याकरोत्, तस्मादियम् व्याकृता वागुद्यते। तै० सं० ६। ४। ७। ३

अर्थात् पूर्वकाल में मानवीय भाषा पशुपक्षियों की बोली की तरह अव्यक्त थी। एक समय देवता लोगों ने भाषा को व्यक्त करने की प्रार्थना की। कृपालु इन्द्र ने देवताओं पर प्रसन्न होकर उस अखण्ड वाणी को प्रकृति और प्रत्ययों में विभक्त कर दिया।

यह तो हुई न एक बहुत पुरानी कथा अब देखना यह है कि प्रचलित व्याकरण की रचना किन किन महात्माओं के परिश्रम का फल है। साधारण तौर पर व्याकरण अनेक हैं- परन्तु महामुनि पाणिनि द्वारा लिखित व्याकरण की टक्कर का कोई दूसरा व्याकरण आजतक नहीं लिखा गया।

बड़े बड़े दिग्गज विद्वानों ने पाणिनीय व्याकरण की प्रशंसा मुक्तकण्ठ से की है। जहां कहीं व्याकरण शास्त्र का वर्णन चला वहां पाणिनि जी का नाम बड़े गौरव एवं आदर स लिया जाता है सायणाचार्य जी ने ऋग्वेद के भाष्य में एक जगह लिखा है:-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

" वागिदानीमपि पाणिन्यादिभिर्व्याकृता सर्वैः पठ्यते "

अर्थात् पाणिनि प्रभृति महापुरुषों के यत्न से संस्कृत वाणी अब सर्व साधारण के द्वारा पढ़ी जाती है।

पाश्चात्य विद्वानों ने भी पाणिनि की विद्वत्ता एवं अलौकिक प्रतिभा की असीम प्रशंसा की है। यह कोई अत्युक्ति नहीं है- आजतक दुनिया की किसी भी भाषा में पाणिनीय व्याकरण की टक्कर का व्याकरण नहीं लिखा गया।

आजकल प्रचलित व्याकरणों में अष्टाध्यायी, कात्यायन वार्तिक एवं पतञ्जलि कृत महाभाष्य अधिक मान्य एवं आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं।

पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि ये तीनों महापुरुष कौन थे· इस विषय पर अब कुछ प्रकाश डालना उचित प्रतीत होता है। बहुत से धुरंधर लेखकों ने इन्हें ऋषि लिखा है- मगर यह उनकी भ्रान्ति है क्यों कि महामुनि यास्क ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "निघण्टु" पर लिखित निरुक्त में एक जगह पर लिखा है कि "ऋषिर्दर्शनात्,, अर्थात् ऋषि वे ही कहलाते हैं- जिन्हों ने योग समाधियों द्वारा वेदों के मन्त्रों का साक्षात्कार किया- केवल वे ही महापुरुष ऋषि कहलाने के अधिकारी हैं।

श्री सत्यव्रताचार्य ने स्वरचित निरुक्तालोचन ग्रन्थ में उक्त विषय पर १२ पेज लिख डाले हैं। अनेकों वैदिक एवं लौकिक प्रमाणों से अन्त में यही सिद्ध कर दिखाया है कि ऋषि लोग केवल वेद मन्त्रों के द्रष्टा ही हो सकते हैं।

अतः यह मानना पड़ेगा कि व्याकरण के प्रसिद्ध रचयिता पाणिनि, कात्यायन, और पतञ्जलि जी महाराज "महामुनि" थे। अन्वेषण करने पर इस विषय के काफी प्रमाण मिल सकते हैं. व्याकरण शास्त्र में भट्टोजीदीक्षित लिखित "सिद्धान्त कौमुदी" का बहुत आदर है। लोग इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। प्रचलित विद्यालयों में इसी ग्रन्थ का पठन पाठन प्रायः होता है। है भी यह ठीक यह ग्रन्थ व्याकरण शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिये एक अद्भुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्रन्थ है।

इसके बनाने वाले भट्टोजीदीक्षित सारस्वत ब्राह्मण थे। ये विक्रम की १६ वीं शताब्दी में हुए हैं। ये व्याकरण शास्त्र के आदर्श विद्वान हो गुजरे हैं। सिद्धान्त कौमुदी के पढ़े विना पाणिनीय व्याकरण का समझना एक कठिन काम है।

व्याकरण शास्त्र के दिग्गज विद्वान् भट्टोजीदीक्षित जी भी पाणिनि कात्यायन और पतञ्जलि जी को "मुनि" मानते हैं। इसी लिये उन्हों ने अपनी वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी में उक्त तीनों महापुरुषों को मुनि लिखा है:..

"मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च।
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीयं विरच्यते।"

इस कारिका का अर्थ लिखते समय "तत्त्व बोधिनी कार लिखते हैं॥

"मन्तारो वेदशास्त्रार्थतत्त्वावगन्तारो मुनयः, तेषां पाणिनिकात्यायनपतञ्जलीनां त्रयं मुनित्रयम्"

अर्थात् वेद और शास्त्रों के गूढ रहस्यों के वेत्ता लोग मुनि कहलाते हैं. व्याकरण शास्त्र के आचार्य्य पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि जी मुनि थे।

कौन मुनि कब और कहां हुआ यह एक अधिक विचारणीय एवं विवादास्पद विषय है। कई एक विद्वानों की राय है कि महाभाष्य के रचयिता महामुनि पतंजलि जी ईसा से लगभग ५०० वर्ष पूर्व हुए हैं; परन्तु बहुत से विद्वान् उक्त मत से सर्वथा विरुद्ध हैं। खैर कुछ भी हो उक्त मुनित्रयी का अनुपम उपकार हिन्दु जाति के लिये एक महान् गौरव है। संस्कृत साहित्य में ये तीनों ग्रन्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। यह हमारी अधन्यता है कि हम इन के निश्चित इतिहास से परिचित नहीं हैं।

भारतीय इतिहास के सम्बन्ध में यहां पर कुछ लिख देना उपयुक्त होगा। प्रत्येक जाति की तीन बातें इतिहास में लिखने योग्य होती हैं। सामाजिक स्थिति, नैतिक स्थिति और धार्मिक स्थिति, भारत की उक्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीनों स्थितियों के सम्बन्ध में केवल इतना कहा जा सकता है कि भारत के ऐतिहासिक ग्रन्थों में इसकी दो स्थितियों का चित्र तो कुछ न कुछ आ जाता है; परन्तु इसके धार्मिक इतिहास के सम्बन्ध में कोई निश्चित निर्णय नहीं हो सकता है। उदाहरण के तौर पर आप किसी क्षत्रिय राजा के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहें तो हमारे संस्कृत ग्रन्थों में काफी प्रमाण मिल सकते हैं; इसके विपरीत यदि किसी मुनि महात्मा के सम्बन्ध में कुछ छानबीन करना चाहें तो सन्तोष जनक सामान प्राप्त नहीं हो सकता। निदर्शनार्थ रामायण में जितना प्रकाश राम के जीवन पर डाला गया है- उसका सौवा हिस्सा भी वसिष्ठ या किसी अन्य धर्म परायण मुनि महात्मा के जीवन पर नहीं डाला गया। वर्तमान चतुर्थाश्रमी उदासीन महात्माओं के लिये यह एक लज्जा की बात है कि उनके आदर्श पूर्वजों का इतिहास अभीतक भूत की तह में निमग्न है।

परमपिता परमात्मा की अत्यन्त कृपा है कि अब कई एक पवित्रात्मा चतुर्थाश्रमी उदासीन साधु महात्माओं के उत्साही मनों में इस प्रकार के भाव उत्पन्न हो रहे हैं कि अनुपम उपकारी मुनि महात्माओं के आदर्श जीवनों पर पर्याप्त प्रकाश डाला जाय- जिससे आम जनता यह जान सके कि चतुर्थाश्रमी उदासीन साधु महात्माओं ने जाति सेवा के क्षेत्र में कितने बढ़ चढ़ कर काम किये हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है, वह समय अब दूर नहीं है- जब कि इस विषय पर बड़े बड़े धुरन्धर विद्वानों की लेखनियों से आदर्श ग्रन्थ निकलने लगेंगे।

पाठक क्षमा करें, हम जरा विषयान्तर में जा प्रविष्ट हुए थे। अब हम फिर पाठकों का ध्यान उसी ओर ले जाना चाहते हैं- जहां पर हमने वेद के अंगों का प्रतिपादन छोड़ा था।

शिक्षा, कल्प और व्याकरण के सम्बन्ध में बहुत नहीं तो कुछ न कुछ अवश्य उपयुक्त लिखा जा चुका है- अब उन्हीं के विषय में अधिक लिखना निबन्ध को बढ़ानामात्र है। सचाई आखिर सचाई ही है। नमूने के तौर पर प्रमाण भी दिखाए जा चुके हैं। यदि किसी पाठक को इस निबन्ध के किसी सिद्धान्त के सम्बन्ध में कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन्देह हो तो वह स्वयं उस विषय की पुस्तकों का स्वाध्याय करें या हम से पत्र व्यवहार करें। हम उसे बहुत शीघ्र सन्तोष जनक उत्तर देंगे।

उदाहरण के तौर पर व्याकरण के रचयिता - पाणिनि - कात्यायन भगवान् पतञ्जलि जी महाराज मुनि थे। उक्त विषय की पुष्टि के लिये - एक नहीं; दो नहीं; पचासों प्रमाण पेश किये जा सकते हैं। शिक्षा शास्त्र और कल्पशास्त्रों के रचयिता प्रायः मुनि लोग ही थे।

निरुक्त शास्त्र

व्याकरण शास्त्र के बाद; निरुक्त शास्त्र पर कुछ लिखना उपयुक्त प्रतीत होता है। इस शास्त्र की रचना तब हुई थी जब कि वेदों के कुछ मन्त्रों के कुछ शब्द लोगों को वेदार्थ के समझने में अड़चनें मालूम होने लगे थीं। परम उपकारी श्रुतिसिद्ध उदासीन मुनि जी ने वेदों के अर्थ समझने में उपस्थित हो रहीं अड़चनों को दूर करने के लिये निघण्टु नामक एक ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ के पाञ्च अध्याय और तीन काण्ड हैं। पहले तीन अध्याय नैघण्टुक काण्ड के नाम से व्यवहृत होते हैं। चतुर्थ का नाम नैगमकाण्ड और पञ्चम को दैवतकाण्ड कहते हैं।

इसी ग्रन्थ पर जो यास्क मुनि जी ने भाष्य लिखा है- वह निरुक्त कहलाता है। वेदांगों में इसका महत्त्व भी कम नहीं है वेदार्थ के ज्ञान के लिये इसका पढ़ना नितान्त आवश्यक है- इस ग्रन्थ के १२ अध्याय हैं। सचमुच यह पुस्तक विद्या का भण्डार है। एक जगह पर यास्क मुनि ने स्वयं लिखा है:- "तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यं स्वार्थ साधकश्चेति" अर्थात् यह निरुक्त शास्त्र विद्या का उत्पत्ति स्थान है और व्याकरण शास्त्र की कमी को दूर करता है। अतः यह बात निस्सन्देह सिद्ध हो जाती है कि निरुक्त शास्त्र एक आवश्यकीय शास्त्र और इसका पठन पाठन बहुत ही लाभप्रद एवं वेदरक्षा में सहायक है।

ऐसे उपयोगी शास्त्र के रचयिता महामुनि यास्क की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है। धन्य हैं यास्क मुनि जी महाराज जिन्हों ने वेदों की रक्षा के लिये हम पर इतना अनुपम उपकार किया। क्या हिन्दू ज्ञाति कभी इनके उपकार से उऋण हो सकती है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे महापुरुष के काल के सम्बन्ध में भी यहां कुछ लिख देना अनुपयुक्त न होगा। यह बात निर्विवाद है कि महाभारत में यास्कमुनि का वर्णन आता है --:-- महाभारत के शान्तिपर्वान्तर्गत मोक्ष धर्म के ३४२ वें अध्याय के ७१ वें श्लोक से यह निर्विवाद सिद्ध है कि वहां पर यास्क के सम्बन्ध में कृष्णार्जुन सम्वाद आता है। अतः यह मानना ही पड़ता है कि यास्क मुनि का काल महाभारत से पूर्व ही है।

यास्कमुनि कालमतभेद

श्री सत्यव्रताचार्य जी ने यास्कमुनि का काल कलियुग की १२ वीं शताब्दी माना है। इन के मतानुसार महामुनि यास्क जी महाराज-यस्कगोत्र में उत्पन्न हुए थे। और इनका जन्म स्थान- पारस्कर देश था।

प्रोफेसर भगवद्दत्त जी बी. ए. के मता सार भी यास्कमुनि का समय उक्त समय ठहरता है आपकी राय के अनुसार यास्क मुनि महाभारत के अनन्तर लगभग तीन शताब्दी के भीतर ही हुए हैं।

अब विचारणीय विषय यह है कि श्री यास्क जी महाराज मुनि थे या ऋषि?

हम इस विषय पर पीछे काफी प्रकाश डाल चुके हैं कि ऋषि कहलाने के अधिकारी केवल वे ही महापुरुष हो सकते हैं, जिन्हों ने अपनी अलौकिक योग शक्तियों द्वारा वेदों के मन्त्रों के दर्शन किये। जब महामुनि यास्क जी महाराज इस बात को अपने ग्रन्थ निरुक्त में स्वयं स्फुट करते हैं तो सन्देह के लिये स्थान कहां रह जाता है? आप लिखते हैं:- "ऋषिर्दर्शनात्" अर्थात्-वेदों के मन्त्रों के द्रष्टा ही ऋषि कहला सकते हैं। प्रत्येक विद्वान् इस बात को मुक्तकण्ठ से स्वीकार करेगा कि महामुनि यास्क जी महाराज मन्त्रद्रष्टा न थे। अब पाठक स्वयं सोचें- इतना होने पर भी यदि कोई विद्वान् महामुनि यास्क को हठात ऋषि कहे तो उसका प्रमाद ही कहा जा सकता है।

हम अपने उक्त सिद्धान्त की पुष्टि के लिये प्रसिद्ध ग्रन्थ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरुक्तालोचन के लेखक श्री सत्यव्रताचार्य्य की सम्मति जो कि उन्हों ने यास्क को मुनि सिद्ध करने के लिये लिखी है- यहां उद्धृत करते हैं।

"इत्थं निष्पन्नमेतत् — एतान्निरुक्तकारो यास्कः खलु वस्तुतो मुनिरित्येव चिरात् प्रसिद्धः"

अर्थात् श्री सत्यव्रताचार्य्य जी कहते हैं कि पूर्वोक्त युक्ति और प्रमाणों से यह निःसन्देह सिद्ध हो जाता है कि निरुक्त शास्त्र के लेखक श्री यास्क जी महाराज वास्तव में मुनि ही थे। और पुरातन ग्रन्थों में भी यही मत सिद्ध किया गया है। अतः महा मुनियों के इतिहास में यास्क का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने लायक है। इनकी जितनी प्रशंसा की जाय उतनी कम है।

छन्द शास्त्र

निरुक्त शास्त्र पर कुछ उपयोगी सामग्री के प्रदर्शन के अनन्तर अब हम छन्द शास्त्र के सम्बन्ध में कुछ लिख देना ठीक समझते हैं। वेद के अन्य अंगों की तरह- छन्द शास्त्र भी वेद पर काफी उपकार करता है। ऋग्वेद पर भाष्य लिखते समय श्री सायणाचार्य जी लिखते हैं कि वेद का स्वाध्याय तब तक पूर्ण हो ही नहीं सकता जब तक छन्दों का पूर्ण ज्ञान न प्राप्त कर लिया जाय। अतः छन्द शास्त्र की उपयोगिता के विषय में सन्देह करना भूल से बाहर नहीं है।

पिङ्गल मुनि

किसी ने क्या ही अच्छा लिखा है :—

"विना व्याकरणेनान्धो बधिरः कोशवर्जितः।
छन्दःशास्त्रं विना पंगुर्मूकस्तर्कविवर्जितः॥"

अर्थात् व्याकरण के पढ़े विना मनुष्य पदपदार्थ को नहीं समझ सकता। कोश के विना विद्वान् बधिर के समान है। जिस विद्वान् ने छन्द शास्त्र नहीं पढ़ा वह पंगु है- अर्थात् शास्त्रों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैदान में अधिक वेगवान् नहीं हो सकता- तर्क निपुणता के विना विद्वान् मूक के समान होता है।

अब पाठकों को छन्द शास्त्र की उषयोगिता में कोई सन्देह नहीं रह गया होगा।

इस शास्त्र के कर्ता के सम्बन्ध में यहां कुछ लिखना उपयुक्त प्रतीत होता है। पिंगल मुनि जी ने छन्द शास्त्र के सूत्र लिखे हैं। उन सूत्रों में और भी कई एक छन्दशास्त्रकारों के नाम लिखे मिलते हैं- इस से यह साफ प्रतीत होता है कि पिंगल मुनि से पूर्व भी कई एक छन्दशास्त्रकार हो चुके हैं।

महामुनि पिंगल जी का छन्दशास्त्र अधिक आदरणीय एवं उपयोगी है। यही कारण है कि इन्हीं के द्वारा लिखा हुआ छन्दशास्त्र ही वेदाङ्ग होने का दम भरता है। जिस प्रकार और व्याकरणों के होने पर भी- केवल अष्टाध्यायी ही वेदांग होने में सफल हुई है- इसी तरह इन्हीं के छन्दशास्त्र को ही उक्त गौरव मिला है।

कई लोगों ने पिंगल जी को ऋषि लिखा है। और कई इनको आचार्य भी लिखते हैं। जानकार विद्वानों ने इनको महामुनि लिखा है। यह अन्तिम पक्ष ही युक्तियुक्त एवं सप्रमाण है। महामुनि ही आचार्य्य हो सकता है।

महाभारत के आदिपर्व के ५३ वें अध्याय में पिंगल मुनि की कथा आती है। वृत्तरत्नाकर छन्द शास्त्र का एक छोटासा ग्रंथ है। छन्द शास्त्र में प्रवेश के लिये यह एक अत्यन्त उपयोगी एवं सरल पुस्तक है। पञ्जाब यूनिवर्सिटी में यह पुस्तक प्राज्ञ परीक्षा में नियत है। संस्कृत महा विद्यालय जम्मू के प्रधानाध्यापक पण्डित रामप्रपन्न जी शास्त्री ने इस पुस्तक पर एक संस्कृत हिन्दी टीका लिखी है। यह टीका लाहौर के प्रायः सब संस्कृत पुस्तकालयों से मिल सकती है। इस टीका की भूमिका के ३ रे पृष्ठ पर शास्त्री जी लिखते हैं :—

" छन्दःशास्त्रप्राक्तनकर्तृपरिचयः—

शास्त्रस्यास्य कर्ता तु पिंगलमुनिः प्रसिद्धः "

अर्थात् छन्दशास्त्रकारों में पिंगल मुनि जी प्रधान हुये हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उक्त प्रमाणों से यह निर्विवाद सिद्ध है कि छन्दशास्त्रकार श्रीमान् महापुरुष पिंगल जी महाराज महामुनि थे।

छन्दशास्त्र की उपयोगिता केवल वेदों तक ही परिमित नहीं है। काव्य शास्त्र के बड़े स्तम्भों में से छन्दशास्त्र एक है। विना इसके सहाँय के काव्य का पद्यात्मक भाग वेकार सा जान पड़ता है। अतः पिंगल मुनि जी का उपकार अधिक आदरणीय एवं विस्तृत है।

ऐसे महोपकारी महामुनि के ऐतिहासिक परिचय के लिये यहां कुछ लिख देना उपयुक्त होगा। महामुनि पिंगल जी महाराज काश्मीर में पैदा हुए थे- ऐसी सम्मति बहुत से विद्वानों की है। इस में कोई शक नहीं कि- पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना- के अनुसार इनके देशकाल के सम्बन्ध में विद्वानों का मतभेद हो, परन्तु प्रमाणों के आगे व्यक्तिगत सम्मतियां असत्य प्रतीत होने लगती हैं।

यह तो निश्चित ही है कि महामुनि पिंगल जी महाराज काश्मीर के थे। इन के काल के विषय में निश्चित मत यह है कि ये मुनि राज जी यास्क मुनि के बाद हुये हैं।

कई विद्वानों का मत है कि पिंगल मुनि महामुनि पाणिनि जी के छोटे भाई हुए हैं। अतः इनका समय वही है जो पाणिनि जी का है। खैर कुछ भी हो, वेदों पर पिंगल मुनि जी का उपकार असीम एवं अनुपम है। धन्य हैं पिंगल मुनि जी महाराज जिन्हों ने छन्द शास्त्र के सूत्र लिख कर गागर में सागर भर कर दिखा दिया।

ज्योतिष् शास्त्र

वेद के पांच अंगों का साधारण परिचय दिया जा चुका है। उनकी उपयोगिता की विषय में भी कुछ लिख ही दिया है। उन के कर्ताओं से भी पाठक कुछ परिचित हो ही गये हैं। अब वेद के छठे अंग ज्योतिष् शास्त्र के सम्बन्ध में यहां कुछ लिखा जाता है:-

श्री सत्यव्रताचार्य्य जी निरुक्तालोचन में ज्योतिष् शास्त्र पर विचार करते समय लिखते हैं।

10963

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"यज्ञकालार्थसिद्धये- कालविशेषान्
अवगमयितुम् ज्योतिषमुपयुज्यते"

अर्थात् यज्ञों के काल का निर्णय करने के लिये ज्योतिष् शास्त्र का उपयोग होता है। अतः वेदज्ञान प्राप्ति के लिये ज्योतिष् शास्त्र का पढ़ना परम आवश्यक है। साधारणतः ज्योतिष् शास्त्र दो बड़े भागों में विभक्त है। गणित ज्योतिष् और फलित ज्योतिष्। इन दोनों में प्रधानता फलित ज्योतिष् की ही है। गणित की सहायता से ही मुनि लोगों ने आकाश के तारों की प्रत्येक क्रिया से परिचय प्राप्त कर लिया था। सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहणादि का पूरा पूरा निश्चय गणित ज्योतिष् के द्वारा ही हो सकता है।

कोई समय था जब कि हम लोग इस शास्त्र में बहुत अधिक चढ़े बढ़े हुए थे। विदेशों से विद्वान् लोग भारत में ज्योतिष् शास्त्र सीखने के लिये बड़े चाव से आया करते थे। समय का उल्टफेर है। किसी कवि ने ठीक कहा है "चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च" अर्थात् चक्र की तरह दुःख और सुख बदल ते ही रहते हैं भारत की पुरातन उन्नति का स्मरण आते ही मन अभिमान से नाचने लगता है। साथ ही आजकल के पतन का दृश्य देखते ही वह शोकसागर में निमग्नहो जाता है। अस्तु ज्योतिष् शास्त्र एक उपयोगी शास्त्र है। मनुष्य जाति के लिये यह एक अत्यन्त उपकारी शास्त्रहै। इसकी रचना के विषय में अनंत मत भेद हैं। आरम्भ में इस शास्त्र को किसने रचा यह अभी तक निर्णीत नहीं हुआ। ज्योतिष् के ग्रन्थ लिखने वाले अनेक आचार्य्य हो चुके हैं।

खैर इतना मतभेद होने पर भी हमारी तो यही धारणा है कि ज्योतिष् शास्त्र के लेखक जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सब के सब मुनिमहात्मा थे- हमारी उक्तधारणा की पुष्टि के लिये हम यहां एक प्रमाण पेश करते हैं। आशा है कि पाठक महोदय केवल इसी प्रमाण के बल से हमारी उक्त धारणा के साथ सहमत हो जाएंगे। बृहदत्त होड़ाचक्र एक साधारण सा ग्रन्थ है। परन्तु इसमें जितनी भी बातें लिखी हैं वे सब की सब हैं समूल और ज्योतिष् शास्त्र के बड़े बड़े ग्रन्थों से ली गई हैं। अतः इस ग्रन्थ को हम ज्योतिष शास्त्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का निचोड़ कह सकते हैं। इस ग्रन्थ में एक जगह लिखा है:-

" गर्गांगिरागौतमकश्यपाद्याः पराशराद्या
मुनयो वदन्ति "

अर्थात् गर्ग, अंगिरा, गौतम, कश्यप, पराशर प्रभृति मुनि लोगों ने जो बातें ज्योतिष् शास्त्र के सम्बन्ध में लिखी हैं- वे सब की सब संक्षेपतः यहां लिखी जाती हैं।

उक्त प्रमाण से यह स्फुट हो जाता है कि ज्योतिष् शास्त्र के रचयिता मुनि लोग ही थे। हां बहुत से महामुनि आचार्य भी हो चुके हैं, परन्तु मूल लेखक मुनिमहात्मा ही थे। अतः हम मुनि (साधु) लोगों के काफी कृतज्ञ हैं।

अठारह पुराण और व्यास मुनि

पुराणों की उपयोगिता के विषय में विद्वानों का परस्पर मत भेद है। कौन मत कहां तक ठीक है- यह एक विकट समस्या है। परन्तु यह बात सर्व सम्मत अवश्य है कि पुराणों का लक्ष्य श्रद्धेय एवं आदरणीय है। जो लोग वेद नहीं समझ सकते- वे पुराणों के स्वाध्याय से ही अपने को कृतार्थ कर सकते हैं। अतः अठारह पुराण भी संस्कृत- साहित्य का एक उपयोगी अंग हैं यहां पर पुराणों का अधिक परिचय देने से निबन्ध बढ़ जायगा। अतः संक्षेपतः हम इतना ही कहना चाहते हैं कि महामुनि व्यास जी ने पुराणों की रचना द्वारा हिन्दु- जाति का बहुत कल्याण वाला उपकार किया है।

पुराणों की रचना किसने और कब की- अधिक विद्वानों की राय है कि महामुनि व्यास देव जी ने ही अठारह पुराण लिखे हैं। परन्तु पुराणों के मूल लेखक श्री व्यास देव जी ही हैं- इसमें किसी को कोई सन्देह नहीं होना चाहिये।

उक्त सिद्धांत की पुष्टि के लिये यदि ढूंढे जाएं तो काफी प्रमाण प्राप्त हो सकते हैं। अतः उदाहरण के तौर पर हम यहां पर एक प्रमाण पेश करते हैं।

" मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः

(गीता. अ. १०, श्लोक ३७)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् मुनियों में व्यास मुनि और कवियों में उशना कवि मुनि हुये हैं।

पुराणों के विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है- क्योंकि सर्व साधारण हिन्दु जनता इनके नाम तथा उपकारों से पूर्णतया परिचित है। महात्मा मुनि व्यास देव जी का उपकार हिन्दु-जाति के इतिहास में विशेष महत्त्व की वस्तु है। अतः प्रत्येक आस्तिक हिन्दु इनके अनुपम उपकारों से कभी उऋण नहीं हो सकता।

बहुत से विद्वान् इन्हें महर्षि व्यास देव जी लिखते हैं। और बहुत से महामुनि व्यास देव जी लिखते हैं। अब दोनों तरह के प्रमाणों की उपस्थिति में कौन पक्ष ठीक है- यह बताना जरा असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

हमारी अपनी धारणा तो यही है कि श्री व्यासदेव जी मुनि थे क्योंकि ये वेदमन्त्रद्रष्टा नहीं हैं। इन्हों ने तो वेदों का विस्तार किया है। अतः ये मुनि कहला सकते हैं। हां जहां कहीं प्रमाणित ग्रन्थों में इनके लिये ऋषि शब्द का प्रयोग हुआ भी है वहां पूज्य बुद्धि को लेकर हुआ है। अतः उनके मुनि होने में कोई आपत्ति नहीं।

महामुनि व्यास देव जी ने अठारह पुराण लिखे हैं। महाभारत, जो कि हमारे इतिहास का मूल है, इन्हीं की रचना है। उत्तर मीमांसा के कर्ता भी आप ही हैं।

श्रीव्यासदेव जी के मुनि होने में एक और भी दृढ प्रमाण है:—

वेदान्त दर्शन के सूत्र श्री व्यासदेव जी ने लिखे हैं। उन पर श्री स्वामी हरिप्रसाद जी उदासीन वैदिक मुनि ने- "वैदिकवृत्ति लिखी है। उस वृत्ति में एक जगह आप लिखते हैं -

"व्यासेन मुनिनाकारि वैदिकी ब्रह्मकप्रया
मयाहरिप्रसादेन वृत्त्या सम्यक् परिष्कृता ॥"

उक्त कारिका में स्वामी हरिप्रसाद जी उदासीन ने श्री व्यास जी को साफ शब्दों में मुनि लिखा है। वैदिक मुनि जी आजकल के समय के एक आदर्श विद्वान् हैं। वे अप्रमाणित बात कभी भी अपने किसी ग्रन्थ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में नहीं लिख सकते। अतः यह सिद्ध है कि अठारह पुराण, महा भारत और वेदान्त दर्शन के कर्ता महामुनि व्यास जी मुनि थे।

यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो महामुनि व्यासदेव जी का कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा है जितने ग्रन्थ इन्हों ने लिखे हैं- इतने और किसी मुनि ने शायद ही लिखे हों। धन्य है इनका परिश्रम। धन्य है माता सत्यवती जिसने ऐसे सुपुत्र को जन्मदिया जो मुनियों के इतिहास में सूर्य्य की तरह चमक उठा।

षड् दर्शन और उनके लेखक

किसी जाति के मस्तिष्क की गहराई का पता लगाना हो तो उसकी फिलासफी की किताबें पढ़नी चाहियें। हिन्दु-जाति के मुनि लोग आध्यात्मिक तत्त्वों के अन्वेषण में बहुत ऊँचा चढ़ गये थे। उन के लिखे हुए दर्शनों के पढ़ने से ज्ञात होता है कि वे दुनियां के दायरे से कतई बाहर होकर प्रकृति की प्रत्येक हरकत से परिचित हो गये थे। उनके आगे संसार एक साधारण सी वस्तु थी। वे प्रतिक्षण ब्रह्मज्ञान की तरंगों में बहते रहते थे। आज पाश्चात्य संसार हमारे दर्शनों को पढ़ कर हैरान हो रहा है। हमारे ऋषियों और मुनियों ने जिन तत्त्वों को खोजा है पाश्चात्य जगत् का रुख अभी उस ओर नहीं हुआ है। योरप अभी तक भौतिक उन्नति में दत्त चित्त है। उसे अभी आध्यात्मिक उन्नति का शौक पैदा नही हुआ है।

दुनियां भर के विद्वानों की राय है कि संस्कृत साहित्य में यदि कोई दिमागी साहित्य है तो छे दर्शन हैं। इन्हों ने संस्कृत साहित्य के बाग को फूलों की तरह शोभित कर रक्खा है। अतः दर्शनों के रचयिता महापुरुषों का अनुपम उपकार कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

दर्शन छे हैं इन्हीं को षट् शास्त्र भी कह देते हैं। इनका परस्पर काफी मतभेद है। परन्तु लक्ष्य सब का एक है। फिलासफी भी परस्पर प्रायः मिलती जुलती ही है। स्थूलतया बहुत गहरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भेद मालूम होता है। सूक्ष्म दृष्टि से सबके सब एक ही ज्ञानार्णव में जा मिलते हैं।

साधारण परिचय के लिये छे दर्शन ये हैं:- सांख्य दर्शन, योग दर्शन, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, मीमांसा दर्शन, वेदान्त दर्शन। इन के कर्ताओं के नाम ये हैं:-

१ कपिल मुनि, २ पतञ्जलि मुनि, ३ गौतम मुनि,
४ कणाद मुनि, ५ जैमिनि मुनि, ६ व्यास मुनि।

विद्वानों की धारणा के अनुसार किसी ने किसी दर्शन लेखक को ऋषि लिखा है और किसी ने किसी को आचार्य और मुनि लिखा है। परन्तु इन सब को मुनि लिखना ही उचित मालूम होता है। वेद तो ईश्वर कृत है मुनि वेदकेमन्त्रद्रष्टा न होने से ये ऋषि * तो नहीं कहे जा सकते- हां शेष रहा आचार्य्य शब्द- यहां मुनियों के विषय में संगत हो सकता है परन्तु हमारी अपनी धारणा भी यही है कि उन्हें मुनियों को ही आचार्य कहना चाहिये और उचित भी यही है।

उक्त धारणा की पुष्टि के लियेहम यहां कुछ प्रमाण लिखते हैं जिस से पाठक भी हम से शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे।

सांख्य दर्शन के कर्ता महामुनि कपिल जी उदासीन हैं। पुराणों में इनकी बहुत सी कथाएँ आई हैं। जिन्हें हम यहां विस्तार भय से नहीं लिख सकते। दर्शनों के लेखकों की मुनित्वसिद्धि के लिये हम केवल एक २ प्रमाण देना ही पर्य्याप्त समझते हैं; क्यों कि अधिक प्रमाण संग्रह से निबन्ध बहुत बढ़ जाएगा। स्थाली के एक चावल के देखने से पता चल जाता है कि भात ठीक बना है या नहीं। इसी तरह हम भी यहां नमूने के तौर पर कुछ लिखते हैं :-

हमारी यह दृढ़धारणा है कि सांख्य दर्शन के लेखक श्री कपिल जी महाराज महामुनि थे। प्रमाण के लिये आप श्रीमद्भगवत् गीता के १० वें अध्याय का १५ वां श्लोक पढ़िये:-

"गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः"

अर्थात् भगवान् कृष्ण अर्जुन से कहते हैं. हे अर्जुन! गायकों में

* ऋषि वेद मन्त्र के दृष्टा कहिये प्रचारक हुये॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चित्ररथ और ज्ञानसिद्धों में मैं कपिल मुनि हूं। अब पाठक स्वय सोचें- कपिल जी को मुनि सिद्ध करने के लिये इस से बढ़ कर और कौन सा दृढ़ प्रमाण पेश किया जा सकता है भगवान् कृष्ण स्वयं अपने मुखारविन्द से कहते हैं कि श्री कपिल जी महाराज मुनि थे। है भी ठीक- कपिल मुनि उदासीन जी का तप विश्वविख्यात है। योग दर्शन के रचयिता श्री पतञ्जलि जी महाराज हैं। पाणिनि मुनि लिखित अष्टाध्यायी पर आपने ही महाभाष्य लिखा है। व्याकरण शास्त्र में महाभाष्य एक सर्वोपरि ग्रन्थ है। यद्यपि पतञ्जलि को मुनि सिद्ध करने के लिये व्याकरण के प्रकरण में हम पीछे बहुत कुछ लिख आए हैं। फिर भी यहां हम एक दो प्रमाण और पेश करते हैं जिस से पाठकों के सन्देह कतई दूर हो जाऐंगे।

पतञ्जलि जी ने योगदर्शन के सूत्र लिखे हैं:- उस पर विद्वत्प्रकाण्ड भोजदेव जी ने एक वृत्ति लिखी है। वहां पर आप एक जगह लिखते हैं:-

"पतञ्जलिमुनेरुक्तिः काप्यपूर्वा जयत्यसौ।"

अर्थात् पतञ्जलि महाराज जी के वचन सर्वोत्कर्षता से शोभित हो रहे हैं। देखिये विद्वद्वर भोजदेव जी ने पतञ्जलि जी को साफ शब्दो म मुनि लिखा है।

और देखिये, एक श्लोक में किसी कवि ने पतञ्जलि जी को मुनि लिखा है:-

"योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य तु वैद्यकेनायोऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥"

अर्थात् मैं पतञ्जलि मुनि जी को साञ्जलि प्रणाम करता हूं। देखिये उक्त श्लोक में पतञ्जलि जी को स्फुट शब्दों में मुनि लिखा है। अतः यह निश्चित है कि पतंजलि जी मुनि थे। यदि कहीं पर इन्हें ऋषि शब्द से लिख भी दिया गया है तो वहां ऋषि शब्द का अभिप्राय ऋत्वक् से है यह मुनि लोग यज्ञ भी कराते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न्याय शास्त्र

न्यायदर्शन के लेखक महामुनि गौतम जी महाराज उदासीन हैं। यह शास्त्र भी वेदार्थज्ञान में सहायक है। यह शास्त्र तर्कप्रधान है। इस में तर्क से अधिक काम लिया जाता है। गौतम मुनि का विश्वास है कि "प्रमाण प्रमेयादि" सोलह पदार्थों के तत्त्वज्ञान से मनुष्य मुक्त हो जाता है।

गौतम मुनि के सूत्रों को सर्व साधारण नहीं समझ सकता। अतः दयालु वात्स्यायन मुनि जी ने न्यायसूत्रों पर "वात्स्यायन" भाष्य लिख दिया है।

गौतम जी महामुनि थे। उक्तधारणा की पुष्टि निम्नलिखित प्रमाण से हो जाती है। संस्कृत साहित्य में वाचस्पति मिश्र का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इन्हों ने दार्शनिक ग्रन्थों पर अच्छे अच्छे विवेचनापूर्ण पुस्तक लिखे हैं। आपकी धारणा भी यही है कि गौतम जी मुनि थे। आप एक जगह लिखते हैं:-

"यदक्षपादः प्रवरो मुनीनाम्"

(न्यायवार्तिक - वाचस्पतिमिश्र)

अर्थात् मुनियों में श्रेष्ठ अक्षपाद जी अर्थात् गौतम जी महाराज मुनिश्रेष्ठ हुये थे। इसके इलावा उक्त विषय की पुष्टि के लिये एक और प्रमाण कोश का दिया जाता है:—

वाचस्पत्याभिधान कोष आजकल संस्कृत भाषा का एक माना हुआ कोश है। इस में- अक्षपाद- शब्द का अर्थ लिखा है:- "अक्षपादः- न्यायसूत्रकारके गौतमे मुनौ।"

अतः उक्त प्रमाणों से यह निस्सन्देह ठीक है कि न्यायसूत्रों के रचयिता श्री गौतम जी महाराज मुनि थे, देखो नारदीय पुराण पू० अ० ६।

वैशेषिक दर्शन

वैशेषिक दर्शन के मूल लेखक महामुनि कणाद जी हुये हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इनके विषय में लोगों के अनेक मतभेद हो सकते हैं, क्यों कि कणाद के विषय की ऐतिहासिक सामग्री बहुत कम उपलब्ध हुई है। हम पीछे लिख आए हैं कि हमारे ऋषि मुनियों का इतिहास अभी भूत की तह के नीचे दबा हुआ है। संक्षेपतः हम इतना ही कह देना चाहते हैं कि कणाद जी महामुनि थे। अनाज के कणे (दाने) चुन २ कर (सीलाकर) खाते थे पदार्थों का चिन्तन करते थे इस कर कणादि मुनि नाम हुआ। प्रारम्भ से भी यही नाम था।

मीमांसा दर्शन

पूर्व मीमांसा दर्शन के रचयिता महामुनि जैमिनि जी हुए हैं। इन का दर्शन (उपकार) अधिक वेदों से सम्बन्ध रखता है। ये ऋषि थे या मुनि- इस विषय में यहां कुछ सप्रमाण लिखा जाता है। अपनी अपनी सम्मत्यनुसार लोगों ने इनके लिये ऋषि और मुनि- इन दोनों शब्दों का प्रयोग किया है। परन्तु हमारी सम्मति तो यह है कि ये महामुनि थ और इनके लिये ऋषि शब्द का प्रयोग उचित नहीं है।

उक्त सिद्धान्त की सिद्धि के लिये हम यहां कुछ प्रमाण उद्धृत करते हैं:- विद्वद्वर रुद्रटभट्ट एक आदर्श विद्वान् हो चुके हैं:- इनका समय विक्रम की ८ वीं शताब्दी है। इन्हों ने भी जैमिनि जी को मुनि लिखा है।

"मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम्"

(पञ्चतन्त्र) (रुद्रटभट्ट)

अर्थात् रुद्रट जी के मतानुसार मीमांसा शास्त्र के रचयिता श्री जैमिनि मुनि जी का अन्त एक हाथी के द्वारा हुआ था। अस्तु- कहने का भाव यह है कि रुद्रटाचार्य जी जैमिनि जी को ऋषि नहीं लिखते बल्कि मुनि लिखते हैं।

और देखिये महाकवि श्रीहर्ष जी विक्रम की १० वीं शताब्दी में हुए हैं:- इन्हों ने नैषधचरित एक अद्भुत काव्यग्रन्थ लिखा है। संस्कृत के महाकवियों में आप का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है। आप के ग्रन्थों में आपकी दार्शनिक योग्यता स्पष्टतया झलकती है। नैषधचरित

Sri Pratap Singh Library Srinagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के पञ्चम सर्ग में आप ने जैमिनि जी को मुनि लिखा है:--

" तस्य जैमिनिमुनित्वमुदीये "

(नैषध सर्ग ५)

अतः जैमिनि जी के मुनित्व में सन्देह नहीं होना चाहिये।

वेदान्त दर्शन

यह दर्शन महामुनि व्यासदेव जी ने लिखा है। इस पर अनेकों भाष्य, टीकाएं और वृत्तियां लिखी जा चुकी हैं। महामुनि व्यासदेव जी ने संस्कृत साहित्य पर महान् उपकार किया है। इन्हों ने संस्कृत में ऐसे २ आदर्श ग्रन्थ लिखे हैं जिनकी तुलना के और ग्रन्थ मिलने असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हैं।

महात्मा व्यासदेव जी मुनि थे इस में एक और दृढतर प्रमाण है जिसे हम यहां उद्धृत करते हैं:-

" वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः।

(गीता अ० १० श्लो. ३६)

भगवान् अर्जुन से कहते हैं- हे अर्जुन मुनियों में श्रेष्ठ मुनि व्यासदेव मेरा ही रूप है।

अब पाठक समझ गये होंगे कि व्यास जी के सम्बन्ध में

नोट- उदासीन परिव्राजक दो प्रकार के होते हैं। एक श्रौत दूसरा स्मार्त।

(क) नव योगेश्वर मुनि थेः कवि, (शुक्राचार्य) (२) हरिनारायण, (३) अन्तरिक्ष, (४) प्रबुद्ध, (५) पिप्पलायन, (६) आविर्होत्र, (७) द्रुमिल (द्रुमिल) (८) चमस (९) करभाजन। (परशुराम सूत्र पृष्ठ २४)

(ख) मरीचि[1], अत्रि[2], अंगिरा[3], पुलस्त्य[4], पुलह[5], क्रतु[6], प्रचेता[7], वशिष्ठ[8],भृगु[9], और नारदा[10] दिए सब महामुनि हुये हैं (परशुराम सूत्र पृष्ठ २४)

(ग) " सिद्धानां कपिलोनि " के शिष्य (चेले) ऋषभदेव हुये। यह ऋषभदेव दूसरा है जिसके भरत शकुंतला वाला पुत्र हुआ था (परशुराम सूत्र पृष्ठ ८).

(घ) अगस्त का शिष्य (चेला) याज्ञवलक्य हुआ जिसका सम्बाद वशिष्ठ जी ने श्री राम जी प्रति कहा है।

(ङ) श्री राम जी के गुरु विश्वामित्र मुनि हुये थे। और श्री कृष्ण जी के गुरु दुर्वासा मुनि हुये थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारी जो धारणा है; वह समूल एवं सप्रमाण है। यहां पर षड् दर्शनों के सम्बन्ध में पर्य्याप्त प्रकाश डालने के अनन्तर अब हम स्मृतिकारों के विषय में कुछ लिखने वाले हैं।

धर्म शास्त्र

सूत्र ग्रन्थों में सब से प्राचीन आपस्तम्बीय धर्म सूत्र है जो कि कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा से सम्बन्धित है। इस के कर्ता आपस्तम्ब मुनि थे। हिरण्य केशी मुनि की रचना हिरण्य केशी धर्म सूत्र हैं जो आपस्तम्ब से थोरा सा ही भेद रखता है इन दोनों से कुछ ही अर्वाचीन बोधायन मुनि विरचित बौधायन धर्मसूत्र है। यह मुनि भी कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा के हैं। सामवेद की शाखा का गौतम मुनि कृत गौतम धर्म सूत्र है। ऋग्वेद की उत्तर भारतीय शाखा का अनुयायी वसिष्ठ मुनि कृत वसिष्ठ धर्म सूत्र है। सब से वृहत् और अत्यन्त प्राचीन धर्म सूत्र यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा का है जो हारीत मुनि ने बनाया है। आपस्तम्ब मुनि और बोधायन मुनि दोनों ने हारीत मुनि का उल्लेख किया है।

स्मृति ग्रन्थों के मूलाधार ये ही सूत्र ग्रन्थ हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति और गरुड़ महा पुराण में २० स्मृतिकारों का नामोल्लेख किया हुआ है। महाभारत के अश्वमेघ पर्व में २३ स्मृतिकार दिये हुए हैं। पैठीनसी के अनुसार यह संख्या ३२ तक पहुंचती है। वीर मित्रोदय के आचाराध्याय में ५७ स्मृतिकारों के नाम दिये हुए हैं। विज्ञानेश्वर ने मित्राक्षरा में जिन २ स्मृतिकारों का उल्लेख किया है उनके यदि नाम संग्रह किये जाँय तो संख्या एक सौ से भी अधिक हो जायगी उन में जो भी प्रधान स्मृतिकार हैं वे सब मुनि ही हैं जो न भी हैं उन्हों ने अपना आधार मुनिकृतग्रन्थों को ही रखा है उदाहरणार्थ कुछ स्मृतिकार मुनियों के नाम दिये जाते हैं। यथा मनु, याज्ञवल्क्य, नारद, वृहस्पति, आश्वलायन, पाराशर, हारीत, औशनस, अत्रि, अंगिराः, आपस्तम्ब, संवर्तः, कात्यायन, शंख, लिखित, शातातप, दक्ष इत्यादि प्रमाणार्थ हम याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रथम अध्याय के दो श्लोक उद्धृत करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः ।
यमापस्तम्बसंवर्त्ताः कात्ययन बृहस्पती ॥४॥
पराशरव्यासशंखलिखिता दक्षगौतमौ ।
शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रवर्त्तकाः ॥५॥

इनके मुनि होने में प्रमाण हमें भीष्मस्तवराज के ६ से १४ श्लोक तक मिलता है। प्रमाणार्थ वे श्लोक आनुपूर्वी उद्धृत किये जाते हैं।

व्यासेनवेदविदुषा नारदेनसुरर्षिणा ।
देवरातेनवात्स्येन तथातेनसुमंतुना ॥६॥
तथाजैमिनिनाचैव पैलेनचमहात्मना ।
शांडिल्यदेवलाभ्यांच मैत्रेयेणचधीमता ॥७॥
असितेन वसिष्ठेन कौशिकेन महात्मना ।
हारीतरोमशाभ्यां च तथा त्रेयेण धीमता ॥८॥
बृहस्पतिश्च शुक्रश्च च्यवनश्च महामुनिः ।
सनत्कुमार कपिलौ वाल्मीकिस्तुंबुरुः कुरुः ॥९॥
मौद्गल्यो भार्गवो रामस्तृणबिन्दुर्महामुनिः ।
पिप्पलादश्च वायुश्च संवर्त्तः पुलहः कचः ॥१०॥
कश्यपश्च पुलस्त्यश्च क्रतुर्दक्षः पराशरः ।
मरीचिरंगिराः कण्वो गौतमो गालवो मुनिः ॥११॥
धौम्यो विभाण्डो माण्डव्यो धौम्रः कृष्णोऽनुभौतिकः ।
उलूकः परमो विप्रो मार्कण्डयो महामुनिः ॥१२॥
भास्करः पूरणः कृष्णः सूतः परमधार्मिकः ।
रैभ्येन याज्ञवल्क्येन शंखेन लिखितेन च ॥१३॥
एतैश्चान्यैर्मुनिगणैर्महाभागैर्महात्माभिः ।
श्रद्धादमपुरस्कारैर्वृत्तश्चन्द्र इव ग्रहैः ॥१४॥

श्लोकों में मुनियों के नाम तथा कहीं २ महामुनि पद से स्पष्ट निर्देश किया हुआ है। अर्थ सरल होने से व्याख्या की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। १४ श्लोक में इन सब को दृढ़ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूर्वक मुनि दर्शाने को "एतैश्चान्यैर्मुनिगणैः" पद रख सब को मुनि कोटि में सम्मिलित किया गया है।

स्मृति ग्रन्थों के भाष्यकारों तथा टीकाकारों में कुल्लूक, मेधातिथि, विज्ञानेश्वर, असहाय, विश्वरूप, धारेश्वराचार्य मुख्य हैं। इन के जीवन की गवेषणा करने पर पता चलता है कि ये सब के सब चतुर्थाश्रमावलम्बी मुनि महात्मा ही थे। विज्ञानेश्वर योगी जिन्हों ने याज्ञवल्क्य स्मृति पर मिताक्षरा टीका लिखी है वह परमहंस थे और उत्तम देव उनके गुरु जी का नाम था।

कोलब्रोक (Cole brooke) साहिब ने मिताक्षरा के दायभाग का सन् १७८५ में जब पहले अंग्रेज़ अपना राज्य स्थापन करना चाहते थे तब हिन्दु प्रजा का न्याय उनके धार्मिक मन्तव्यों के अनुसार करने के लिये अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। अब भी हिन्दु ला Law में मिताक्षरा को सब से अधिक प्रमाणीक माना जाता है।

निबन्ध ग्रन्थों में हेमाद्री का चतुर्वर्ग चिन्तामणि और जीमूतवाहन का धर्मरत्न प्रसिद्ध हैं। ये दोनों विद्वान् चतुर्थाश्रमी मुनि थे।

अर्थ शास्त्र और नीति शास्त्र

अब तक दो ही अर्थ शास्त्र उपलब्ध हुए हैं एक चाणक्य कृत कौटल्य अर्थ शास्त्र और दूसरा वृहस्पति मुनि जी का अर्थ शास्त्र। वृहस्पति का मुनि होना निर्विवाद सिद्ध है। कौटिल्य के विषय में भी ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि कभी उसने विवाहित हो कर सन्तान उत्पन्न की हो अतः उसको चतुर्थाश्रमी ही मानना पड़ेगा।

कौटल्यार्थ शास्त्र के अध्ययन से पता चलता है कि इस अर्थ शास्त्र से पूर्व भी कई अर्थ शास्त्र प्रचलित थे जिन का मत समय २ पर कौटल्य ने कहीं सम्पादन किया है अथवा उनसे अपनी विप्रतिपत्ति दिखाई है। उन में बहुसंख्या मुनियों की है यथा- आचार्याः, पिशुन (नारद) वातव्याधि (उद्धव), मानवीया, बार्हस्पत्या इत्यादि।

नीति शास्त्रों में कामन्दक नीति शास्त्र, सोमदेव सूरी का नीति वाक्यामृत, हेमचन्द्र का लघ्वर्हन्नीति शास्त्र और भर्तृहरि का नीति शतक बहुत ही प्रसिद्ध तथा प्रचलित हैं। वे सब के सब मुनि ही थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इनके अतिरिक्त चाणक्य नीति, विदुर नीति, शुक्र नीति इत्यादि जो नीति शास्त्र हैं वे भी उपरोक्त मुनिकृत ग्रन्थों की सहायता लेकर निर्माण किये गये हैं।

काम शास्त्र

इस शास्त्र का सब से प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ वात्स्यायन मुनि कृत काम सूत्र हैं। काम शास्त्र के विषय में लोगों के मन में विपरीत भाव बैठे हुए हैं। किन्तु इनका निर्माण गृहस्थाश्रम को सुखमय बनाने के लिये हुआ है धर्म और अर्थ के पीछे तीसरा पदार्थ काम है। उसी तीसरे पदार्थ काम का प्रतिपादन इस ग्रन्थ में कर वात्स्यायन मुनि ने संसार पर महान् उपकार किया है।

वैदिक शास्त्र

वैदिक शास्त्र के अनुशीलन से पता चलता है कि इस क्षेत्र में भी मुनि लोग कोई कम महत्त्व नहीं रखते हैं। इस शास्त्र का मूल बीज अथर्व वेद में पाया जाता है जिसके द्रष्टा अथर्वण और अंगिरा मुनि थे।

कौशिक मुनि के कौशिक सूत्रों में मनुष्यों की चिकित्सा के अतिरिक्त वृक्षों और पौधों की चिकित्सा का भी वर्णन है

१८९० क्रस्टाब्द में चीन के तुर्कस्तान में बौधों के स्तूपों से तीन हस्तलिखित पुस्तकें वैदिक विषय पर मिली हैं जिन में एक का नाम "नव नीतिका" है। एक पुस्तक में यह वर्णन मिलता है कि एक सौ वर्ष पूर्ण आयु कैसे भोगी जाय। निःसन्देह यह तीनों प्राचीन ग्रन्थ मुनि लोगों के ही लिखे हुए हैं।

चरक संहिता चरक मुनि की लिखी हुई है उस में यह बात स्पष्टतया जनाई हुई है कि चरक संहिता अग्निवेश मुनि की कृति की प्रतिछाया है। चरक मुनि कनिष्क महाराजा के राजवैद्य थे। इसपर टीका भी एक मुनि चक्रपाणिदत्त ने की है।

तथा आयुर्वेद की उत्पत्ति दिखाते हुए चरक मुनि पहले अध्याय के २२, २३, २४ श्लोक में दिखाते हैं कि यह शास्त्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरद्वाज मुनि ने ब्रह्मा जी से प्राप्त किया। मूल श्लोक टीका सहित नीचे दिखाये जाते हैं।

हेतुलिंगौषधज्ञानं स्वस्थातुरपरायणम्।
त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यं बुबुधेयं पितामहः। २२॥
सोऽनन्तपारं त्रिस्कन्धमायुर्वेदं महामतिः।
यथावदचिरात्सर्वं बुबुधे तन्मनामुनिः ॥२३॥
तेनायुरमितं लेभे भरद्वाजः सुखान्वितः।

जिस शास्त्र में हेतु अर्थात् रोग के उत्पन्न करने वाला कारण और रोगबोधक चिह्न तथा औषधज्ञान होने का भली प्रकार वर्णन है। और आरोग्य तथा रोगियों को परम उपयोगी है। जिस में वात, पित, कफ यह तीन प्रधान सूत्र हैं ऐसे इस सनातन पवित्र आयुर्वेद शास्त्र को पहले पितामह ने जाना तत्पश्चात् इस अनन्तपार आयुर्वेद को "जिस में निघण्टु, निदान, चिकित्सा अथवा वात, पित, कफ, यह तीन स्कन्ध अर्थात् कन्धे हैं" महामति मुनि भरद्वाज जी उदासीन ने चित्त लगाकर थोड़े ही काल में संपूर्ण रूप से जान लिया।

सुश्रुत संहिता के कर्ता सुश्रुत मुनि विश्वामित्र उदासीन मुनि के गृहस्थ काल के पुत्र थे। सुश्रुत मुनि को उदासीन भेष की दीक्षा मुनि विश्वामित्र जी उदासीनाचार्य्य ने ही दी थी। तथा चिकित्सा शास्त्र की दीक्षा सुश्रुत मुनि उदासीन ने काशी के राजादिवोदास से प्राप्त की थी। राजा दिवोदास का उपनाम धन्वन्तर था। सुश्रुत मुनि का विश्वामित्र मुनि के पुत्र होने का प्रमाण देखिये महाभारत अनु० ४२ अ०

श्यामानोऽथ गर्गश्च जाबालिसुश्रुतस्तथा।
विश्वामित्रात्मजाः सर्वे मुनयो ब्रह्मवादिनः॥

सुश्रुत मुनि की सुश्रुत संहिता पर भी प्राचीन टीका भानुमती चक्रपाणिदत्त की ही है।

अष्टाङ्ग संग्रह और अष्टाङ्ग हृदयसंहिता के कर्ता वाग्भट्ट मुनि थे। अष्टांग हृदय में भी मुनि वाग्भट्ट जी यह बात स्पष्ट दिखाते हैं कि वैदिक शास्त्र दिव्य लोक से पहले मुनियों को ही मिला जिन्हों ने संसार में इसका प्रचार किया है। वे श्लोक नीचे उद्धृत किये जाते हैं। अध्याय १ आयुर्वेदोत्पत्तिक्रम में तीसरा श्लोकः—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्मा स्मृत्वायुषो वेदं प्रजापतिमजीग्रहत्।
सोऽश्विनौ तौ सहस्राक्षं सोऽत्रिपुत्रादिकान्मुनीन्॥
तेऽग्निवेशादिकांस्ते तु पृथक् तन्त्राणि तेनिरे॥

इसकी टीका पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र इस प्रकार करते हैं:-

"प्रथम ब्रह्मा जी ने आयुर्वेद का स्मरण करके दक्ष प्रजापति को ग्रहण कराया, पीछे वह दक्ष प्रजापति जी ने अश्विनी कुमारों के लिये और दोनों अश्विनीकुमार इन्द्र के लिये और इन्द्र ने आत्रेय धन्वन्तरि निमि काश्यप आदि मुनियों के लिये आयुर्वेद को वर्णन किया।

पीछे आत्रेय आदि मुनियों ने अग्निवेश आदि मुनियों को उपदेश किया और उन अग्निवेश आदि छह ६ मुनियों ने पृथक् पृथक् अर्थात् परस्पर के ग्रन्थों से विलक्षण तन्त्र अर्थात् ग्रन्थों को रचा; इस प्रकार अग्निवेश १ भेड २ जातूकर्ण ३ पराशर ४ हारीत ५ क्षारप ६ इन छह मुनियों के नाम से छह ६ तन्त्र प्रसिद्ध हुए।"

उपरोक्त व्याख्या "श्री वेङ्कटेश्वर" प्रेस के संवत १९६४ में छपे हुए अष्टांग हृदय की भाषा टीका से अक्षरशः ली गई है। अपनी ओर से कुछ नहीं जोड़ा गया। इस व्याख्या के शोधन और पुनः संशोधन में पं० रविदत्त तथा पं० मुरलीधर जी शास्त्री के नाम भी टाईटल पेज (मुखपृष्ठ) पर दिये हुए हैं।

पंडित चक्र पाणिदत्त के दो अन्य स्वतन्त्र ग्रन्थ भी मिलते हैं जिनके नाम हैं चिकित्सासार संग्रह और सिद्धियोग।

माधवकर का रुग्विनिश्चय अथवा माधव निदान उपरोक्त मुनित्रय का आधार लेकर बना हुआ है।

सुरेश्वर मुनि (१०७५ क्रस्टाब्द) का शब्द प्रदीप जो निघण्टु के रूप में है वह भी वैदिक शास्त्र में अपना निजी स्थान रखता है।

नाट्य शास्त्र

इस में कोई भी विप्रतिपत्ति नहीं कि नाट्य शास्त्र के आदि आचार्य भरत मुनि जी थे। भास, कालिदास, शूद्रक, श्रीहर्ष, भवभूति, विशाखदत्त, राजशेखर आदि जितने भी संस्कृत साहित्य में नाटककारों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की कृतियें मिलती हैं उन सब के अन्त में भरत मुनि का वाक्य दिया जाता है। जिस नाटक पर भरत मुनि की छाप न लगी हो उसे पूर्ण नाटक नहीं माना जाता। इस नाट्य शास्त्र पर ही सब नाटक कारों, कवियों और साहित्य शास्त्रकारों का प्राचीन काल से अवलम्ब रहा है। अतः मुनि लोगों का इस क्षेत्र में प्रयास भी अत्यन्त सराहनीय है।

नाटककार और कवि

अश्वघोष जन्म का ब्राह्मण था किन्तु युवावस्था में विराग आने पर बुद्ध धर्मानुयायी मुनि हो गया और बौद्ध सिद्धान्तों के प्रचारार्थ उसने कई नाटक और काव्य लिखे जिन में से निम्न लिखित अभी तक उपलब्ध हुए हैं। शारीपुत्र प्रकरण, सूत्रालंकार, महायान, श्रद्धोत्पाद, वीरसूची, बुद्धचरित और सौन्दरानन्द।

कई विद्वान् अश्वघोश को कालिदास का पूर्वकालीन मानते हैं और ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं कि कालिदास और भवभूति ने कहीं २ अश्वघोष की कृत्तियों से भाव लिया है।

कालिदास जिसको साक्षात् सरस्वती का स्वरूप माना जाता है और जिसकी धाक यूरोप के विद्वान् भी मानते हैं। संसार भर के एक सौ श्रेष्ठ पुस्तकों में यूरोप के विद्वानों ने कालिदास के नाटक शकुन्तला को भी स्थान दिया है और उसे "भारत का Shakespeare शेकसपीअर" उपाधि देते हैं। इतिहास से पता चलता है कि विक्रमने कालिदास को दो चार ग्रामों का राजा बना दिया था। विक्रम के देहावसान के पश्चात् कालिदास विरक्त हो गया और भगवान् चन्द्र मुनि से दीक्षा लेकर उदासीनाश्रम में प्रविष्ट हुआ।

मुनियों के लिये शृंगार रस अत्यन्त हेय होने के कारण इस विषय में मुनियों की कृत्तियें बहु संख्या में यद्यपि नहीं मिलती तथापि उपरोक्त उदाहरणों से प्रतीत होगा कि इस विषय के धुरन्धर नायक भी मुनि ही हुए हैं बाकी पिछले इनके शिष्य कोटि में रखने के योग्य हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उदासीनाचार्य श्री १११०८ जगद्गुरु श्री चन्द्र भगवान हिन्दू धर्म रक्षक

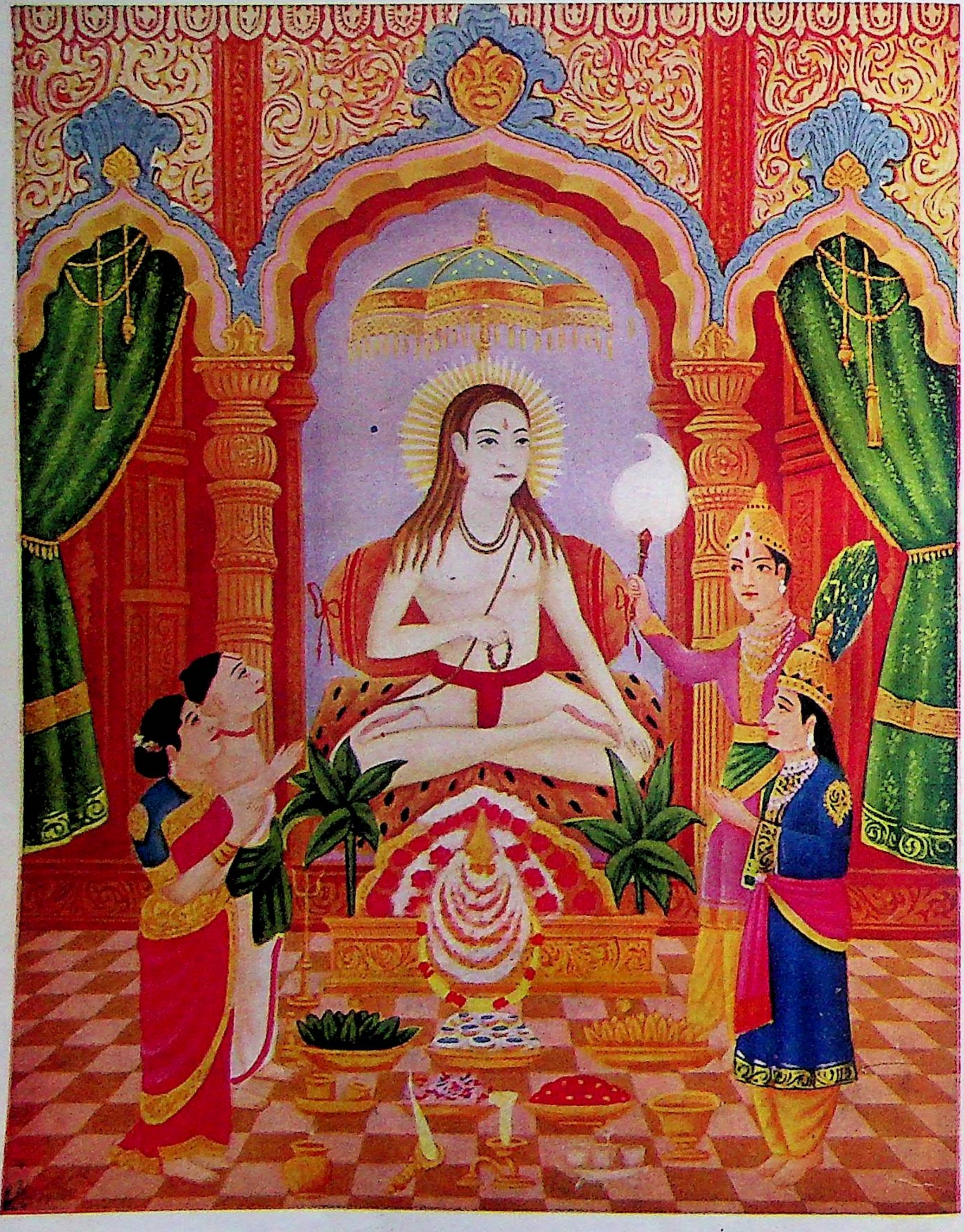

UDASIN ACHARYA SHRI 1108 JAGATGURU (WORLD-TEACHER)
SHRICHANDRA BHAGWAN HINDU DHARAM RAKHSHAK

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विविध विषय

अन्य मुनि जिन्हों ने विविध विषयों में अपनी कृतियें छोड़गये हैं उन का दिग्दर्शन मात्र नामोल्लेख से ही किया जाता है संक्षेप वर्णन करने से भी ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा। उनके पवित्र नाम यह हैं यथा वाल्मीकि मुनि, बाभ्रव्य मुनि, दाल्भ्य मुनि, जय मुनि, सुपरत्न मुनि, सुनग मुनि, अभय मुनि, रोचिष्णु मुनि, महेश मुनि, हारीत मुनि, श्री शंकर स्वामी, श्री रामानुज, श्री रामानन्द, श्री अविनाशी मुनि, तथा सब से प्रसिद्ध और जिनके नाम स्मरण से जन्म जन्मान्तर के पाप पुञ्ज भस्मी भूत हो जाते हैं वह हैं साक्षात् शंकर भगवान् के अवतार।

"भगवान् श्रीचन्द्र जी मुनि"

जिनके जीवन चरित्र कई विद्वानों ने लिखे हैं। तथा जिन्हों ने वेदों पर श्रीभाष्य करके इस जगत में अपनी अलौकिक आभा छोड़ रखी है और एक सौ इकतीस वर्ष की आयु तक जीवन धारकर विविध देशों में भ्रमण कर धर्म प्रचार के साथ २ हिन्दु जाति की रक्षा कर गये हैं जिनके उपकारों को आजतक हिन्दू जनता मानती चली आ रही है।

तुलसीदास और सूरदास

हिन्दी साहित्य के सूर्य और चन्द्रमा ये दोनों भक्तराज तथा महाकवि भी गृह परिवार का त्याग करने पर जब उन्हों ने विरक्तावस्था में प्रवेश किया तभी अपनी ऐसी चमत्कारी दिव्य रचनाएं कर सके। जब तक सूर्य चन्द्रमा रहेंगे तब तक इनकी कविता का मान संसार करता रहेगा।

गिरिधर की कुण्डलिया

आम तौर पर यह ख्याल बैठा है कि गिरिधर कोई भट्ट था किन्तु इस में सत्यता का लेश भी नहीं है, वे उदासीन साधू थे। प्रमाणार्थ देखिये गिरिधर की कुण्डलिया खेमराज श्री कृष्णदास की "श्री वेंकटेश्वर" प्रेस में संवत् १९७१ की छपी हुई प्रति की प्रस्तावना जिसके लेखक स्वयं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उदासीनाचार्य श्री ११०८ जगद्गुरु श्री चन्द्र भगवान हिन्दू धर्म रक्षक

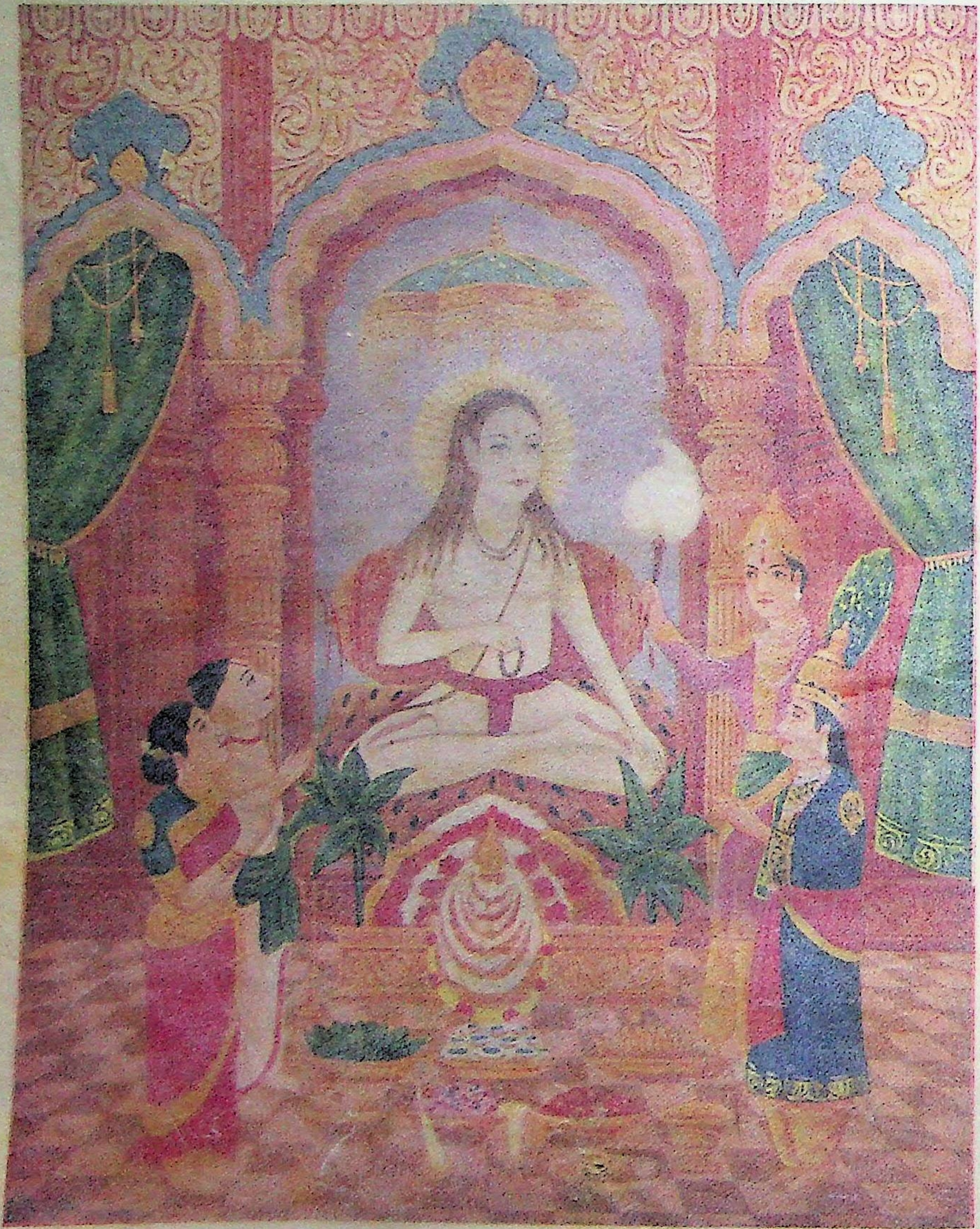

UDASIN ACHARYA SHRI 1108 JAGATGURU (WORLD-TEACHER)
SHRICHANDRA BHAGWAN HINDU DHARAM RAKHSHAK

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विविध विषय

अन्य मुनि जिन्हों ने विविध विषयों में अपनी कृत्तियें छोड़गये हैं उन का दिग्दर्शन मात्र नामोल्लेख से ही किया जाता है संक्षेप वर्णन करने से भी ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा। उनके पवित्र नाम यह हैं यथा वाल्मीकि मुनि, बाभ्रव्य मुनि, दालभ्य मुनि, जय मुनि, सुयरत्न मुनि, सुनय मुनि, अभय मुनि, रोचिष्णु मुनि, महेश मुनि, हारीत मुनि, श्री शंकर स्वामी, श्री रामानुज, श्री रामानन्द, श्री अविनाशी मुनि, तथा सब से प्रसिद्ध और जिनके नाम स्मरण से जन्म जन्मान्तर के पाप पुञ्ज भस्मी भूत हो जाते हैं वह हैं साक्षात् शंकर भगवान् के अवतार।

"भगवान् श्रीचन्द्र जी मुनि"

जिनके जीवन चरित्र कई विद्वानों ने लिखे हैं। तथा जिन्हों ने वेदों पर श्रीभाष्य करके इस जगत में अपनी अलौकिक आभा छोड़ रखी है और एक सौ इक्तीस वर्ष की आयु तक जीवन धारकर विविध देशों में भ्रमण कर धर्म प्रचार के साथ २ हिन्दु जाति की रक्षा कर गये हैं जिनके उपकारों को आजतक हिन्दू जनता मानती चली आ रही है।

्लसीदास और सूरदा

हिन्दी साहित्य के सूर्य और चन्द्रमा ये दोनों भक्तराज तथा महा क वे भी गृह परिवार का त्याग करने पर जब उन्हों ने विरक्तावस्था में प्रवेश किया तभी अपनी ऐसी चमत्कारी दिव्य रचनाएं कर सके। जब तक सूर्य चन्द्रमा रहेंगे तब तक इनकी कविता का मान संसार करता रहेगा।

गिरिधर की कुण्डलिया

आम तौर पर यह ख्याल बैठा है कि गिरिधर कोई भट्ट था किन्तु इस में सत्यता का लेश भी नहीं है, वे उदासीन साधू थे। प्रमाणार्थ देखिये गिरिधर की कुण्डलिया खेमराज श्री कृष्णदास की "श्री वेंकटेश्वर" प्रेस में संबत् १९७१ की छपी हुई प्रति की प्रस्तावना जिसके लेखक स्वयं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सेठ खेमराज श्री कृष्णदास जी हैं। वे लिखते हैं-

"इस गत १८ शताब्दी में होने वाला (गिरिधर) उपनामक हरिदास संज्ञक उदासीन साधु हुआ है वैसा समयानुरूप सर्वमान्य उचित वक्ता शीघ्र होना कठिन है।"

कई अर्वाचीन चतुर्थाश्रमी उदासीन मुनि महात्माओं ने भी कई ग्रन्थों का निर्माण कर जगत् पर महोपकार किया है। ग्रन्थ विस्तार भय से उनका केवल दिग्दर्शन मात्र कराया जाता है।

श्री स्वामी पं० बालराम जी उदासीन- आप मायापुर में गुरु मण्डलाश्रम के संस्थापक थे। आपके साथ कई साधु मण्डली में रहते थे। आपने भारत भर का भ्रमण कर अनेक प्रान्तों में विद्या का प्रचार किया। कई ग्रन्थों की रचना की। सब से प्रसिद्ध और उपादेय है महामुनि पतञ्जलि के योगदर्शन के कठिन स्थलों पर टिप्पणी तथा उसका भाषानुवाद, आप के इस प्रयास से यह दुरूह ग्रन्थ पठन पाठन में अत्यन्त सरल हो गया है। श्रौतसर्वस्व भी आप की ही रचना है।

श्री स्वामी पण्डित केशवानन्द जी उदासीन- आप का मुनि मण्डल नाम का आश्रम कनखल में प्रसिद्ध है जहां कई एक विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं। आपने निराकार मीमांसादर्शन अद्भुत गीता, अनुभवानन्द लहरी, विज्ञान नाटक, आत्म रामायण पिण्ड ब्रह्माण्डोपनिषत् आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की।

श्री स्वामी पण्डित अमरदास जी उदासीन- आपने एकादशोपनिषद पर संस्कृत में अत्यन्त ही सरल व्याख्या की है।

श्री स्वामी पण्डित कमलदास जी उदासीन ने नीचे लिखे तीन ग्रन्थों पर टीका की है।

मोक्षपंथ, विवेकचूड़ामणि, जीवनमुक्ति विवेक (अप्रकाशित)

श्री स्वामी पण्डित कार्ष्णि गोपालदास जी उदासीन- आप असंग्रही महात्मा थे। कार्ष्णि कलाप के संस्थापक होकर कई भक्ति विषयक ग्रन्थों का संस्कृत तथा हिन्दी में निर्माण किया। उन में से मुख्य ग्रन्थों के नाम यह हैं:—

भक्ति प्रकाश, गोपाल विलास, कार्ष्णि कवच, कर्ष्णि कण्ठाभरण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कार्ष्णि किरीटम्, कृष्ण क्रीडाकासार, सुसाधुता सुधा सिन्धु, निराकार मीमांसा इत्यादि -

श्री स्वामी पण्डित आत्म स्वरूप जी उदासीन आप श्री स्वामी पण्डित बालराम जी उदासीन के अनुयायी थे। आप ने योगसूत्रों के भाषानुवाद पर टिप्पणी को परिष्कृत कर पुनर्मुद्रण करवाया। तथा श्रौतसर्वस्व को उद्भासित किया।

श्रीमान् बावा गुरुप्रसाद जी उदासीन श्री साधुबेला तीर्थ में आप ने सूक्तावली के साथ सारुक्तावली का सम्पादन किया तथा प्रबोध चन्द्रोदय नाटक का गुरुमुखी से हिन्दी में पहले २ उल्था किया।

श्री स्वामी पण्डित गंगेश्वरानन्द जी उदासीन- आप ने भी अनेक ग्रन्थ निर्माण किये हैं जिन में सब से उपादेय तथा गवेषणात्मक और ऐतिहासिक घटनाओं पर अवलम्बित है "श्रौतमुनिचरितामृत"।

श्री साधु पण्डित मोहनलाल जी उदासीन ने खण्डन खण्ड खाद्यम् पर उपवृत्ति लिखी है।

श्री स्वामी आत्म स्वरूप जी उदासीन (वृद्ध) श्री गङ्गाराम स्वामी के चेले ने पञ्चदशी पर भाषा टीका की है।

श्री पण्डित ध्यान स्वरूप जी उदासीन ने "उदासीन" नामक ग्रन्थ लिखा है। अन्य ग्रन्थ भी निर्माण कर रहे हैं।

श्री स्वामी परमानन्द जी उदासीन पिशावर वाले ने निम्न लिखित ग्रन्थों की रचना की है:—

जपुजी साहिब पर टीका- सुखमनी साहिब पर टीका- मात्रा साहिब पर टीका- ज्ञान वैराग्य प्रकाश- वैराग्य शतक- दृष्टान्त प्रदीपनी- गुणों की पिटारी तर्क संग्रह पर टीका- इत्यादि २८ पुस्तकें बनी हुई हैं।

श्री स्वामी पण्डित हरिनामदास जी उदासीन- जो इस समय श्री साधुबेला तीर्थ के गद्दीधर (महन्त) हैं। यह श्री साधुबेला आश्रम जिसको श्रीमान् पूज्यपाद प्रातः स्मर्णीय श्री १०८ सद्गुरू बनखण्डी जी महाराज उदासीन नें वि०सं० १८८० वैशाख वदी २ को सक्खर शहर श्री सिन्धु गंगा के अगाध जल के मध्य में स्थापन किया है जो स्थान इस समय अखिल भारतवर्ष में अपनी शोभा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपही रखता है जिसकी उपमा को बड़े २ विद्वानों ने अपने मुक्त कंठ से गाया है। इस आश्रम में एक बृहत् पुस्तकालय और वाचनालय के अतिरिक्त एक पाठशाला भी है जहां कई एक विद्यार्थियों ने विविध विषयों पर अध्ययन किया है। अपने खर्च पर कई विद्यार्थियों को बाहर भी पढ़ने भेजते हैं। ग्रन्थ निर्माण कार्य भी कई वर्षों से लगातार चला ही आता है। सिन्ध प्रान्त में जहां यवनों की अधिकता है वहां संस्कृत और हिन्दी की रक्षा तथा प्रचार के लिये यह स्थान आधार स्तम्भ हैं। हमने कई ग्रन्थों की स्वतन्त्र रचना की है तथा समयाभाव से पथ प्रदर्शक होकर कई ग्रन्थों को औरों से निर्माण भी करवाया है। मुख्य ग्रन्थ हमारे रचित जो प्रकाशित हो चुके हैं वे नीचे दिये जाते हैं।

१- श्री सिन्धु सप्तनद गङ्गा महात्म्य- संस्कृत मूल पर हिन्दी, गुरुमुखी, सिन्धी, केनाड़ी अनुवाद.

२- श्री साधुबेला तीर्थ का इतिहास- हिन्दी, सिन्धी, अंग्रेजी उरदू चार आवृत्तियें.

३- गुरुसाखी सूर्योदय चरितामृत अर्थात् गुरु बनखण्डी योगसिद्धि हिन्दी, सिन्धी, और अंग्रेजी.

४- विचार माला तथा जीवन चरित्र स्वामी हरिप्रसाद जी महाराज (सम्पादन)

५- धन सतिगुरु.

६- सतिनाम महिमा.

७- गायत्री.

८- कृष्ण जी मुरली (सिन्धी)

९ Origin and growth of Udasis.

१०- प्राचीन मुनियों का पुरुषार्थ. जो यह पुस्तक आपके हस्त कमल में शोभा पा रही है.

श्री सुतीक्ष्ण मुनि जी उदासीन विरचित ग्रन्थ

१- जगद्गुरु का सत्योपदेश हिन्दी

२- हिन्दु धर्म रक्षा. गुरुमुखी

३- सतिगुरु दीन दयाल. गुरुमुखी (भाषा सिन्धी)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४- हिन्दुनि जो नित्य नियम. सिन्धी
५- गुरुमत का सच्चा प्रचार. (गुरमुखी)
६- जगद्गुरू की जीवनी. हिन्दी और सिन्धी
७- मुनि परशुराम सूत्र की टीका.
८. गुरु श्रीचन्द्र भजनावली दूसरा भाग हिन्दी.
९- भारत तीर्थ दिग्दर्शन
१०- भारत वर्ष का रत्न

श्रीमान् पंडित ब्रह्मानंद जी उदासीन वृति आपनें "गुरू उदासीन मत दर्पण" दो भाग गुरुमुखी अक्षर में इतिहासी पुस्तक बनाके उदासीन भेष का बड़ा कार्य कर दिखाया है। इसी प्रकार अन्य कई उदासीन विद्वान् महात्माओं ने लोकोपकारार्थ अनेक ग्रंथ की रचना की है हम उन सब पुरुषार्थी उदासीन मुनियों का हार्दिक धन्य बाद करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ॐ

श्रीपण्डितनारायणदासशास्त्रीकृतः

श्रीस्वामिहरिनामदासस्तवः

मूलं पुण्य- तरोर्विवेक- प्रभवं
पूर्णेन्दु- शुभ्राननम् ।
वैराग्याम्बुधि- निश्चयेन निरतं
सिंधोर्वरं भूषणम् ॥

व्याख्याने कलि- कल्मषादि- हननं
कान्तं कुलं कोमलम् ।
वन्दे श्री हरिनाम- दास- यतिनं
शास्त्रीय- ज्ञाने गुरुम् ॥ १ ॥

त्रैगुण्येन विवर्जितं मुनिवरं
प्रच्छन्नयोगं शुभम् ।
लोके हारि विशुद्ध- चारु- चरितं
शान्तं शिवं सुन्दरम् ॥

स्फटिकासीन- सुब्रह्मध्यान- सुगतं
साधुद्विजैश्चान्वितम् ।
वन्दे श्री हरिनाम- दास- यतिनं
पूज्यं गुरुं सद्गुरुम् ॥ २ ॥

अंशालम्बित- मुत्तरीय- सुभगं
शुभ्रोन्नत- भ्रूलतम् ।
आशा- वल्ली- विवर्धनं तपधनं
वेदान्त- पारं- गतम् ॥

गोब्राह्मण- प्रति- पालने च निरतं
वेदार्थ संवेदनम् ।
वन्दे श्री हरिनाम- दास- यतिनं
रम्यं शिवं सद्गुरुम् ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विद्यायोगतपोभिः शान्तमनसं
वेदान्त- वन्द्यं प्रभुम् ।
विद्वन्मण्डल- मण्डनञ्च सुभगं
ब्रह्मावतारं वरम् ॥
पारे ब्रह्मणि सर्वदैव रमणं
मोक्षस्य द्वारं प्रदम् ।
वन्दे श्री हरिनामदास यतिनं
वन्द्यं गुरुं सद्गुरुम् ॥ ४ ॥

दाने न्यक्कृत- दानवीर- करणं
मन्येऽपरं सुरतरुम् ।
औदासीन- कुलीन- मण्डल- गतं
प्रच्छन्न- योगेश्वरम् ॥
दीप्तार्कद्युति- सन्निभं गुरुवरं
श्री चन्द्रावतारं परम् ।
वन्दे श्री हरिनाम दास यतिनं
स्तुत्यं गुरुं सद्गुरुम् ॥ ५ ॥

सिद्धाधिष्ठित- राज्यपीठ- स्थितिकं
माराभि- रामं शुभम् ।
कन्दर्पादि- विमोह- जाल- विगतं
शान्तं परं तापसन् ॥
संख्याने गुण- प्रोक्तने च कपिलं
कान्तं नवं मोहनम् ।
वन्दे श्री हरिनाम दास यतिनं
गण्यं गुरुं सद्गुरुम् ॥ ६ ॥

व्याकरणाम्बुधि निश्चयेन- निरतं
मन्ये मुनिं पाणिनिम् ।
प्राप्तं यौगिक कौशलञ्च- सकलं
सत्यं शिवं सुन्दरम् ॥
मन्येऽहं नु पतञ्जलिं प्रभुवरं
साक्षात्- समुपस्थितम् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वन्दे श्री हरिनाम दास यतिनं
सत्यं गुरुं सद्गुरुम् ॥७॥

आशा- पाशविमोचनं भवहरं
मन्येऽपरं जैमिनि (नि) म्।
वेदान्तेऽपि च व्यास-मेव मतिदं
ज्ञाने परं पारगम्।
न्याये न्यायविधै विशेष-प्रवरं
साक्षात् कणादं मुनिम्।
वन्दे श्री हरिनाम- दास— यतिनं
सत्यं गुरुं सद्गुरुम् ॥८॥

हे नाथ हरी-नाम दास साधो!
त्वं रक्षसि जगज्जगदेक स्वामिन्!॥
त्वच्छरण- मस्मि गुरुवर! स्मरारे!
त्वदन्यो न मान्यो न रम्यो न वन्द्यः ॥९॥

हरि— प्रसन्ना हरिनामदासा
हरिप्रसादात् प्रफुल्ल- मानसाः।
तपः प्रभावेण विराजमानाः
साक्षान्मनोहारि मरीचि- सूर्यः ॥१०॥

विद्यातपोभ्यामथ धर्म शास्त्रै
र्वेदैः पुराणैरथ दर्शनैश्च।
दिशश्च सर्वा हि प्रकाशयन्तः
प्रविराज- मानाः श्री सिंधुदेशे ॥११॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ॐ

॥ गुरु उदासीन भेष अनादि प्रकरणम् ॥

❀ प्रश्नः- हमने ऐसा सुना है कि उदासीन भेष को श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीचन्द्र भगवान् ने चलाया है सो यह बात कहां तक सत्य है।

उत्तरः- उदासीन भेष को श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीचन्द्र भगवान से चलना जो आपने सुना है यह असंगत वार्ता है। यह बात तो इतिहासानभिज्ञ जनता कहा करती है। यह उनकी भारी भूल है कारण जब जगद्गुरु श्रीचन्द्र भगवान से प्रथम जगद्गुरु श्रीचन्द्र भगवान के गुरु अविनाशी राम जी उदासीन महात्मा तथा अन्य अनेक उदासीन मुनि महात्माओं के नाम तथा सम्प्रदाय (भेष) सम्बन्धी अनेक कथायें वेद, शास्त्र, स्मृति, पुराण, कोष, और इतिहासों में मिल रही हैं तब यह कैसे कहा जा सकता है कि उदासीन भेष को श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीचन्द्र भगवान ने चलाया है। उदासीन भेष सृष्टि प्रारम्भ काल से ही चला आता है अब इस प्रसंग की प्रौढ़ता और महिमा पर आपको कुछ प्रमाण आगे चलकर सुनाते हैं जिससे आपके तथा अन्य किसी के भी हृदय में यह निर्मूल भ्रम यदि बैठा होगा तो वह निवृत हो जायगा। जो लोग उदासीन भेष को श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीचन्द्र जी से चलना मानते हैं वह भूल करते हैं, उनके इस भूल के दो कारण हैं, एक तो उदासीन भेष के इतिहास का न पढ़ना दूसरा उदासीन महात्माओं की उपरामता से अपने पूर्वजों के कर्तव्यों का प्रचार न होना। इन दो विशेष कारणों के वजह से आज बहुत जनता इस विश्व व्यापी उदासीन भेष के विमल चरित्रों के जानने से वंचित रह गई है। पुराणों के अध्ययन से यह पता लग जाता है कि उदासीन धर्म का पूर्ण प्रचार द्वापर के अन्त तक रहा है। पीछे ज्यों २ विधर्मियों का पदार्पण

❀ एक समय हरीदास जी काठारा (जो हमारे ज्येष्ठ चेले थे) ने हम (स्वामी हरिनामदास) से यह प्रश्न किया था जिसका उत्तर हमने उनको जो दिया था वह सारा प्रसंग लोगों के समझाने वास्ते हम इस पुस्तक में ज्यों का त्यों लिख रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता गया उनके दुष्कर दुस्तर कर्तव्यों से नये २ धर्म का आविर्भाव होने लगा त्यों २ काल कर्मानुसार उदासीन भेष से भी लोग अपरिचित होते चले गये। अन्य धर्मी रूप बादलों ने उदासीन धर्म रूपी सूर्य को ढांप लिया जिससे हिन्दू जाति को बहुत क्षति पहुँची। उदासीन मुनियों के प्रचार मन्द हो जाने से हिन्दू जनता का आधार स्थंभ डगमगा गया। नावक के विना नाव जिस प्रकार इधर से उधर नदी के हिलोरे से टकराती हुई ठोकरें खाया करती है उसका कोई संभाल करने वाला नहीं होता। इसी प्रकार उदासीन मुनियों के प्रचार मंद पड़ने से हिन्दू जाति सब ओर ठोकरें खाने लगी इसकी संभाल दुस्तर हो गयी। जब संसार में उदासीन धर्म का प्रबल प्रचार सर्वत्र चल रहा था तब हिन्दू जनता सुख के हिंडोले में झूला करती थी कारण उदासीन मुनि यथार्थ वक्ता कर्मनिष्ठ धर्म परायण लोक हितकारी वेदानुकूल उपदेश दिया करते थे। चाहे उनके प्राण भी इस कार्य में चले जांय पर वह किञ्चित् परवाह न करते थे तभी उदासीन भेष का उज्ज्वल यश आज तक हिन्दू लोग गा रहे हैं। आज भी उदासीन भेष के तरफ से जनता के लाभार्थ सबसे बढ़ चढ़ कर जो प्रचार कार्य हो रहा है वह सबके सामने है जिसके बताने की हमें कोई आवश्यक्ता नहीं।

अब हम आपको उदासीन भेष की प्राचीनता पर कुछ प्रमाण मान्य ग्रंथों के सुनाते हैं।

सांख्य दर्शन का १६३ सूत्र है "औदासीन्यञ्चेति"

अर्थात् उदासीन सम्प्रदाय अनादि काल से प्रचलित है। इस में तर्क वितर्क करना उचित नहीं। उदासीन सम्प्रदाय की महिमा अपार है।

देखो इसी बात को निर्वाण उपनिषद् भी बताता है,

"परमहंसः सोहम् परिव्राजकाः एकान्तगुहायां मुक्तासन सुखगोष्ठी धैर्यकंथा उदासीनकौपीनम्, विचार दण्डः विष्णुविद्यादि-शताभिधानलक्ष्यम् अजप गायत्री अनाहद- मन्त्रः एतान्निर्वाणदर्शनं शिष्यं पुत्रं विना न देयमित्युपनिषदम्"।

भावार्थः- यह उदासीन परमहंस और निर्वाण दोनों तरह के होते हैं। इनकी उपासना सोहम् है। ये उदासी परिव्राजक भी कहलाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई वस्त्रधारी और कोई निर्वाण (जटा) बगैरवस्त्रधारी भी होते हैं। उदासीनों को कोपीन अवश्य धारण करनी चाहिए इनका विचार ❀ दण्ड है न काष्ट का, विष्णु का ध्येय करना अजपः (ओं) गायत्री अनाहद (सोऽहम्) मन्त्रः शिष्य और पुत्र के अतिरिक्त यह उदासीन लोग अपना मन्त्र किसी को नहीं देते, इत्यर्थः।

परिव्राजक चतुर्थाश्रमी उदासीन के लिये देखो महाभारत शान्तिपर्व मोक्षधर्मपर्व अ० १९२ क्या लिखता है।

'परिव्राजकानांपुनराचारःतद्यथाविमुच्याग्निधनकलत्र परिबर्हण सङ्गेष्वात्मानं स्नेहपाशानवधूय परिव्रजन्ति, समलोष्ठाश्म काञ्चनास्त्रिवर्गप्रवृत्तेष्वसक्तबुद्धयः। अरिमित्रोदासीनानांतुल्यदर्शनाः।

भावार्थः- परिव्राजक उदासीनों का आचार इस प्रकार होता है यह लोग अग्निहोत्र, धन, स्त्री और घर की सब सामग्री को त्याग सांसारिक सब विषयों के ऊपर से स्नेह की फाँसी को नष्ट कर देते हैं तब मिट्टी के ढेले को, पत्थर और सोने को, एक समान समझ धर्म- अर्थ और काम में आसक्त नहीं वैरी और मित्र को बराबर समझने लगते हैं।

और भी आगे लिखते है:-

अशेषमोहः समलोष्ठकाञ्चनः प्रहीणकोशो गतसंधिविग्रहः।
अपेतनिंदास्तुतिरप्रियाप्रियश्चरन्नुदासीनवदेषभिक्षुकः॥

(महाभारत शान्तिपर्व मोक्षधर्म अ. २४५, श्लोक ३६)

---

* उदासीनों का विचार दण्ड ही कहा गया है, इस बात को शास्त्र भी बताते हैं।

"वाग्दण्डः कर्म दण्डश्च मनोदण्डश्च ते त्रयः।
यस्यैते नियता दण्डाः स त्रिदण्डी महायतिः॥"१॥

(नारद परिव्राजकोपनिषद्)

यही बात मनुस्मृति अध्याय १२ श्लोक १०, तथा वृहत्पाराशरीय धर्म शास्त्र अ० १० वानप्रस्थादि धर्म श्लोक ३१-३२ में भी कही है। आगे और भी साफ खोलके लिखाहै।

"वाग्दण्डः कायदण्डश्च मनोदण्डश्च ये त्रयः।
यस्यैते नियता दण्डाः स त्रिदण्डी उदासिनः॥

(अनुभव सहानुभूति अ० २)

वाणी का दण्ड शरीर का दण्ड और मनका दण्ड यही तीन दण्ड हों जिसके पास वही त्रिदण्डी उदासीन है। इसी का नाम विचार दण्ड है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थः- भिक्षुक उदासीन महात्मा को रोष, मोह नहीं होता वह मट्टी के ढेले और स्वर्ण को एक समान समझ किसी प्रकार का कोष नहीं संचय करता, उसका कोई मित्र शत्रु न हो समान भाव से विचरता है।

नोट- ऐसा ही एक श्लोक पद्मपुराण सृष्टि खंड अध्याय १५ श्लो० ३९१ वाला भी है। आगे और भी कहा है-

उदासीनमिवाध्यक्षं द्रव्यज्ञानक्रियात्मनाम् ।
कूटस्थमिमिमात्मानं यो वेदाप्नोति शोभनम् ॥

(भागवत स्कन्ध ४ अ० २०, श्लो. ११)

भगवान् राजा पृथुके प्रति कह रहे हैं कि जो उदासीन साधु की न्याई द्रव्य, ज्ञान क्रिया आत्मा के भीतर स्थित परमात्मा को जानते हैं वे पुरुष निःसन्देह मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

उपरोक्त भगवान् के वचन से साफ स्पष्ट होता है कि उदासीन महात्मा द्रव्य ज्ञान क्रिया के भीतर परमात्मा के जानने वाले होते हैं तभी उदासीन साधू की तुलना (समानता) की उपमा देते हुये राजा पृथु को समझाया है। जिससे तुलना की जाय उसे दृष्टान्त कहते हैं उपमान और दृष्टान्त इन दोनों शब्दों का अर्थ एक है, दृष्टान्त वह हो सकता है जो नितान्त प्रसिद्ध हो, सर्व साधारण उससे परिचित हो।

लौकिकपरीक्षाणांयत्र बुद्धिसाम्यं स दृष्टान्तः

(न्याय दर्शन अ० १ आ० १ सूत्र २५)

साधारण जनता तथा विद्वानों की जिसमें सम्मति हो वह दृष्टान्त होता है। सार यह निकला कि जिस किसी की उपमा या तुलना जिसके द्वारा की जाती है उस वस्तु का प्रसिद्ध होना नितान्त आवश्यक है। प्रसिद्ध का नामान्तर ही रुढ़ि है। अतः प्रसिद्धार्थ ही रूढ़ार्थ माना जायगा। शास्त्रकारों का यह मत है कि उपमा स्थल में जिस शब्द के आगे इवादि शब्द लगाये जांय वह यौगिक नहीं होते, जिस शब्द में रूढ़ि और योग ये दो शब्दोक्तियाँ हों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी रूढ़ि शक्ति से योग का तिरस्कार हो जाता हैं "योगाद्रूढ़िर्बलीयसी" इस परिभाषा का भी यही अर्थ है यह बात युक्ति युक्त भी है। प्रसिद्धार्थ की उपस्थिति शीघ्र और योगार्थ की विलम्ब से होती है कारण योगार्थ में प्रकृति प्रत्यार्थ की आलोचना आवश्यक है।

अस्त्यस्वपरदृष्टी नाम मित्रोदास्त विद्विषम्।
उदासीनोऽरिवद्वर्ज आत्मवत्सुहृदुच्यते ॥५॥

(भातवत स्कन्ध १० अ० २४)

भगवान् श्री कृष्ण जी नन्द के प्रति कह रहे हैं कि उदासीन साधू अपना पराया कुछ नहीं समझते उनकी समदृष्टि है उनका मित्र और वैरी भी कोई नहीं होता। यह सारा संसार उस उदासीन महात्मा को आत्मा के समान अर्थात् साक्षात् ईश्वर के समान सुहृद याने शुद्ध हृदय वाला कहता है।

आगे भी भगवान् उद्धव के प्रति बताते हैं:—

तं दुर्जयं शत्रुमसह्यवेगमरुन्तुदं तन्न विजित्य केचित्।
कुर्वंत्यसद्विग्रहमत्र मर्त्यैर्मित्राण्युदासीनरिपून्विमूढाः ॥४९॥

इस संसार में मूर्ख लोग अहंकार को अपना भारी शत्रु नहीं समझते जो यही सबको पीड़ा देता है यह बड़ी कठिनाई से जीता जाता है इसका वेग (शक्ति) असह्य और मर्मभेदी है जो मनुष्यों से वृथा ही शत्रुता मित्रता कराता रहता है किन्तु उदासीन साधु ऐसा कदापि नहीं करते।

सुखदुःखप्रदो नान्यः पुरुषस्यात्मविभ्रमः।
मित्रोदासीनरिपवः संसारस्तमसः कृतः ॥ ६० ॥

(भागवत स्कन्ध ११ अ० २४)

अपने कर्म को छोड़ दूसरा कोई किसी को सुख या दुःख देने वाला नहीं है जो मनुष्य यह समझता है अमुक हमारा मित्र अमुक हमारा शत्रु है वह भ्रम में है यह संसार तमोगुण से बना है तमोगुण ही इसमें प्रधान है उदासीन महात्मा यह सब रहस्य जानता हुआ इससे अलग रहता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उदासीना वयं नूनं न स्त्र्यपत्यार्थकामुकाः।
आत्मलब्ध्याऽऽस्महे पूर्णा गेहयोर्ज्योतिरक्रियाः।
(भागवतदशमस्कंध उत्तरार्द्ध अ० ६० श्लो० २०)

माधवाचार्य की टीका में उदासीन (सम्प्रदाय) स्पष्ट लिखा है।

उदासीनो न जानाति गुणान्दोषांश्च कस्यचित।
तद्वक्रतः स्वयं ज्ञाते निर्णयो मे भविष्यति॥
(आत्मपुराण अ० ५ श्लोक ५५)

इसकी टीका संस्कृत में पं० रामकृष्णजी ने इस प्रकार की है जो सब से प्रथम की है।

"तर्हि उदासीनं पृच्छेत्याशंकां निर्णयासिद्ध्या वारयति उदासीन इति उदासीनस्याधिक्य व्याप्य गुणानां तदभावव्याप्य दोषाणां च ज्ञानाभावात्तन्मुखादाधिक्यनिर्णयासिद्धिरिति। अथत्वमेवोदासीनं प्रति गुणदोषौ श्रावयित्वाधिकं पृच्छेति चेत्ताह सिद्धसाधनमित्याह तद्वक्त इति तस्य उदासीनस्य वक्ता यो मे निर्णयो भविष्यति स स्वयं ज्ञात एव भविष्यति नत्वज्ञाते यैर्मतः श्रुतैर्गुणैरुदासीनेनाधिक्यं ज्ञेयं तैर्गुणैर्लिंगभूतैरहमेव कुतो न जानीयामिति भावः॥५५॥

ऐसे पवित्र उदासीन सम्प्रदाय के सिद्धान्त को श्री व्यास जी महाराज भागवत में दिखाते हैं॥

ज्ञानवैराग्ययुक्तेन भक्तियुक्तेन चात्मना।
परिपश्यत्युदासीनं प्रकृतिं च हतौजसम्॥
(श्रीमद्भागवतस्कंध ३ अ० २५ श्लो० १८)

टीका-ज्ञान और वैराग्य दोनों भक्तिसहित होवे जिसके ऐसी जिनकी है आत्मा और जिसके अंतःकर्ण में प्रकृति को ओजस कहिए तेज (राग द्वेष का) नष्ट हो गया है अर्थात् जगत मिथ्या जाना है ऐसे उदासीन महात्माओं को तू जान।

आगे देखो पद्मपुराण सृष्टि खंड अध्याय १५।

अशेषमोहो गतसन्धिविग्रहः स चेदुदासीनवदात्म-चिन्तया॥
यमेषु चैवान्वगतेषु न व्यथाः स्वशास्त्रशून्यो हृदिनात्मविभ्रमः॥३५४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उदासीनाः स्थिता ये तु उदासीना भवन्ति ते।
सायुधा ह्यनिस्त्रिंशा योध्दुकामव्यवास्थिता ॥१८॥
(पद्मपुराणसृष्टिखंड अ० १६)

हंसं शुचि पदं व्योम व्यापकं सर्वदं शिवम्।
उदासीनं निरायासं निष्प्रपंचं निरंजनम् ॥ १३ ॥
(स्कन्दपुराण प्रभासखंड, अ० २ प्रभासमाहात्म्य)

उदासीनवदासीनः संसारात्सारमीक्षते।
एक एव शिवो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः ॥ १८ ॥
(स्कंदपुराणप्रभासखंडवस्त्रापथक्षेत्रमाहात्म्य अध्याय ८)

शब्दकल्पद्रुम में उदासी शब्द का अर्थ साधु ही किया है इसी प्रकार हिन्दीकोष गुटका तथा हिन्दी शब्दसागर कोष जो नागरीप्रचारिणी सभा काशी में छपा है इसमें भी उदासीन साधू कोपीनधारी विरक्त ही लिखा है। इसी प्रकार बहुत कोषों में लिखा है विस्तार भय से यहां सब नहीं लिखते।

वाराह पुराण में एक कथा आती है कि एक समय नारद मुनि उदासीन महात्मा ने यमराज से पूछा "के न गच्छन्ति नरकं" नरक में कौन २ नहीं जाते। तब यमराज उत्तर देते हैं कि इतने मनुष्य नरक में नहीं जाते।

ज्ञानवन्तो द्विजा ये च ये च विद्यापरंगताः।
उदासीना न गच्छन्ति स्वाम्यर्थे च हता नराः॥
(वाराह पुराण नचिकेतोख्यान अ० २०७)

भावार्थ- ज्ञानवान द्विज (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य) तथा पूर्ण विद्वान् (सदाचारी कोई स्त्री पुरुष प्राणी मात्र) उदासीन महात्मा तथा स्वामी के लिये प्राण त्यागने वाला, सेवक ये लोग कभी नरक में नहीं जाते।

ऐसे पवित्रात्मा श्रौत उदासीन महात्माओं की सेवा सुश्रुशा करना सद्गृहस्थ का परम कर्त्तव्य शास्त्रों ने बताया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभ्यागतानुदासीनान् गृहस्थः परिपालयेत् ॥ ४६ ॥
गृहस्थेभ्यः शिवेनोक्तं उदासीनपरिपालनम् ॥
(महानिर्वाण तन्त्र अष्टम उल्लास)

अभ्यागत उदासीन महात्मा को गृहस्थ शिव स्वरूप समझ कर उसकी पालना करे। आगे भी लिखा है।

भृत्यान् पुत्रानुदासीनान् प्रियानपि तथाप्रियान्।
शासने चेत्तथा न्याये समदृष्ट्याऽवलोकयेत् ॥ १६ ॥
(महानिर्वाण तन्त्र-)

शंकर जी पार्वती से कहते हैं कि राजा को विचार के समय, दण्ड देने के समय, शासन के समय उचित है कि नौकर को, पुत्र को, उदासीन को, प्रिय तथा अप्रिय पुरुष को, समान दृष्टि से देखे।

इस श्लोक से पता लगता है कि तन्त्र काल में उदासीनों का अच्छा प्रचार था। तभी राजा के धर्म में शंकर जी उदासीन महात्माओं की भी गणना कर रहे हैं।

वर्तमान् वैवस्वत मन्वन्तर में गौत्तम *भरद्वाज विश्वामित्र कश्यप जमदग्नि वसिष्ठ अत्रि आदि सप्तर्षि उदासीन महात्मा हैं। देखो हेमाद्रि निर्मित चतुर्वर्ग चिन्तामणि व्रतखण्ड पृष्ठ १०६।

उदासीनोपवीताः कमण्डल्वक्षसूत्रिणः
जटिलाः श्मश्रुलाः शान्ता आसीना ध्यानतत्पराः।
सप्तर्षयो वसिष्ठश्च कार्मो भार्यासमन्वितः
गौत्तमश्च भरद्वाजो विश्वामित्रश्च कश्यपः।
जमदग्निर्वसिष्ठोऽत्रिः सप्त वैवस्वतान्तरे ॥

उपरोक्त सभी उदासीन महात्मा यज्ञोपवीत धारी कमण्डलु रखते हुए जटाओं और माला से सुशोभित शान्त स्वरूप हो पद्मासन लगाये ध्यानावस्थित हो रहे हैं।

मध्यमस्यप्रचारं च विजिगीषोश्च चेष्टितम्।
उदासीनप्रचारं च शत्रोश्चैव प्रयत्नतः ॥ १५५. मनु० अ० ७

राज मण्डल में चारमूल प्रकतियें मानी जाती हैं। १- बीच

---

* भरद्वाज मुनि को तुलसीदास जी भी अपनी रामायण अयोध्या कांड में उदासीन और तपस्वी लिख रहे हैं।

"सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं, उदासीन तापस वन रहहीं। (चौ० २-१)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में पड़के कार्य सिद्ध करने की चतुर्ता। २. जीतने की इच्छा करने वाले की चेष्टा का जानना। ३- उदासीन महात्माओं से प्रचार कराना। ४- प्रयत्न पूर्वक शत्रु की क्रियाओं को जानना। इस श्लोक से स्पष्ट है कि मनु जी से प्रथम उदासीन महात्माओं का संसार में अच्छा प्रभाव था। तभी मनु जी ने उदासीनों से प्रचार कराने को लिखा है।

कौटिल्य अर्थ शास्त्र के अधिकरण १ प्रकरण ७ में लिखा है कि राजा लोग खुफिया पुलिस में उदासीन महात्माओं को रखते थे, वह बुद्धिमान् सदाचारी उदासीन के संघ में रहने वाला खुफिया का नाम "उदास्थित" कहा जाता था। वह (उदासीन) बहुत से विद्यार्थियों तथा रुपयों को अपने साथ लेकर कृषि पशु पालन तथा व्यापार का भी काम करता था। उससे जो कुछ उत्पन्न होता था उससे उदासीनों के भोजन छादन का प्रबंध करता था। आगे चलके छट्टे अधिकरण प्रकरण ९३ में उदासीनों के मण्डल कहे हैं। अधिकरण ७ प्रकरण १२४-१२६ में उदासीन मंडल के कार्य दिखाये हैं। आगे अधिकरण १२ प्रकरण १६३ मंत्र युद्ध में भी राजा के साथ उदासीन मण्डल है।

अग्नि पुराण अ० २३३ में उदासीनों को राजाओं के सदृश लिखा है।

निग्रहानुग्रहेशक्तः सर्वेषामपियोभवेत् ।
उदासीनः सकथितो बलवान् पृथ्वीपतिः॥१९॥

उदासीनं प्रवक्ष्यामि। तवाग्रे प्रिय साम्प्रतम्॥
उदासीनेन भावेन। सदैव परिवर्तते ॥ २२॥
ददाति नैव गृह्णाति। नच कुप्यति तुष्यति॥
नो वा प्रयाति संत्यज्य। उदासीनों द्विजोत्तमः ॥ २३॥

(पद्मपुराण पातालखण्ड अ० ८८)

हे द्विजोत्तम! उदासीन साधुओं के यह लक्षण होते हैं जो निस्पृह होके रहता हुआ किसी के साथ लेन देन नहीं रखता। हानि लाभ में हर्ष शोक नहीं तथा संसार में रहता हुआ संसार से विरक्त रहता है अर्थात् लेन देन वह किसी वासना इच्छा को रख के नहीं करते ऐसे चतुर्थाश्रमी उदासीन महात्मा होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महा निर्वाण तन्त्र में तो यहां तक लिखा है कि घोर कलियुग में जब ब्रह्मचर्य और वानप्रस्थ आश्रम न रह जायेंगे तब भी भिक्षुक उदासीन रहेंगे।

देखो महानिर्वाण तन्त्र अष्टम उल्लास श्लोक ८

ब्रह्मचर्याश्रमो नास्ति वानप्रस्थो पि न प्रिये।
ग्राहस्थ्यो भैक्षुकश्चैव आश्रमौ द्वौ कलौ युगे॥

इसी के आधार पर उदासीन मत प्रदीप ५ मी शिखा पृ० ५२ में लिखा है।

वानप्रस्थस्तथा न्यासः कलौ शास्त्रेण वर्जितः।
औदासीन्यात्मको न्यासः परं श्रेयस्करं मतम्॥

इसकी पुष्टि भविष्य पुराण में इस प्रकार होती है।

तस्मिन्काले कलौ घोरे सम्प्रदायो भविष्यति।
उदासीनसाधवश्चापि गृहस्थाश्च विविधा भवेत्॥

कुटुम्बभरणो भुंक्तेः पूजश्चासौ गृही भवेत्।
एकाकी यस्तु विचरेदुदासीन सभिक्षुकः॥

(भविष्यपुराण पूर्वार्ध- अ० ३३ श्लो० १८)

इसी बात को गोस्वामी तुलसीदास जी भी खोल कर लिखते हैं।

"साधक सिद्ध विमुक्त उदासी–"

(रामायण उत्तर काण्ड चौ० १९७)

अर्थात् साधक कहिये कुटुम्ब को रखते हुए साधना करने वाले सन्त–उदासी, सिद्ध कहिये जो साधना कर चुके हैं अर्थात् साधू उदासीन जो गृहस्थ बंधन से मुक्त हैं उनकी संज्ञा है। इस तरह दो प्रकार के उदासीन होते हैं। एक साधक उदासीन होते हैं जो सन्त (विन्दी) उदासी कहे जाते हैं वह गृहस्थ उदासीन अपनी विवाहिता स्त्री से संतान उत्पन्न कर अपनी ही साम्प्रदायक मर्यादानुसार उस लड़के को चेला बनाते हैं। सन्त उदासीन को षोड़श संसकार वेद विध से करने उचित हैं। सब वर्ण के गृहस्थी इनको अपनें से ऊंचा मानकर पूजा प्रतिष्ठा किया करते हैं धर्माचार्यों में इनकी भी गिनती आगे से होती चली आ रही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोट- संत उदासीन से कोई भी अपना कुटुम्ब त्याग आके किसी चतुर्थाश्रमी उदासीन साधू का चेला बन उदासीन साधू हो सकता है। दूसरे सिद्ध मौक्षिक साधू वह कहाते हैं जो लड़का और का हो वह गृह कुटम्ब त्याग किसी ब्रह्मश्रोत्री ब्रह्मनेष्ठी महात्मा का चेला बन जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य में वितीत कर जप तप भजन पूजा पाठ ज्ञान ध्यान योग साधन विद्याध्ययन धर्मोपदेश कथा व्याख्यान में अपनी जीवन यात्रा समाप्त करता है।

नोट- उदासीन लोग किसी विशेष उत्सवपर या तीर्थ अथवा भंडारों पर दानादि उदासीन भेष को ही देते लेते रहते हैं।

इस साधक सिद्ध की पुष्टि परशुराम सूत्र से भी होती है जो नीचे दिखाते हैं।

सर्वपथेषु साधकसाधुभेदाः ॥ २३ ॥

जितने भी साधुओं के पंथ हैं उन सभी पंथों में साधक और साधु का भेद होता है। इन्हीं उदासीनों के साधक—साधु का भेद मुनि वेदव्यास जी लिखते हैं।

उपकुर्वाणको ज्ञेयो नैष्ठिको मरणान्तिकः।
उदासीनः साधकश्च गृहस्थो द्विविधो भवेत् ॥७८॥
कुटुम्बभरणात्ततः साधकोऽसौ गृही भवेत्।
ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य त्यक्त्वा भार्य्याधनादिकम् ॥७९॥
एकाकी यस्तु विचरेदुदासीनः स मौक्षिकः।
तपस्तप्यति योऽरण्ये यजेद्देवान जुहोति च ॥८०॥

(कूर्मपुराणपूर्वार्द्ध अध्याय २)

नोट- इसी प्रकार गरुड़पुराण आचारखंड अध्याय ४९ श्लोक ९ से १७ तक मुख्य प्रकर्ण में भी साफ लिखा है, प्रकरणवश यहां पर साकध साधू का भेद बतलाकर पुनः प्रकृत का अनुसरण करते हैं।

ॐ से ही सर्वसृष्टि की उत्पत्ति मानी है ॐ वेदों का मूल मंत्र प्रणव रूप है इसी ॐ से उदासी शब्द बना और तब से ही यह भेष चला, जो यह बात उदासीन भेष की प्राचीन मात्रा में लिखी है-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

" ॐ आदि उदासी आये "

ॐ से ईश्वर हुआ जो सृष्टि का कर्ता हर्ता और पालक माना जाता है,

" क्लेशकर्मविपाकशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः "

(१। २४ योगदर्शन)

कलेश,कर्म, विपाक और आशय से रहित विशेष पुरुष का नाम ईश्वर है। क्लेश कर्म विपाक और आशय का खुलासा विवरण देखिये योग दर्शन में यहां विस्तार भय से नहीं लिखते। ईश्वर इन सब से सर्वथा प्रथक् है तभी ब्रह्मपुराण अध्याय १३० में लिखा है।

सृजति गुणान्सत्वं क्षेत्रज्ञस्त्वधितिष्ठति।
गुणान् विक्रियतः सर्वानुदासीनवदीश्वर ॥१॥

व्यास जी महाराज कहते हैं रजतम आदि समस्त विकारी गुण उत्पन्न करने वाले हैं। ईश्वर अपने आप उदासीनों की न्याई सत्वगुण का अधिष्ठाता बना रहता है। इस श्लोक से साफ स्पष्ट है कि ईश्वर भी उदासीन धर्मी था तभी तो "उदासीनवत्ईश्वर" पाठ पड़ा है जिसका साफ अर्थ है कि उदासीनों की तरह ईश्वर गुणों का क्षेत्र होता हुआ भी अलग रहता है। माया विशिष्ट चेतन का नाम ईश्वर है।

ॐ में अकार उकार मकार तीन वर्ण हैं जिससे तीन गुण के प्रधान तीन देवता (ब्रह्मा- विष्णु- महेश) माने गये ऐसा योग चूड़ामणि उपनिषद् ७४ में लिखा है। इसका बहुत लम्बा प्रसंग आता है हमने विस्तार भय से नहीं लिखा।

आगे और भी परशुराम सूत्र में लिखा है।

ततस्ते गुरोश्च चरणोदकं समुपाहरन् ॥८॥

बाद मंत्र दीक्षित हो जाने पर उन देवताओं ने अपने गुरु का चर्णोदक लिया। जो यह प्रथा आज तक उदासीन भेष में विद्यमान है।

आत्मोपदेष्टा साकारो गुरुः।६३॥

आत्मा का उपदेश करने वाले साकार गुरु को ईश्वर के समान जानना चाहिए। और ऐसा कर साकार गुरु को मानना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्मज्ञानाय गुरुशिष्यपरम्परा ॥६४॥

ब्रह्मज्ञान के लिये गुरु-शिष्य की परम्परा जानना चाहिए अर्थात् अनादि से गुरु-शिष्य की परम्परा चली आती है।

गुरोः शुश्रूषा च ॥४७॥

इस लिये गुरु की सेवा सब को करनी चाहिये।

गुरु धारण करने की प्रथा आदि काल से भारत वर्ष में प्रचलित है। यह गुरु शिष्य का सम्बन्ध साधारण सम्बन्ध नहीं, देहके सम्बन्ध तो देह तक ही रह जाते हैं किन्तु आत्म सम्बन्धी गुरु मंत्र देने वाला गुरु तो लोक परलोक दोनों सुधार देता है इस लिये गुरु धारण करना आवश्यकीय कार्य है। गुरु शब्द का अर्थ

गुकारस्त्वंधकारे स्यात् रुकारस्तन्निरोधकः।
अंधकारविनाशित्वाद् गुरुरित्यभिधीयते॥

(महाशिवसंहिता)

'गु, अक्षर का अर्थ अंधकार है 'रु, अक्षर का अर्थ प्रकाश करके उस अंधकार का निरोध करना है सो जो शिष्य के मन का अंधकार नाश कर सके वह गुरु कहा जाता है। इसी लिये वेद भगवान् भी यह आज्ञा देता है।

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्।
समित्पाणिः श्रोत्रियम् ब्रह्मनिष्ठम् ॥१२॥

(प्रथम मुण्डके द्वितीयखण्ड)

गुरु करना हिन्दू मात्र का परम धर्म है, गुरु की आवश्यक्ता पर यथेष्ट प्रमाण लिख कर हमने "धन सतिगुरू" नाम की पुस्तक गुरुमुखी अक्षर सिन्धी बोली में छपवा दी है जिसको चाहिये वह हमसे मंगा के पढ़ सकता है।

कवि तुलसीदास जी ने अपने रामायण में और स्थलों पर भी उदासीन शब्द का सम्मान पूर्वक प्रयोग किया है। उन में से कुछ नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"चटु तापस मुनि सिद्ध उदासी" (अ० चौ० १०५)
"वैखानस बटु यती उदासी" (अ० चौ० २१६)
"कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी" (उ० चौ० ५१)
"तुमसर्वज्ञ ब्रह्म अविनासी, सदा एकरस सहज उदासी"
(लं० चौ० १२८)
"वैखानस बटु गृही उदासी" (अ० चौ० १६८)

श्लोकः—

उदासीनो ह्युदासीनां वनस्थो वनवासिनाम्।
यतीनांच यतिःप्रोक्तो गृहस्थानां गुरुर्गृही ॥
(बृहत्तंत्र सार)

नोट- कल्याण वेदान्त अंक में प्रमाण दिया है पृष्ठ ३०७

उदासीन साधु का गुरु, उदासीन साधू ही होता है, वानप्रस्थियों का गुरु वनवासी उदासीन ही होता है, यतियों का गुरु यति उदासीन होता है, गृहस्थियों का गुरूगृहस्थी (संत) उदासीन भी हो सकता है।

भगवान् विष्णु ने सनकादिकों को उपदेश दिया इसी से सनकादि मुनि उदासीन धर्मावलम्बी बने। सनकादिक मुनि के उदासीन होने में देखो प्रमाण।

सनन्दनाद्यो ये च पूर्वं सृष्टास्तु वेधसा।
न ते लोकेष्वसज्जन्त ह्युदासीनाः प्रजासु ते॥
(पद्मपुराण सृष्टि खण्ड अ० ३ श्लो० १६९)

"इसु धन कारण शिव सनकादिक खोजत भये उदासी"
(आदि ग्रन्थ साहब गउड़ी कबीरजी ४। १। ७। ५८)

और भी प्रमाण परशुराम सूत्र प्रथम पाद के उपरोक्त प्रसंग को पुष्ट करते हैं।

ब्रह्मशिष्याश्चत्वारः सनकादय उदासीनः ॥१७॥

ब्रह्माजी के पुत्र जो प्रथम सनक, सनंदन, सनातन, सनतकुमार प्रभृति चार हुए थे ये सभी उदासीन-मत के साधु हुए थे।

ये च साकारनिराकारोपासकाः ॥१८॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो कि सनकादिक उदासीन मुनि ब्रह्माजी के चार पुत्र साकार और निराकाररूप ब्रह्म की उपासना करने वाले हुए।

ब्रह्मपुत्रेण सनकेन नारद उपदिष्टः ॥१९॥

ब्रह्मा जी के (चार पुत्रों में से महाराज सनकमुनि उदासीन ने नारद को उपदेश किया।

नारद मुनि जी के उदासीन होने में प्रमाण देखिये तुलसी कृत रामायण बालकाण्ड चौ० १०७।

नारद कर मैं काह बिगाड़ा। बसत भवन जिन मोर उजाड़ा॥
सांचेहु उनके मोह न माया। उदासीन धन धाम न जाया॥

नारद जी को सत्य ही मोह माया नहीं है * उदासीन साधु होने कर धन, धाम और जाया (स्त्री) भी नहीं है।

उदासीनाश्च देहादावात्मारामा धृतव्रताः।
मय्यावेश्य मनः सम्यङ् मामन्ते ब्रह्म यास्यथ॥

(श्रीमद्भागवत् स्कन्ध १० अ० ७३ श्लो० २३)

श्री कृष्ण भगवान् जरासन्ध का वध भीमसैन से कराके राजाओं के बन्धन छुड़ा कर उन को उपदेश दे रहे हैं कि हे राजा लोग आप अपने मन में उदासीन साधुओं के सदृश विचार धार हर्ष शोक से मुक्त हो आत्मलीन हो शरीर द्वारा व्रत इत्यादि करते हुए पूर्ण रूप

---

* (१ क) उद् ऊर्ध्वमास्ते तिष्ठतीति उदासीनः। उद्पूर्वक आस उपवेशने धातोः सकाशात् लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे इति सूत्रेण लटि जाते शानजादेशे सति उदासीन इति रूपं निष्पन्नम्। ईदास इति सूत्रेण आ स्थाने ई-आदेशः स्यात्-आदेः परस्येति आदेर्बोध्यम् उद् ऊर्ध्वमात्मनि आस्ते तिष्ठतीति उदासीनः।

(२ ख) उद् पूर्वकात् आस उपवेशने इत्यस्माद्धातोः

सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये इति सूत्रेण णिनिप्रत्यये णकारेकारयोरित्संज्ञायां उदासिन इतिजाते ततः सौनस्माय प्रातिपदिकान्तस्य इत्यनेन नलोपो "उदासी" इति निष्पद्यते इत्येव गन्तव्यम्।

उदासीनशब्दसमानार्थकः धात्वर्थप्रत्ययार्थतो लयात्।

(३ ग) उदासी शब्द में श्लेषालंकार है एक अर्थ तो पूर्वोक्त ही है दूसरा इसी शब्द का अर्थ जो अपने उपदेश द्वारा व्यवहार और परमार्थ में लोगों को उन्नत करे इसकी सिद्धि इस प्रकार है-उत्पूर्वकात् असुक्षपणधातोर्णिनिप्रत्यय होने पर सिद्ध होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से मुझ में मन को स्थिर कर अन्त में मुझ ब्रह्म को प्राप्त करोगे।

इसी प्रकार ईरान का इतिहासकार लिखता है कि "सन् ईशा से प्रथम २१३ वर्ष में भारत वर्ष के उदासी साधु ईरान में मानदास नामक आये जिनके साथ १२०० साधु थे वैराग्य मूर्ति थे और वैवलन समरकंद में मानदास जी उदासीने अपने नामका मानवधर्म चलाया। इस धर्म का दक्षिण यूरोप में बड़ा प्रचार था, मानदास के नाम का मंदिर भी बना वह मान मंदिर अभी तक उपस्थित है। (यह मानदास जी चीन तिब्बत आदिकों में भी बहुत घूमे थे) उस मंदिर में अब भी मूर्ति पूजा होती है। इसको मानने वाले डेढ़ करोड़ से अधिक होंगे (इस बात को देखो मासिक पत्र मनोरमा वर्ष दो भाग १ आषाढ़ शुदी ६ तुलसी सम्वत ३०१, जुलाई सन् १६२५ ई० संख्या ४ पूर्ण संख्या १६ पृष्ठ ३२७, वेलवेडियर प्रेस प्रयाग वाली में विस्तार से हाल लिखा है जिसके लेखक चौधरी धनराज सिंह बी. ए हैं)

देखो आर्य्य- महिला (मासिक पत्र बनारस से निकलता है) अक्टूबर सन् १६२७ ई० भाग १० संख्या ७ के पृष्ठ ४ सुभद्रांगी के हेडिंग के लेख में उदासी साधू राजा अशोक से पहले के हैं।

इसी प्रकार भारत धर्म का इतिहास प्रोप्राइटर (दुर्गाप्रेस) और आरड़ी बाहती ऐंड को नं. ४ चोरबागान कलकता के छपे का पत्रा १३०- १६४- २६५ में भी उदासीयों का दल सन् ईसा से प्रथम का लिखा है।

यह उदासीनाश्रम चार आश्रमों में आखरी आश्रम है तभी इसको चतुर्थाश्रमी कहते हैं देखो परशुराम सूत्र।

चत्वार आश्रमाः ॥ ५८ ॥

चार आश्रम हैं। जिनके नाम ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, उदासीन हैं।

ऊरूतो गृहस्थाः ॥ ५९ ॥

श्री भगवान् के ऊरू से गृहस्थाश्रम को समझना चाहिये।

हृदयाद्ब्रह्मचर्य्याश्रमाः ॥ ६० ॥

हृदय से ब्रह्मचर्य्याश्रम जानना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वक्षसो वानप्रस्थाश्रमाः ॥ ६१ ॥

वक्षःस्थल से वानप्रस्थाश्रम हुआ।

शिरसा समुदासीनाः ॥ ६२ ॥

भगवान् के सिर से उदासीन आश्रम वाले साधुओं को जानना चाहिए। यही बात भगवान् श्री कृष्ण उद्धव के प्रति भी कहते हैं।

गृहाश्रमो जघनतो ब्रह्मचर्यं हृदो ममः
वक्षस्थानो वनेवासो न्यासः शीर्षिणि संस्थितः ॥ १३ ॥

(भागवत स्कन्ध ११ अ. १७)

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थश्च भिक्षुकः।
अतिवर्णाश्रमी प्रोक्तो गुरुः सर्वाधिकारिणाम् ॥

(सूतसंहिता मुक्तिखंडे अ० ५)

(विद्यारण्य जीवन मुक्ति विवेक पृष्ठ १९९ आनन्दाश्रम पूने का छपा)

अर्थ- ब्रह्मचारी गृहस्थ और वानप्रस्थ से भिक्षुक उदासीन (साधु) सबका गुरु (बड़ा) है।

उदासीनो का धर्म पर बलिदान

उदासीन साधु अपने हिन्दू धर्म रक्षा वास्ते सबसे परम प्यारे प्राण तक की बाजी लगाते नहीं सकुचाते, देखो हिन्दू रिव्यू मार्च सन् १९०९ के पृष्ठ १९० में लिखा है महाराजा महिपाल के पुत्र महापाल के समय उदन्तापुरी में बौद्धों के प्राचीन हीनयान उदासीन सम्प्रदाय के १००० साधु तथा नवीन महायान के उदासीन सम्प्रदाय के ५००० साधु वहां निवास करते थे। उन विद्वान् साधु महात्माओं के अर्थ वहां पालवंशी राजाओं ने एक विश्वविद्यालय स्थापित कर रखा था, जिसमें साधुओं के लाभार्थ एक महान् पुस्तकालय था। उसको जनरल मुहम्मद बेनसियाम ने सन् १२०२ ई० में जलाकर नष्ट कर दिया और उन उदासीन साधुओं को कत्ल कर डाला। कारण उदासीनों ने अपना हिन्दू धर्म छोड़ना स्वीकार न किया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोटः— आदिकाल से लेकर ही उदासीन महात्माओं का पवित्र धार्मिक बलिदान देश और जाति रक्षार्थ होता ही चला आया है। यदि इसका अन्वेषण किया जाय तो हमको अनेक उदाहरण प्रारम्भ से लेकर आजतक उदासीनों के सदा परोपकारी होने के मिलेंगे उदासीन भेष की नींव ही परोपकार के लिये भगवान् ने रखी है और कोई इतना आत्म बलिदान में आज तक पैर आगे नहीं कर सका यह बात आज तक प्रत्यक्ष है।

ऐसे परम पवित्र उदासीन भेष के महात्मा को गुरु बनाके पुनः उन की अवज्ञा करने का बुरा परिणाम निकलता है अर्थात् गुरू अवज्ञा महान् पाप है इस पर हम आपको नारद पुराण की एक कथा संक्षेप से सुनाते हैं।

एक समय राजा कल्माखपाद जिनका असली नाम राजा सुदास था यह किसी कारण वश वसिष्ठ मुनि उदासीन की अवज्ञा का स्मारक रूप नाम कल्माखपाद पड़ गया था। वह राजा कल्माखपाद शिकार खेलता २ नदी तट पर पहुचा। वहां एक विशाल बट वृक्ष था उस पर एक ब्रह्म राक्षस रहा करता था। वह राजा को देख समीप आ गया। तब राजा ने उससे ब्रह्म राक्षस होने का कारण पूछा। यह सुनते ही उसके नेत्र आंसुओं से छलछला आये, गला भर गया, अपनी करणी पर मन ही मन पश्चात्ताप करने लगा। कारण साधु द्रोही पुरुष मनुष्य सृष्टिका सब से अधिक शक्ति हीन जीव हैं वह सदैव पश्चात्ताप करता भय भीत चिन्ता मग्न रहता है, पीछे पछताता हुआ अपनी भूल पर ध्यान देता है यही हाल उस ब्रह्म राक्षस का था। यह देख राजा और उसके समीप जाय सहानुभूति दिखाते हुये प्रेम पूर्वक पूछने लगा कि भाई विदित होता है तुम को अपनी कथा सुनाने में कोई अधिक दुःख होता है सो तुम कोई चिन्ता न कर अपना कष्ट श्रवण कराओ। जहां तक हो सकेगा मैं अपनी शक्ति भर उसके निवारण करने का उपाय करूंगा। संसार में दूसरे का कष्ट हटाने के बराबर और कोई उत्तम कार्य नहीं है यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहानुभूति भरे वचन राजा के सुन ब्रह्म राक्षस की रुलाई (रोना) फूट पड़ी। जैसे नदी के किनारे का बाँध टूटनेसे चौतर्फ जल ही जल हो जाता है इस प्रकार उसके नेत्र का जल समस्त शरीर में बहके पहुँच रहा था। रोते २ जब कुछ चित हलका हुआ, शान्ति आई, तब बोला मैं पूर्व जन्म में मगध देश का रहने वाला सोमदत्त नाम का ब्राह्मण था। यद्यपि सर्व विद्याओं का वेता और धर्म निरूपण को अच्छी तरह समझने वाला होता हुआ भी "विनाशकाले विपरीतबुद्धि" वाली बात के सदृश जवानी और धन के प्रमाद में आकर एक समय अपने गुरु गौतम मुनि उदासीन महात्मा की अवज्ञा कर बैठा जिनसे मैंने गुरु दीक्षा ली थी। यद्यपि गुरु जी महाराज परम शान्त विचारवान, नीतिकुशल, क्षमा कर गये, पर परमपिता न्यायकारी परमेश्वर कब यह अनीति देखकर छोड़ सकता था। बस उस अवज्ञा के प्रभाव से मेरी यह ब्रह्म राक्षस वाली दुर्गति होते देर न लगी। अब पड़ा अपने कर्मों को रात्रि दिन रोया करता हूं। मनुष्य कर्म बिगड़ जाने पर जितना सोचता है यदि उस से प्रथम थोड़ा भी उस का परिणाम सोच ले तो कभी कष्टों का शिकार न बने।

"सहसा करि पाछे पछताँहीं कहहि बेद बुद्ध ते बुध नाहीं"

"विना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।
काज बिगाड़े आपनो जग में होय हंसाय॥"

इसी लिये कहा है "सब काम के आदि विचार भलो" ऐसा कहके ब्रह्म राक्षस चुप हो गया, तब राजा ने पूछा कौनसी अवज्ञा तुमने अपने गुरु महाराज जी की की थी जिसका यह फल हुआ। ब्रह्म राक्षस कहता है कि गुरु महाराज मेरे समीप आये और मैंने उठकर उन की पूजा अर्चा तथा प्रणाम भी न किया उसका यह फल हुआ। यह आख्यान बृहन्नारदीय पुराण अ० ९ में विस्तार से आता है यहां केवल प्रसंगानुसार संक्षेप में दिखाया है देखो मूल पाठ —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अहमासं पुरा विप्रो मागधो वेद पारगः।
सोमदत्त इति ख्यातो नाम्ना धर्मपरायणः॥
प्रमत्तोऽहं महाभाग विद्यया वयसा धनैः।
औदासीन्यं गुरोः कृत्वा प्राप्तवानीदृशीं गतिम् ।८१॥

तभी स्कन्ध पुराण माधुर्यखण्ड (कौ० खं० अ० ४१ श्लो. ३०-३१ में कहा है —

यस्तु विद्याभिमानेन निस्तेजयति सद्द्विजम्।
उदासीनं सभामध्ये ब्रह्महा स प्रकीर्तितः॥

जो पुरुष विद्या के अभिमान से सभा के मध्य उदासीन साधु और श्रेष्ठ द्विज को तेज हीन (अपमान) करता है वह ब्रह्म हत्यारा कहा जाता है यही बात शिव पुराण उमास० अः ५ श्लोक २६ में भी कही है।

प्यारे हिन्दू भाईयो! गुरु उदासीन साधुओं के तिरस्कार का फल आज भी आप के समक्ष तकलीफों का मिलना प्रत्यक्ष दिखाई देता है, इस लिये "उदासीन साधू" का सम्मान करो, उदासीन साधुओं का हित चाहो, साधुओं से प्रेम करो इन को बुरा न कहो, साधुओं की निंदा न सुनो साधु निंदा महा पाप है इस स बचो।

संतका निंदक महा हत्यारा संतका निंदक परमेश्वर मारा।

नास्तिकता का विनाश करो। जिनमें यह दोष हों उनसे कोशों दूर रहो। जो साधु गऊ ब्राह्मण वेद और भगवान् के मानने वाले हैं वह

"यह लोक सुखी परलोक सुहेले"

हैं। बुराईयों से जो डरता है भगवान् भला उसी का करना है देखो महा निर्वाण तन्त्र तृतीय उल्लास में कहा है।

स तु सर्वहितः साधुः सर्वेषां प्रियकारकः।
तस्यानिष्टे कृते देवि को वा स्यान्निरुपद्रवः ॥३०॥

अर्थ- शंकर जी कहते हैं हे देवि पार्वती, ब्रह्मोपासक पुरुष सब का हितकारी और सबका प्रिय कारक साधु होता है ऐसे महात्मा का अनिष्ट करने से कौन पुरुष निरुपद्रव रह सकता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे कई आख्यान अनेक प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं। तात्पर्य यह है कि प्राचीन काल से उदासीन सम्प्रदाय हिन्दु जाति के हित के लिये सयत्न रहा है और हिन्दु जाति भी उदासीन सम्प्रदाय को सर्व श्रेष्ठ समझ कर उदासीन मुनियों का आदर सत्कार करती हुई अपना गुरु मानती रही है। यही हिन्दू जाति का सच्चा सनातन धर्म है।

इसी लिये श्री रोमहर्षण जी भी प्रथम उदासीनों की बन्दना करके पुनः अपनी कथा प्रारंभ करते हैं।

उदासीनं निरायासं निष्प्रपंचं निरंजनम् ॥१३॥
एवंविधं नमस्कृत्य परमात्मानमीश्वरम् ॥१६।

(स्कंद पुराण प्रभास खण्ड अ० १)

रोम हर्षण मुनी जी कहते हैं कि जो उदासीन महात्मा हैं वह निरायास हैं अर्थात् ईश्वर से अतिरिक्त और किसी का आसरा नहीं रखते, निष्प्रपंच (प्रपंचसेरहित), निरञ्जन (ब्रह्म) में रहते हैं इस विधान वाले (उदासीन) को नमस्कार करते हैं।

ऐसे उदासीन भेष में कुटीचक बहूदक हंस परमहंस तुरियातीत और अवधूत छः भेद होते हैं।

कुटीचक उदासीन वह महात्मा कहा जाता है जो किसी न किसी स्थल में स्थान बनाके रहता है। इन कुटीचक में तीन भेद होते हैं। एक कुटिया वाले, दूसरे स्थान धारी, तीसरे मठाधीश (Abbot)। जो उदासीन मुनि कहीं एकान्त स्थल में कुटी बनाके अकेला निवास करता है उस जगह को कुटिया कहते हैं, तथा जो उदासीन मुनि ऐसा स्थान बनाता है जहां पर दस बीस साधुओं का भोजन तथा आये गये का सत्कार और धर्म प्रचार होना हो उस मकान को स्थान कहते हैं। सिन्धु में उसे टिकाना पंजाब में डेरा युक्त प्रान्त मगध में संगत कहते हैं स्थानो में रहने वाले उदासीन महन्त को मुनीश्वर कहते हैं॥ जिस स्थल में सैकड़ों साधुओं का नित्य भोजन होता हो तथा उनके निवास और विद्या के पठन पाठन के साथ पूर्ण योगक्षेम का प्रबन्ध हो, आये गये का सत्कार, धर्म प्रचार (कथा-व्याख्यान)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता हो वह स्थल मठ कहाता है। उस मठ के महन्त को महामुनीश्वर (मठाधीश) कहते हैं।

स्मरण रहे मठ (स्थान) और मन्दिर में अन्तर है। मठ वह कहाता है जिसको किसी उदासीन महात्मा ने अपने जप, तप विद्या प्रचार के बल से स्वयं बनाया हो, उसी पर उसी उदासीन महात्मा के चेले पर चेले वंश प्रणाली का अधिकार रहता है उस स्थान या मठ में जो कोई भी आवेगा उस स्थानधारी या मठाधीश की अनुमति (रजामन्दी) से आवेगा कारण मठ (स्थान) का महन्त उस मठ का मालिक है देखो हिन्दू ला दफा ८३७। मठ एक साधुका स्थान है जहां हिन्दू धर्म की शिक्षा हुआ करती है उसका एक अध्यक्ष (मालिक) होना है। मठ में मूर्तियां भी होती हैं। लेकिन उनकी पूजा का अलग मामला है।

मठ में अर्पण की हुई जायदाद सम्बन्धी शर्तों का मानना या न मानना उनकी इच्छा पर निर्भर है इन सब बातों से यह सिद्ध होता है कि मठ का मुख्य स्वयं मालिक मठ का आचार्य ही है वह ट्रस्टी नहीं बलिक असली मालिक होता है। हिन्दू ला दफा ८३२

बहूदक उदासीन निज बन्धुओं को त्याग, देश विदेश भ्रमण करता हुआ धर्म प्रचार में जीवन व्यतीत करता है।

नोटः- कुटीचक उदासीन कुटी छोड़ के भ्रमण करने लग जावे तो वह बहूदक कहायेगा ऐसेही बहूदक उदासीन किसी कारण वश भ्रमण करना छोड़ के कहीं कुटिया बनाके बैठ जावे वह कुटीचक कहायेगा-

हंस उदासीन- शास्त्र चिन्तन कर पूर्ण विद्वान् क्षीर नीर के समान ब्रह्म और जगत के निर्णय में पूर्णदक्ष हो, वह ब्रह्म विद्वरियान होता है।

परमहंस उदासीन उपरोक्त गुणसम्पन्न होते हुये नेष्टा वाला हो, वह ब्रह्म विद्वरिष्ट होता है।

नोट- महा वाक्यों का उपदेश करना उदासीन मुनियों का मुख्य कर्त्तव्य है जो सदा से करते आते हैं और आगे करते रहेंगे।

इस प्रकार उदासीन सम्प्रदाय सृष्टि प्रारम्भ काल से चला आ रहा है। और इसका प्रचार विश्व व्यापी था। किन्तु समय के हेर फेर से मंद पड़गया। जिसको पुनः प्रातःस्मरणीय श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीचन्द्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भगवान् ने अपने आचार्यत्वकाल में विस्तीर्ण करके समस्त पृथ्वी मंडल के कोने २ में फैला दिया। ऐसे जगद्वन्दनीय और आदर्णीय भगवान् श्रीचन्द्र मुनि को हमारा बारम्बार प्रणाम है जिनके प्रताप से आज भी उदासीन भेष में विद्यानुरागी जपी, तपी कर्मनिष्ठ धर्मोपदेष्टा महन्त संत पंडित गुणी ज्ञानी देशहित चिन्तक विद्यमान हैं जिनका आदर सनमान करती हुई जनता अपना परमहित मानती है।

उपरोक्त सर्व प्रसंग सुनके बाबा हरीदास कहने लगे कि हे भगवन् आपका शिक्षाप्रद सप्रमाण उत्तर सुनके हमारा सब संशय निवृत्त हो यह दृढ़ निश्चय हो गया कि उदासीन भेष प्राचीन है अर्थात् सृष्टि प्रारंभ काल से चला आता है। धन्य हैं आप, आपको हमारी बारम्बार नमस्कार है।

अंत में अब हम इतना और कहके पुस्तक समाप्त करते हैं कि हमनें इस पुस्तक के लिखने का प्रयास यह जान के ही किया है कि भारत वर्ष में मुनि लोगों का ही पुरुषार्थी उत्तम उपदेश है, जिस के समझने और उसपर अमल करने से सबका कल्याण होता है। हम पूर्ण आशा करते हैं कि हिन्दी प्रेमी जनता इसको आदि से अंत तक पढ़ इससे लाभ उठाती हुई हमारा परिश्रम सफल करेगी।

सर्वे भवन्ति सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री १००८ महाप्रभु आचार्य प्रवर

सद्गुरु बनखण्डी उदासीनेभ्यो नमः

सद्गुरु बनखण्डी शरणम्, स्वामि- बनखण्डी शरणम् (टेक)

अघपावन! मुनिभावन! सुखकारं विमलम्
स्वामि- सुखकारं विमलम्, सद्गुरु बनखण्डी शरणम्, स्वामि बन० (१)

भक्तजन - व्रजत्रातं विख्यातं भुवनं (ने)
गुरु विख्यातं भुवनं (ने) सद्गुरु बनखण्डी शरणम्, स्वामि बन० (२)

सुखकारं सर्वं दुःखहारं सर्वम्।
स्वामि दुःखहारं सर्वं, सद्गुरु बनखण्डि शरणं, स्वामि बनखण्डी० (३)

मुनिवंदित मुदिताननवंद्यम्।
स्वामिन् मुदिताननवंद्यं, सद्गुरु बनखण्डि शरणं, स्वामि बनखण्डी० (४)

मतिनायक! निधिपूरित सकलम्।
गुरु निधिपूरित सकलं, सद्गुरु बनखण्डी शरणं, स्वामि बनखण्डी० (५)

पुरुषोत्तम! सुखदर्शन! स्तुत्यम्।
स्वामि सुखदर्शन स्तुत्यं, सद्गुरू बनखण्डी शरणं, स्वामि बनखण्डी० (६)

शुभसाधक विजयप्रदगण्यम्।
स्वामि विजयप्रदगण्यम्, सद्गुरु बनखण्डी शरणं, स्वामि बनख० (७)

मतिनागर विज्ञ शुभलक्षणशीलम्।
गुरु शुभ लक्षण शीलं, सद्गुरु बनखण्डि शरणं, स्वामि बनखण्डी० (८)

जयति जयति यः श्री साधुबेला विहारी,
मुनिजनबहुवंद्यः सिंधुदर्यानिवासी।

जयति बनखण्डी, सिद्धेश्वरो योगनिष्ठः,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री १००२ आचार्यप्रवर महाप्रभु पूज्यपाद बनखण्डीजी
महाराज उदासीन

सद्गुरु बनखण्डी आश्रम श्री साधुबेला तीर्थ (सक्खर-सिन्धु)

आपके चेले श्री १०८ निर्वाण स्वामी हरिनारायणदासजी उदासीन

Shri 1009 Swami Bankhandiji Maharaj Udasin

SARI [illegible] UDASIN

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री १००८ महाप्रभु आचार्य प्रवर

सद्गुरु बनखण्डी उदासीनेभ्यो नमः

सद्गुरु वनखण्डी शरणम्, स्वामि- वनखण्डी शरणम् (टेक)

अघपावन! मुनिभावन! सुखकारं विमलम्
स्वामि- सुखकारं विमलम्, सद्गुरु वनखण्डी शरणम्, स्वामि वन० (१)

भक्तजन- व्रजत्रातं विख्यातं भुवनं (ने)
गुरु विख्यातं भुवनं (ने) सद्गुरु वनखण्डी शरणम्, स्वामि वन० (२)

सुखकारं सर्वं दुःखहारं सर्वम्।
स्वामि दुःखहारं सर्वं, सद्गुरु वनखण्डि शरणं, स्वामि वनखण्डी० (३)

मुनिवंदित मुदितानन्दंयम्।
स्वामिन् मुदितानन्दं, सद्गुरु वनखण्डि शरणं, स्वामि वनखण्डी० (४)

यतिनायक! निधिपूरित सकलम्।
गुरु निधिपूरित सकलं, सद्गुरु वनखण्डी शरणं, स्वामि वनखण्डी० (५)

पुरुषोत्तम! सुखदर्शन! स्तुत्यम्।
स्वामि सुखदर्शन स्तुत्यं, सद्गुरु वनखण्डी शरणं, स्वामि वनखण्डी० (६)

शुभसाधक विजयप्रदगण्यम्।
स्वामि विजयप्रदगण्यम्, सद्गुरु वनखण्डी शरणं, स्वामि वनख० (७)

मतिनागर विज्ञं शुभलक्षणशीलम्।
गुरु शुभ लक्षण शीलं, सद्गुरु वनखण्डि शरणं, स्वामि वनखण्डी० (८)

जयति जयति यः श्री सायुवेला विहारी,
मुनिजनवृन्दवंद्यः सिन्धुवर्णानिवासी।

जयति वनखण्डी, सिद्धेश्वरो योगनिष्ठः,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री १००९ आचार्यप्रवर महाप्रभु पूज्यपाद बनखण्डीजी महाराज उदासीन

सद्गुरु बनखण्डी आश्रम श्री साधुबेला तीर्थ (सक्खर-सिन्धु)

आपके चेले श्री १०८ निर्वाण स्वामी हरिनारायणदासजी उदासीन

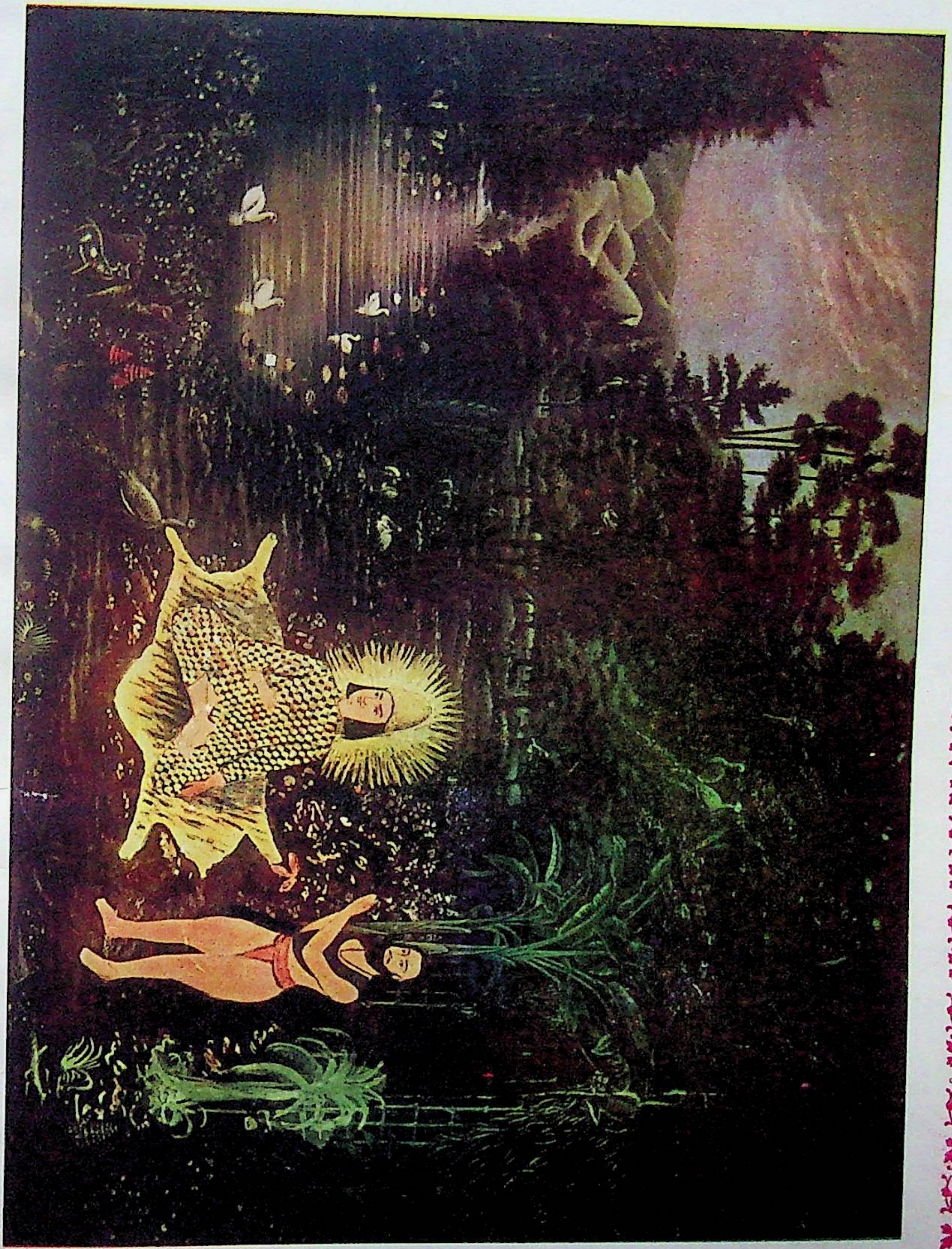

Shri 1009 Swami Bankhandiji Maharaj Udasin

SARI 1009 SWAMI HARNARAINDASJI UDASIN

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपदिशति जनान्यः साधुमार्गं सदैव ॥ ९ ॥

अपार संसृति सुसिन्धुमध्ये निमग्नभूतस्य च प्रावलम्बम् ।
चेदस्ति साधो! बनखण्डि स्वामिन् त्वदीय चरणाम्वुजमेक-पोतः ॥१०॥

सद्गुरुबनखण्डीनां चर्णामृतमादाय यः ।
गुरुमंत्रं च प्राप्नोति तस्य वै परमा गतिः ॥ ११ ॥

श्रीहरिनामदासोऽहं साधुबेलामहान्तवै ।
श्लोकान् ग्रंथश्चनिर्माय समर्प्य अपि श्रद्धया ॥१२॥

सद्गुरु बनखण्डिने नमामि च पुनः पुनः ।
मत् पुष्पांजलिरेषा भो! स्वीकार्या सद्गुरो प्रभो! ॥१३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथ श्री साधुबेला तीर्थाष्टकम्

योदासीनउपाधि धारियतिभिराद्यैः परिव्राजकैः
सिन्धौ सक्खरनाम्नि पुण्यनगरे, तीर्थस्थली निर्मिता।
यन्नामस्मरणाद्धि सर्व दुरितं, दूरीभवत्यैहिकम्,
नौतुल्या भवसिन्धुसिन्धुसुनदे, श्री साधुबेलास्ति सा ॥१॥

याऽद्या श्री बनखण्डीदेवबसतिर्यस्यां स आदिर्मुनिः
नानाघाटततिं विधाय परितश्चक्रे सुरस्थापनम्।
यस्यां तेन च साधुसंघवसतिर्मुख्येन संरक्षिता
नौतुल्या भवसिन्धुसिन्धुसुनदे, श्री साधुबेलास्ति सा ॥२॥

दासान्तं हरिपूर्वनाम दधतां, नारायणानां परे
प्रापुः श्रीः जयरामदासमतयो यस्यामधीशास्पदम्।
ताभ्यां मन्दिर देवमूर्तिबहुला, यस्यां कृता निर्मितिः
नौतुल्या भवसिन्धुसिन्धु सुनदे, श्री साधुबेलास्ति सा ॥३॥

यस्यां श्री हरिनामदास दरमाचार्य्यो मुनीनां मुनिः
विद्यावृद्ध बृहस्पतिश्च विदुषां, सूर्यश्च तेजस्विनाम्।
कैलासोपरि शर्वतुल्य मधुना, सिंहासने शोभते
नौतुल्या भवसिन्धु सिन्धु सुनदे, श्री साधुबेलास्ति सा ॥४॥

यस्यां गुप्तवपुः करोति वसतिं, देव्यान्नपूर्णा सदा
यस्यां सन्ति सुकार्यसाधकगणाः सिद्धेश्वराद्याः सुराः
नानातीर्थफलानि यच्छति पुनः एकाऽपि या दर्शनात्
नौतुल्या भवसिन्धु सिन्धु सुनदे श्री साधुबेलास्ति सा ॥५॥

यत्पादोपरिलुंठने व्यवसिता, सिन्धोस्तरंगावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हर्हर्" इत्यनुकुर्वतीव जपनं भक्तस्य श्रद्धान्विता।
यद्दर्शनि सदैव दर्शकगणाः कुर्वन्ति शुद्धं मनः
नौतुल्या भवसिन्धु सिन्धु सुनदे श्री साधुबेलास्ति सा ॥ ६ ॥

यस्यां मन्दसुगन्धशीतलवहो, वायुः सदा वर्तते
उद्यानं च विभिन्नगन्धसुमनं, नित्यं मनोहारकम्
एवं याऽद्य तिरस्कृतं च कुरुते, स्वर्गस्थित नन्दनम्
नौतुल्या भवसिन्धु सिन्धु सुनदे, श्री साधुबेलास्ति सा ॥ ७ ॥

विद्वत्सु मान्यः सुगुणैः प्रसिद्ध उदारकीर्तिर्विगताभिमानः
व्रती विरक्तः सततं तपोरतो धन्यो महात्मा हरिनामदासः ॥ ८ ॥

साधूनाश्चशिरोमणिर्गिरिवरे पूर्णः गुणैः सर्वथा
स्थित्वा श्रीबनखण्डिनश्च यतिनः पूज्ये शुभेचासने।
लोकान्साधुजनांश्च स्वीयमधुरैर्वाक्यैश्च सन्तर्पयन्
दृष्टः श्रीहरिनामदासप्रवरो विद्यार्थिनामर्थदः ॥ ९ ॥

यः साधुबेलाऽभिधपुण्यतीर्थे चक्रे स्थितिं शिष्यपरम्पराणाम्
निष्कांक्षितानांधुरि, पारिकांक्षी तस्मै नमः श्रीबनखण्डिनेऽस्तु ॥ १० ॥

(संग्रहीत)
भाद्रों सुदी ९ (जगद्गुरू श्रीचन्द्र जयन्ती)
मंगलवार वि.सं. १९९४

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

ह० स्वामी हरिनामदास उदासीन

महन्त श्री साधुबेला तीर्थ सद्गुरू बनखण्डी आश्रम, सक्खर (सिन्धु)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ श्री स्वामिहरिनामदासाष्टकम् ॥

श्रीमान् पं० तेजोभानुशर्म्मविरचित

क्रमागतंश्रीवनखण्डिदेव सिंहासनासीनमहिनसत्वम् ।
महोज्वलंश्रीहरिनामदासं नमाम्युदासीनमतप्रधानम् ॥ १ ॥

उदारमाहारमुदारचेता गंगादिकुम्भोत्सवसाधुसङ्घे ।
विश्राणयामासदिवानिशंयो नतःस्मतंश्रीहरिनामदासम् ॥ २ ॥

ब्रह्मण्यतायत्रशरण्यतावा कर्मण्यताधर्मवरेण्यता च ।
गणागुणानाममितावसन्ति धन्यःसदासाधुषुकस्तदन्यः ॥ ३ ॥

स्थानाधिपास्सन्तुपरश्शताये कापण्यदोषेनयुताइतास्ते ।
स्थानाधिपत्वंतदमुष्यमन्ये महावदान्यःकिलयस्समान्यः ॥ ४ ॥

व्यङ्गेषुरुग्णेष्वथदुर्गतेषु विद्याविनीतेषुयथाधिकारम् ।
वस्त्राण्यमत्राणिवपुस्तकानि विभक्तवान् यः स सदानमस्यः ॥५॥

गीता निपीता नितरामनेन नाम्नांसहस्रंपठितंत्वजस्रम् ।
मर्यादयापूरुषसत्तमोऽयं सद्भिर्महद्भिःपरिवन्दनीयः ॥ ६ ॥

विद्यांमतिंनामबिभर्तिविद्वान् ज्योत्स्नांवाहिमांशुबिम्बम् ।
रत्नानितायानि च निम्नगेशः कीर्तिदयांचैवतथामहात्मा ॥ ७ ॥

संख्यावतांदूरदृशांमही यान् स्वसंप्रदायस्यसतांगरीयान् ।
स्वभावसौजन्यगिराम्रदीयान् प्रसन्नतामेतुनतैर्वशीयान् ॥ ८ ॥

इत्यष्टकंश्रीहरिनामदास यतींद्रवर्यस्यमहत्वभाजः ।
श्रीसाधुबेलापदमास्थितस्य श्रवन्पठन्भद्रयुतोनरःस्यात् ॥ ९ ॥

वित्तव्यये मुक्तकराय तस्मै भण्डारिणे श्रीगुरुसेवकाय ।
प्रशंसनीयाय विचक्षणाय नमो नमो मे हरिदास नाम्ने ॥

॥ ॐ तत्सत्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुस्तक मिलने का पता:-
श्री साधुबेला तीर्थ सक्खर
(सिन्धु)

The Book can had from:-
Shri Sadhbella Tirath
Sukkur (Sind).

इस पुस्तक की छपाई का खर्च श्रीमती कीमलबाई धर्मपत्नी सेठ सन्तदास लालवानी सक्खर (सिन्धु) निवासी के सुपुत्रों ने अपनी माताजी की स्मृति (यादगीरी) में दिया।

Printed by Shri L. A. Udasin at the "AMAR" Electric Printing Press Sukkur
&
Published by Shri 108 Swami Harnamdasji Maharaj Shri Sadhbella Tirath
Sukkur (Sind).

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE